अकाट्य प्रमाण पा चुकी थी कि रमेन्द्र की हत्या करनेवाला न है। खूनी उसके ही स्वामी उसके पुत्र कन्या के पिता हैं। उसके सामने बैठी हुई निहत रमेन्द्र की माता हैं। जो उसकी भाँति अवस्था में नहीं पड़ा है वह भला उसकी का अनुभव कैसे कर सकता है। अत हेमांगिनी की सांसें भीतर से बद होती आने लगीं।"

सज्ञा रहित बेहोशकी भाँति हेमांगिनी बोली—"आह आप कर ऐसी बातोंको कभी अपने मनमें स्थान न दीजिएगा। लोग आपके पुत्र का अनिष्ट करेंगे—यह असभव है।"

रमेन्द्र की माँ उठकर खड़ी हो गयी और बोलीं—हेमांगिनी दिन पहले एक समय तुमने मेरा सुख-शान्ति सब नष्ट दिया था। तुम्हारे ही लिए उसने आज तक भी विवाह किया। उस समय मैंने तुमको कह दिया था कि यदि जीवन कभी दु ख-यातना कष्ट और सताप से श्मशान बन जाय तो उस समय तुम मन में समझ लेना कि तुम, पापों का दण्ड भोग स्वय पा रही हो। इस समय भी मैं बात कहती हूँ। मेरी यह बात अच्छी तरह मन में गठिया रख लेना।'

हेमांगिनी का कठरोध हो गया। सचमुच ही क्या उसके का दण्ड भोग आरभ हो रहा है? ओह! कैसी भीषण है।

रमेन्द्र की माँ दरवाजे के पास जा बड़े ही गभीर स्वर में "तो फिर,तुम नहीं जानती हो कि मेरे बच्चे की हत्या की है?"

हेमांगिनी रुकती साँस से बड़े ही कष्ट के साथ बोली— लोग भला कैसे जानेंगे?"

सहधर्मिणी

सचित्र सामाजिक उपन्यास



प्रकाशक—चौधरी एण्ड सन्स,
बुकसेलर एण्ड पब्लिशर्स, बनारस।

Only Cover
anifya Press Benares

सहधर्मिणी

लेखक—

श्री पंचकौड़ी दे

अनुवादक—

श्रीविश्वनाथ पोखरैल "विश्व"

प्रकाशक—

चौधरी एण्ड संस, पब्लिशर एण्ड बुकसेलर

बुलानाला, बनारस

१०००] अक्तूबर १९२६ [मूल्य ॥।)

मुद्रक—
श्रीमहतावराय, सरस्वती प्रेस, काशी।

सहधर्मिणी

पहला परिच्छेद



रकुमार बाबू पश्चिम में वकालत करते थे। वकालत करके उन्होंने बहुतसा धन कमा लिया है। इस समय वे बिल्कुल वृद्ध न होने पर भी दो कारणों से वकालत छोड़, कलकत्ते में लोअर सक्यूलर रोड पर एक सुन्दर मकान भाड़े पर ले उसी में सपरिवार रहते हैं।

उनके वकालत छोड़ने के इन दो कारणों में से पहला कारण यह है कि उनकी स्त्री हमेशा से ही बीमार रहा करती हैं। बहुत दिन हुए उन्होंने जो खटिया पकड़ी सो उठने का नाम नहीं लिया। उसी प्रकार एक भाव से चारपाई पर पड़ी हुई जीवन के शेष दिन बिता रही हैं। पश्चिम में बहुत अधिक गरमी पड़ती है, इस कारण रोग घटने के अतिरिक्त और भी अधिक बढ़ जायगा यही कहकर बड़े २ डाक्टरों ने उन्हें ठण्डे मुल्क में चले जाने की सलाह दी। अतः वे उन लोगों के परामर्शानुसार पश्चिम का रहना छोड़ स्त्री को लेकर कलकत्ता आये हुए हैं। दूसरा कारण—उनकी एक मात्र कन्या हेमागिनी पूर्ण-यौवना हो गई है। उसके हर एक अंगों से यौवन की छटा फूट २ कर निकलने लग गई है। अस्तु, इस समय उसका ब्याह कर डालना नितान्त ही आवश्यक है।

हर कुमार बाबू सदा से ही ब्रह्मोसमाज के पक्षपाती हैं—ब्राह्मभाव उनकी नस २ में भरा हुआ है। और हिन्दू-सनातनी धर्म की ओर उनकी किंचिन्मात्र भी रुचि नहीं रहती। पश्चिम में वे ठीक साहबों की भांति रहा करते थे। यहा भी वे पूरे साहब हैं। वे बाल-विवाह के एकदम से ही विरोधी हैं। उनकी धारणा थी कि बाल्यावस्था में विवाह करदेने से बालक बालिका—दोनों का भविष्य जीवन मिट्टी में मिल जाता है। इन्हीं कारणों से उन्होंने अपनी कन्या का ब्याह छोटी उमर में नहीं किया, साथ ही उन्होंने हेमागिनी को पढ़ा लिखा कर सुशिक्षिता बनाने में जहा तक करना था वहाँ तक कर लिया है। हेमागिनी सर्वांग सुन्दरी-बडी ही रूपवती है। उसका सारा शरीर बड़ा ही सुडौल मानों साचे में ढला हुआ है। जिस प्रकार उसके शरीर का रंग व पेव साफ गुलाब के फूल के समान है, उसी प्रकार शरीर का गढ़न भी सुन्दर और परिपाठि पूर्ण है। साथ ही सुन्दरता में वह जिस प्रकार अपनी जोड़ी नहीं रखती उसी प्रकार गुण में भी किसी को अपने मुकाबिले फटकने नहीं देती—अर्थात् रूपवती और गुणवती दोनों ही उपमाओं को वह पूर्ण सार्थक कर रही थी। गाने बजाने, लिखने पढ़ने, सभी में वह पूर्ण और सर्वगुणसम्पन्ना है। इस समय उसकी उमर सोलह वर्ष पार कर चुकी है। अतः इस बार हर कुमार बाबू ने अपनी कन्या का विवाह कर देना स्थिर कर लिया है।

उनकी स्त्री आज है कल नहीं। कौन ठिकाना! वे भी कन्या के ब्याह के लिए बडी ही आतुर हो उठी हैं। और इसी लिए सर्वदा ही वे अपने स्वामी को उसके लिए दिक किया करती हैं।

हरकुमार बाबू के एक विशेष अन्तरंग मित्र अनन्त बाबू कालीपुर के जमींदार हैं। उनका एक मात्र पुत्र सतीशचन्द्र बड़े ही सुशील सच्चरित्र और सुशिक्षित है। बहुत दिनों से ही उनकी इच्छा है कि सतीशचन्द्र के साथ अपनी कन्या का व्याह करदें। सतीशचन्द्र प्रायः उनके घर आया करते थे। वे लोग भी सभी सतीशचन्द्र को विशेष स्नेह की दृष्टि से देखते थे। हेमागिनी के साथ भी उनका विशेष सौहार्द और आत्मीयता हो गई थी। अपने यौवनसुलभ प्रेमसे उन्हे प्यार न करने पर भी हेमागिनी अपने माता-पिता की भाव भगी से इस बात को भली प्रकार समझ गई थी कि एक दिन उसे अवश्य ही सतीशचन्द्र की गृहस्वामिनी होना पड़ेगा। किन्तु हरकुमार बाबू वा उनकी स्त्री दोनों में से किसी ने भी कभी आज तक इस बात की चर्चा उसके सामने नहीं की। तौभी हेमागिनी अच्छी तरह समझ गई थी उसके पिता-माता दोनों की यही इच्छा है। इसको सतीशचन्द्र भी जानते थे। किन्तु उन्होंने भी आज तलक हेमागिनी को इस सबंध में कुछ नहीं कहा। किसी के कुछ न कहने पर भी हेमागिनी इस बात को खूब समझ गई थी और यदि मोटे हिसाब से कहा जाय तो वह इस बात से विशेष असतुष्ट भी नहीं थी।

सतीशचन्द्र के पिता-माता कोई नहीं हैं। वे ही इस समय अपने पिता की अतुल धन-सम्पत्ति के एक मात्र अधिकारी और बड़े भारी जमीन्दार हैं। खूब लिख पढकर सुशिक्षिता होने पर भी बड़े घरकी गृहणी होने के लिए उसके अन्तःकरण में एक स्वाभाविक प्रवल इच्छा हमेशा से ही जागृत हुआ करती थी। किन्तु भाग्य का अधकार पूर्ण ओट में न मालूम क्या छिपा है—इसे कौन कह सकता है। भविष्यत् की बात देवता

भी नहीं जानते तो फिर मनुष्य किस तरह जान सकता है—उसकी बिसात ही क्या कि विधाता के लेख को जान सके। अतः हेमागिनी उस बात को नहीं जानती, उसके माता-पिता भी नहीं जानते थे कि भविष्य में भाग्य उन लोगों को क्या २ नाच नचावेगा।

हेमागिनी सतीशचन्द्र को ठीक तरह से प्रेम करती है या नहीं इस बात को उसने एक दिन भी अपने मनसे नहीं पूछा। इसका प्रश्न तक भी उसके हृदय में नहीं उठा। किन्तु सतीशचन्द्र के साथ उसका कभी रूखा व्यवहार नहीं रहा और न कभी उसने उनका अनादर ही किया। तो भी सतीशचन्द्र उसको दिल से प्यार करते हैं, इतना वह अच्छी तरह अपने मन में समझ गई थी।

दूसरा परिच्छेद

हरकुमार बाबू वकालत छोडने के बाद कुछ शक्की और वहमी हो गये थे। काम काज न रहने से हो अथवा अपनी स्त्री के सदा बीमार रहने से हो जिस कारण से भी हो—उनके शरीर में कुछ पीड़ा न रहने पर भी वे सदा सर्वदा मन में समझा करते कि उनकी देह व्याधि का घर हो गयी है। कारण अकारण वे व्यर्थ ही डाक्टर को बुलाते और औषधि का सेवन करते। जिस दिन दवा न पीते उस दिन चाय पीते। उनके इस वहमी स्वभाव के कारण डाक्टर लोगों को अच्छी तरह दो पैसा मिल जाता और नौकरों को भी मालिक के चाय पीने से कुछ न कुछ लाभ हो ही जाता था।

हर कुमार बाबू की स्त्री जिस दिन कुछ अच्छी होतीं उस दिन एक आराम कुर्सी पर गद्दा बिछा तोषक पर ढासना लगा एक रूप से बैठी रहतीं। आज भी वह उसी प्रकार आराम कुर्सी पर बैठी हुई थीं। हेमाङ्गिनी उसके पास बैठी मोजा बुन रही थी। उस समय पश्चिम आकाश को लाल वर्ण से रञ्जित कर और सारे आकाश में अबीर छिड़ककर सूर्यदेव अस्ताचल की ओर ढल रहे थे।

सहसा माने कन्या के मुंह की ओर ताककर पूछा—"हेम! देख तो कौन आया?"

इसी समय एक घोड़ा गाड़ी घर २ शब्द करती हुई दरवाजे पर आकर खड़ी हुई। वही शब्द हेमाङ्गिना की मा के कान में पड़ा था। किन्तु कोई आया नहीं, उस शब्द की बात भी फिर उनके मन में नहीं आई।

हरकुमार बाबू के चाय पीने का समय हो गया। नौकर उसी कमरे में एक छोटे से टेबुल के ऊपर चाय का सब सामान रखकर चला गया। किन्तु हर कुमार बाबू आये नहीं। उनके चाय पीने का समय कभी भी टलने नहीं पाता था, इस लिये उनकी स्त्री बड़ी ही विस्मित हुई। और भी कुछ देर तक आसरा देखकर उन्होंने बड़े ही चञ्चल भाव से कन्या को कहा—"वे बाहर वाले घर में शायद सोये पड़े तो नहीं है—हेम! जाओ बेटी! देख तो आओ!"

हेमाङ्गिनी मोजा बुनना बन्दकर उठी और पिता की खोज में बाहर वाले घर में प्रवेश करते २ बोली—"दादा! चाय ठण्ढी हो गयी—तुम अभी भी—"

हेमाङ्गिनी के मुंह की बात मुंह ही में रह गई। हरकुमार बाबू की बगल में एक सज्जन-सुन्दर युवक बैठे हुए थे। वे हेमा-

गिनी को देखते ही मात्र सम्भ्रम उठ खड़े हुए। हरकुमार बाबू बोले—"रमेन्द्र बाबू! यही मेरी एक मात्र कन्या हेम है।"

हेमागिनी कुछ नहीं बोली। उसकी बड़ी २ नीलोत्पल तुल्य कजरारी, रसीली आँखें सहसा नीचे को झुक गईं। वह उसी समय फौरन उल्टे पाँव जल्दी से वहाँ से भाग गई।

रमेन्द्रनाथ गरीब के लड़के हैं। उनके पिता नहीं केवल माता मात्र हैं। वे अपनी खुद मिहनत और बुद्धिबल से छात्र-वृत्ति प्राप्त कर इस समय मेडिकल कालेज में डाक्टरी पढ़ते हैं। और कुछ थोड़े दिन के बाद ही वे पास होकर डाक्टर बन सकेंगे।

हरकुमार बाबू डाक्टरों को देखते ही उनका विशेष आदर भाव करते। रमेन्द्र के साथ उनका परिचय होते ही, उनका नम्रभाव, तीक्ष्ण विद्याबुद्धि और चिकित्सा-विद्या में पारदर्शिता देख उनसे उनकी विशेष प्रीति हो गई थी। रमेन्द्रनाथ कालेज बंद होने से घर जा रहे थे। किन्तु हरकुमार बाबू ने उन्हें कुछ एक दिन अपने मकान पर रहने के लिए विशेष आग्रह अनुरोध किया था। इसी से रमेन्द्रनाथ उनके घर आये हुए थे।

वे सिर्फ तीन चार दिन मात्र रहेंगे, कहकर आए थे। किन्तु धीरे २ एक सप्ताह, दो सप्ताह कर एक महीना बीत गया। तब भी जाऊँ २ करते हुए भी उनका जाना नहीं हुआ। यह अवश्य आश्चर्य की बात है—इसमें संदेह नहीं। किन्तु इसका कारण यह था कि एक तो पहले से ही रमेन्द्रपर हरकुमार बाबू का विशेष प्रेम हो गया था। दूसरे अभी रमेन्द्र पास होकर डाक्टर न होने पर भी शीघ्रही डाक्टर हो जायेंगे। उन्होंने अपनी स्त्री की बीमारी की सारी बातें रमेन्द्र से कह दी थीं। रमेन्द्र ने भी सब सुनकर नवीन औषधि की व्यवस्था कर दी। उनकी

औषधि से उनकी स्त्री को विशेष फायदा होते दीख पड़ा। इस कारण वे रमेन्द्र से और कुछ दिन रहने के लिए विशेष आग्रह से अनुरोध करने लगे। हेमागिनी की माँ ने भी पति का अनुरोध करने के लिए कहा। रमेन्द्र को भी छुट्टी ही थी—अत लाचार वे रह गए।

दिन पर दिन हरकुमार बाबू और उनकी स्त्री दोनों रमेन्द्रनाथ के ऊपर अधिकतर आकृष्ट होने लगे। रमेन्द्र भी एक आदमी के ऊपर विशेष आकृष्ट हो पड़े। कहना व्यर्थ होगा कि वह आदमी और कोई नहीं हेमागिनी है।

और हेमागिनी ?—वह यदि सच कहा जाय तो कभी भी सतीशचन्द्र से प्रेम नहीं कर सका। न मालूम क्यों उसके हृदय का खिंचाव उनकी ओर हुआ ही नहीं। इस समय इस युवती का हृदय ताजे खिले हुए फूल के समान लावण्य से भरे हुये नम्र-सुशील सुन्दर सुपुरुष रमेन्द्र को देख उन पर मोहित हो गया था। इसी एक महीने में रमेन्द्र के साथ एकत्र रहने से उनकी मोहिनी मूर्ति हेमागिनी के हृदय पट पर अंकित होगई। वे कौन —कहाँ रहते हैं—यह सब हेमागिनी ने एक बार भी उनसे नहीं पूछा। धीरे २ वह जो उनसे प्रेम करती जाती है—उसको भी वह अच्छी तरह समझ नहीं सकी है। एक मुहूर्त भर के लिए भी उसने उनकी चिन्ता नहीं की। उनके साथ रहने में अच्छा लगता है—उनसे बात चीत करने में मन आनन्द से भर उठता है—बस इतना ही वह जानती थी। इसके सिवाय और कुछ सोचने विचारने के लिए उसको अवसर या समय नहीं था।

किन्तु रमेन्द्रनाथ सब समझ गए। हेमागिनी का हृदय जो और एक हृदय के साथ मिलने के लिए धीरे २ आगे बढ़ रहा

हेमांगिनी का मुंह एक दम लाल हो आया। रमेन्द्र रेशम
ी एक अ र से पकड़ कर उसकी गांठ छुड़ाने की चेष्टा करने
गे। रेशम का दूसरा सिरा हेमांगिनी के हाथ ही में रहा—इस
ारण लाचार उनका मुंह, हेमांगिनी के बहुत ही नजदीक झुक
या। इससे हेमांगिनी का मुंह और भी लाल हो गया। रमेन्द्र
 भी सिर से लेकर पैर तक लाली दौड़ गई। अ त को दोनों
ा मस्तक एक दूसरे के इतना नजदीक हो गया कि मालूम
ोता था कि मानों दोनों की कोमल सांस मिलकर एक साथ
ाहर निकल रही हैं।

वे लोग दोनों ही इस काम में इतने बेखबर हो पड़े थे कि
सी समय जो एक और व्यक्ति ने उस घरमें प्रवेश किया—
सको किसी ने लक्ष्य नहीं किया।

सतीशचन्द्र स्तंभित हो खड़े हो गये।

एका एक हेमांगिनी और रमेन्द्र ने चौंककर मुंह ऊपर को
ठाया। हेमांगिनी के मुंह की लाली सहसा सफेद रंग
ं बदल गई। किन्तु धीरज को हाथ से उसने जाने नहीं दिया।
ट अपने को संभालकर पूर्ववत बैठ गई। सतीशचन्द्र धीरे २
ागे बढ़े।

रमे द्र और सतीश दोनों आमने सामने होकर खड़े होगए।
ोनों की यही पहले पहल देखा-देखी है। क्योंकि इन्हीं छ
सप्ताहों से सतीश अपने देश गए हुए थे।

हेमांगिनी बड़े ही अस्फुट स्वर में बोली—"सतीश बाबू!
े रमेन्द्र बाबू हैं।"

दोनों ने एक दूसरे को बड़ी ही तीक्ष्ण दृष्टि से देखा।
ोनो ही ने एक दूसरे को अपने मन में पूरा प्रतिद्वंद्वी (रकीब)
कहकर स्थिर कर लिया। दोनों की दृष्टि से उस समय एक

विचित्र प्रकार की ज्वाला निकल रही थी। हेमांगिनी बोली—"कब आये ? बाबा से भेंट हुई ?"

"नहीं, नौकर ने कहा कि वे इसी घरमें हैं।"

रमेन्द्र भद्रता के लिहाज से बोले—"वे अभी बाहर घूमने गये हैं। शायद अभी लौटे नहीं हैं।'

सतीश उनकी बातों का कुछ उत्तर न देकर हेमांगिनी की ओर पलटे। इससे रमेन्द्र का मुँह—आँख एक दम लाल हो उठीं। अत वे धीरे २ उस घर से निकल कर बाहर चले गए।

सतीश ने हेमांगिनी के मुंह की ओर ताककर पूछा—"हेम ! यह आदमी कौन है ?"

हेमांगिनी मन ही मन क्रोध से जल उठी थी। बोली—"अभी २ कह तो दिया था कि रमेन्द्र बाबू हैं।"

हेमांगिनी ने यह बात बड़े झटके और जोर के साथ कही थी। उसकी बातों में क्रोध और विरक्ति का आभास पाया जाता था। अपने स्वर में हेमांगिनी आप ही चौंक उठी। फौरन अपने मनको आपही सभालकर कोमल कंठ से बोली—"ये डाक्टरी पढ़ते हैं। पिता से इनकी जान पहचान होने के कारण उन्होंने इन्हें कुछेक दिन यहां रहने के लिए कहा, इसी से ये यहाँ रह गए हैं। पिताजी इन्हें बहुत चाहते हैं—हम लोग भी—कहते २ हेमांगिनी रुक गई। फिर सम्भलकर बोली—'ये बड़े सज्जन आदमी हैं।"

सतीशचन्द्र ने दांतों से ओठ चाबा और जरा गंभीर होकर कठिन स्वर में बोले—"आओ चलो तुम्हारी मा से भेंट करलें। वे अच्छी तो हैं न ?" आज तक हेमांगिनी ने कभी भी सतीश की बात अमान्य नहीं की थी। केवल आज यही पहले पहल उसका हृदय उनकी बात अमान्य करने को तय्यार हुआ।



सतीश ने हेमागिनी के मुह की ओर ताक कर पूछा—"हेम ! यह आदमी कौन है ?"

है। इस कारण विचारी हेमागिनी के ऊपर अभी से घर गृहस्थी का सारा भार आ पड़ा है। वह यद्यपि एक दम से बालिका नहीं है तथापि सदा से पिता माता की दुलारी होने के कारण दु ख, कष्ट चिन्ता किसे कहते हैं—इसे वह कभी स्वप्न में भी नहीं जानती थी। अत विचारी इस समय ससार की अनेकों भावनाओं-चिन्ताओं से एक दम व्याकुल हो उठी है। उसके सारे-सुख हसी खेल कूद कपूर की भाँति हवा में उड़ चुके हैं। मानों सुख-शान्ति उसके जीवन से असहयोग कर गये हैं। मा बीमार मरन सेज पर पड़ी हुई—पिता नहीं, भाई नहीं—कोई नजदीक का हितमित्र-आत्मीय स्वजन भी नहीं कि उसकी देख रेख करे—सहायता करे।

अब बहुत दिन होगया उसे रमेन्द्र का कोई समाचार नहीं मिला। वे कहाँ हैं—क्या करते हैं इसे भी वह नहीं जानती।

सतीश भी अब और पहले की भाँति नहीं आते। सौजन्य रक्षा के लिए आना नितान्त प्रयोजन है यह समझ कभी २ एकाध बार आया जाया करते थे। उन्होंने कभी पहले की बीती बातों का उल्लेख हेमांगिनी के सामने नहीं किया। इसी प्रकार बड़े ही कष्ट से हेमांगिनी अपने दु ख के दिन काट रही थी।

ऐसे ही समय एक दिन सतीशचन्द्र उन लोगों के घर आ उपस्थित हुए। वे जब कभी भी आते केवल हेमांगिनी की माका हाल चाल लेने मात्र आते थे। अत आज भी वह उसी प्रकार आए हुए थे।

हेमांगिनी को बिलकुल उदास और खिन्न देख वे उसके सामने आकर बैठ गए। कुछ क्षण तक चुप रह कर वे बोले—"हेम! म समझता हूँ तुम जिस कठिन अवस्था में पड़ी हुई हो उससे ससार के, अनेकों प्रकार के झंझट और भावनाओं को

सतीश के साथ मा के निकट जाना उसका हृदय नहीं चाहता था। अत वह जाने के लिए अस्वीकार करना ही चाहती थी किन्तु फिर उसने अपने को बडी मुश्किल से संभाल लिया और चुपचाप विना कुछ कहे उनके साथ धीरे २ चल पडी।

× × + × ×

उसके दूसरे दिन रमेन्द्र हरकुमार के घर से विदा होकर चले गए।

उसी दिन से सतीश के साथ हेमागिनी का मनमुटाव हो गया। यहाँ तक कि एक दिन तो दोनों में प्राय झगडा की तरह भी हो गया। सतीश और हेमागिनी दोनों ही ने इस बात को समझ लिया कि उन दोनों ही के बीच एक बाधा आड की तरह आकर खड़ी हो गई है। यद्यपि रमेन्द्र का नाम दोनों में से किसी ने भी नहीं लिया यह सत्य है किन्तु तौभी दोनों ही यह अच्छी तरह समझ गए कि यदि रमेन्द्र न आते तो कभी भी ऐसी घटना घटने न पाती।

चौथा परिच्छेद

दो वर्ष होगया है। इन दो वर्षों में हेमागिनी के जीवन में बहुत सा परिवर्तन हो गया है।

उसकी सदा की बीमार मा अभी भी उसी अवस्था में जीती हुई अपने दुखके दिन काट रही है। किन्तु हरकुमार बाबू अब इस ताप पूर्ण संसार में नहीं है। छः महीने हो गए अपनी बीमार स्त्री और कन्या को सदा के लिए शोक-सागर में डुबाकर महाप्रस्थान कर चुके हैं।

उसकी मा ने इस बार एकबारगी ही खटिया पकड़ ली

है। इस कारण विचारी हेमागिनी के ऊपर अभी से घर गृहस्थी का सारा भार आ पड़ा है। वह यद्यपि एक दम से बालिका नहीं है तथापि सदा से पिता माता की दुलारी होने के कारण दु ख, कष्ट चिन्ता किसे कहते हैं—इसे वह कभी स्वप्न में भी नहीं जानती थी। अत विचारी इस समय संसार की अनेकों भावनाओं-चिन्ताओं से एक दम व्याकुल हो उठी है। उसके सारे सुख हसी खेल कूद कपूर की भाँति हवा में उड़ चुके हैं। मानों सुख-शान्ति उसके जीवन से असहयोग कर गये हैं। मा बीमार मरन सेज पर पड़ी हुई—पिता नहीं, भाई नहीं—कोई नजदीक का हितमित्र-आत्मीय स्वजन भी नहीं कि उसकी देख रेख करे—सहायता करे।

अब बहुत दिन होगया उसे रमेन्द्र का कोई समाचार नहीं मिला। वे कहाँ हैं—क्या करते हैं इसे भी वह नहीं जानती।

सतीश भी अब और पहले की भाँति नहीं आते। सौजन्य रक्षा के लिए आना नितान्त प्रयोजन है यह समझ कभी २ एकाध बार आया जाया करते थे। उन्होंने कभी पहले की बीती बातों का उल्लेख हेमागिनी के सामने नहीं किया। इसी प्रकार बड़े ही कष्ट से हेमागिनी अपने दु ख के दिन काट रही थी।

ऐसे ही समय एक दिन सतीशचन्द्र उन लोगों के घर आ उपस्थित हुए। वे जब कभी भी आते केवल हेमागिनी की माका हाल चाल लेने मात्र आते थे। अत आज भी वह उसी प्रकार आए हुए थे।

हेमागिनी को बिलकुल उदास और खिन्न देख वे उसके सामने आकर बैठ गए। कुछ क्षण तक चुप रह कर वे बोले—"हेम! मैं समझता हूँ तुम जिस कठिन अवस्था में पड़ी हुई हो उससे संसार के अनेकों प्रकार के झंझट और भावनाओं को

अकेले सिर पर वहन करना कितना कठिन काम है, यह तुम अच्छी तरह समझ गई होगी। तुम्हारी ऐसी माता के लाड प्यार में पली हुई लड़की को एकाएक सांसारिक झंझटों को सिर पर उठा लेना बिलकुल असंभव है।"

हेमांगिनी ने चौंककर मुँह ऊपर को उठाया। उसका हृदय भीतर ही भीतर जोर से धड़ २ करने लगा। सतीशचन्द्र बोले—"तुम अब एक दम से बालिका नहीं हो। मेरे कहने का मतलब अच्छी तरह समझ सकती हो। यदि तुम चाहती या इच्छा करती तो मैं बहुत दिन पहले ही तुम से ब्याह कर सकता। हेम! किन्तु तुम जानती हो कि मैं उसकी अपेक्षा तुम्हें कितना प्यार करता हूँ। तुम्हें सुखी करने के लिए मैं कितना व्याकुल हूँ, यह परमेश्वर के सिवाय और कौन जान सकता है।"

हेमांगिनी रुद्ध कंठ से बोली—"किसकी अपेक्षा?" मानो एकाएक हेमांगिनी के कंठ को किसी दानव के अलक्ष हाथ ने जोर से धर दबाया। बड़े ही कष्ट से हेमांगिनी ने कहा—"आप उनकी बात क्यों उठाते हैं? वे हमारे होते ही कौन हैं? आप उनकी चर्चा व्यर्थ करते हैं।" मानों उसका कंठ-स्वर धीरे २ धीमा होता गया।

"हेम! यदि ऐसा है तो मेरे प्रस्ताव पर सम्मत हो जाओ। मेरे प्रेम की अवहेलना मत करो। मैं आज ही विवाह की तय्यारी करता हूँ। तुम तो जानती ही हो, तुम्हारे पिता की क्या इच्छा थी?"

अब हेम इस बात का क्या उत्तर दे? उसने उसी समय अपने हृदय की ओर दृष्टि डालकर टटोला, देखा—अभी भी वहाँ से रमेन्द्र की मूर्ति हटी नहीं है—ज्यों के त्यों उसी प्रकार अंकित

है जैसे कि पहले थी। किन्तु वह उससे विवाह नहीं कर सकेंगे। भला एक गरीब जिसकी जात पात का कुछ भी पता नहीं, ऐसे अज्ञात कुलशील वाले डाक्टर से वह किस प्रकार व्याह करेगी? सतीश भारी जमींदार और धनी के पुत्र हैं। इस समय वही अपने पिता के अतुल धन-सम्पत्ति के एकमात्र अधिकारी हैं। हेमागिनी भी अपने माता पिता के एक मात्र सुख में पली हुई दुलारी पुत्री है। अत हेमागिनी कांपते कंठ से बोली—"अच्छा कल तक इस बारे में सोचने के लिए मुझे समय दें।"

सतीश व्यग्र भाव से बोले—"अच्छी बात है, यही सही—देखना 'ना, न करना। तुम जानती हो मैं तुमको कितना प्यार करता हूँ। मैंने सिर्फ तुम्हारे ही लिए अब तक व्याह नहीं किया है। यदि तुम्हें न पाऊँगा तो सत्य कहता हूँ मैं आजन्म व्याह न करूंगा। और इस समय तुम्हारी मा और तुम सभी की देख रेख करने के लिए एक आदमी की बड़ी ही आवश्यकता है। तुम पढ़ी-लिखी हो—बुद्धिमती हो। और अधिक मैं तुमको क्या कहूँ।

बहुत देर तक हेमागिनी चुपचाप बैठी रही। उसके बाद धीरे २ उठकर अपनी बीमार माके पास जा उपस्थित हुई। माने उसकी ओर केवल एक बार मात्र ताक कर फिर आँख मूँद लिया।

हेमागिनी माके पास बहुत देर तक बैठी इधर उधर करती रही। किन्तु जो बात कहना चाहती थी वह कह नहीं सकी। बहुत देर के बाद दिल में हिम्मत बाँधकर बोली—"माँ!"

माता ने नेत्र खोलकर कन्या की ओर ताका, किन्तु हेमागिनी कोई बात कह नहीं सकी। तब मा धीरे २ बोली—"

क्या कहती हो बेटी ! कहो,

"मा !"

"कहो, क्या है बेटी ?"

"सतीश बाबू—"

"सतीश बाबू क्या ? छि. बेटी, मेरे आगे तुमको लज
कैसी ! कहो बेटी क्या बात है ?

"वे कहते हैं कि—" इतना ही कह कर हेमांगिनी चु
हो गई।

इस पर माने व्यग्र होकर कहा—"क्या कहते थे—समझ
विवाह की बात ? तो फिर अच्छी बात तो है। बेटी ! तुम
क्या कहा ?"

"अभी भी मैंने कुछ नहीं कहा है। तुम से बिना पूछे
कह क्या सकती हूँ।"

"सतीश के ऐसा दामाद पाने को किसको इच्छा न होगी
तुम तो जानती ही हो तुम्हारे पिता की वही इच्छा थी—मे
भी इच्छा है।

"तब भी मा—"

"तब भी क्या बेटी ! ऐसे ब्याह में आपत्ति क्या ?

"मैं सतीश बाबू को जैसा चाहिये वैसा ठीक रूप से प्रे
कर नहीं सकी हूँ।

"ओह ! ये सब लडकपन की बातें हैं। विवाह होने
पहले कुवारी कन्यायें इसी प्रकार कहा करती हैं। भला अप
अपने पति को स्त्री प्यार न करेगी तो कौन करेगा। स्त्री मा
अपने स्वामी को प्रेम करती है। ऐसे उत्तम संबंध में "ना,
कहना बेटी। ऐसा स्वामी पाना बहुत दुर्लभ है। और सती
के साथ तुम्हारा ब्याह हो जाने से हम लोगों को संसार

भावनायें सब दूर हो जायेंगी—कोई कष्ट रह नहीं जायगा।"

वही हुआ। दूसरे दिन सतीशचन्द्र ने हेमागिनी की स्वीकृति प्राप्त करली। वे सचमुच ही हेमागिनी को हृदय से प्यार करते थे। हेमागिनी के मुँह से विवाह की सम्मति पाकर सतीशचन्द्र का हृदय आनन्द से उथल-पुथल हो उठा। वे शीघ्र व्याह की तय्यारी करने लग गये। पाठक! इतने दिन के बाद सहस्रों घात प्रतिघात सहन कर आज दोनों हृदय एक होने के लिए अग्रसर हुए।

पांचवाँ परिच्छेद



संसार में ईश्वर की लीला समझना बड़ा ही कठिन काम है। भाग्य मनुष्य का जो कुछ न करावे थोड़ा है। हेमागिनी अपने को किसी तरह भी सुखी नहीं बना सकी। वह अपने हृदय के साथ बराबर प्राणपण से घोर युद्ध करने लगी किन्तु किसी प्रकार भी वहाँ से रमेश की मोहनी मूर्ति को हटा नहीं सकी। जितना ही व्याह का दिन निकट आने लगा वह उतनी ही और भी उदास, असुखी और खिन्न हो पड़ी।

अनन्त शक्ति शाली विधना की लीला बड़ी ही अद्भुत और रहस्यमयी है। ब्रह्मा के लेख को देवता भी नहीं जानते मनुष्य की तो बात ही क्या है वह तो केवल उसके हाथ का पुतला मात्र है। जिस रमेन्द्र की दो वर्ष से कुछ भी खबर नहीं मिली थी—हेमागिनी के व्याह के कुछ दिन पहले वही एक दिन सहसा आशातीतभाव से आ उपस्थित हुए।

कापते हुए हृदय और बडे ही सकोच के साथ हेमागिनी ने रमेन्द्र से भेट की। इन दो वर्षों में भी वे उसे नहीं भूल सके। अंत वे नतमस्तक हो चुप-चाप खड़े रहे।

इसके बाद धीरे धीरे रमेन्द्र बोले—"पास हो कर वर्मा में एक नोकरी पा वहाँ चला गया था। इन दो वर्षों में छुट्टी एक दिन की भी नही मिली।"

हेमागिनी बड़े ही कोमल स्वर में बोली—अपनी राजी खुशी का "समाचार भी नहीं दिया क्यों?"

"मुझे हिम्मत नहीं हुई—आपको पत्र लिखने में मैंने साहस नहीं किया। कौन जाने आपको शायद कुछ बुरा लगे।"

हेमागिनी ने कोई उत्तर नहीं दिया—वह चुप-चाप धरती की ओर ताकती रही। उसमें इस समय बात करने की ताकत नहीं थी। सिर से ले कर पैर तक उसका शरीर थर थर काँप रहा था। ललाट में विषाद की सिकुडने दिखाई दे रही थीं।

रमेन्द्र बोले—"अब कुछ दिन कलकत्ता रहूँगा। क्या पहले की भाँति आप लोगों के मकान में रह कर आप लोगों की सेवा कर सकूँगा? मैं बडा आदमी नहीं हूँ—आप लोग बडे—"

इस बात से हेमांगिनी के बड़े बड़े कमल सरीखे दोनों नेत्र आसुओं से भर आये। इसको देख रमेन्द्र बड़े ही व्याकुल भाव से बोल उठे—"यह क्या? मेरी बातों से क्या आपको दु ख तो नहीं हुआ?"

हेमागिनी रुद्ध कण्ठ से बोली—"नहीं नहीं, यह बात नहीं है—मैं सुखी नहीं हूँ—"

— "सुखी नहीं हूँ! क्यो-क्यों—आप क्या। नहीं जानतीं—मैं क्या आपको सुखी करने की चेष्टा नहीं कर सकता? किसी प्रकार की त्रुटि तो मुझसे नहीं हो गई? आपकी माँ मुझे एक

दिन पुरस्कृत करना चाहती थीं। यदि उस समय उनके निकट मैं आपको चाहता तो आप क्या नाराज होती ?"

इस पर अत्यन्त व्याकुल होकर जल्दी से हेमागिनी बोल उठी—"नहीं नहीं, ऐसा काम कभी न करना मेरा व्याह ठीक हो गया है।"

रमेन्द्र हताश होकर एक लम्बी साँस खींच बोले—"व्याह ठीक हो गया है ?"

हेमागिनी बड़े ही दुखित कंठ के साथ बोली—"हाँ, किन्तु मैं सुखी नहीं हूँ। आप अब और यहाँ न आवें और न मुझसे ही भेंट करें।"

"वह कौन है—कौन भाग्यशाली पुरुष है—सतीश बाबू तो नहीं हैं ?"

"हाँ—उन्हीं के संग मेरा व्याह ठीक हो गया है।"

"हेमागिनी ! हेमागिनी ! क्या तुम्हारे मन को मैंने नहीं जाना ? मैं क्या इतना अन्धा हूँ ! और मैं तुमको किस प्रकार प्यार करता हूँ—आज दो वर्ष से बराबर तुम्हारे प्रेम में पागल हो रहा हूँ—इसको भी तुम क्या नहीं जानती हो ? अभी भी समय है। विवाह हुआ नहीं है।

हेमागिनी ने इस बार अपना सिर ऊपर उठाया। कहा—मैं इसे अस्वीकार नहीं करती—मैं भी तुम्हें प्यार करती हूँ। तौभी तुम्हारे साथ मेरा व्याह हो नहीं सकेगा। अब कभी तुम मुझसे भेंट करने न आना।"

"क्यों क्यों ?—"

यही कहकर रमेन्द्र ने हेमागिनी के दोनों कोमल हाथ अपने हाथ में लेलिया। हेमागिनी रमेन्द्र के हाथ पर से अपना हाथ खींच लेने की चेष्टा करने पर भी, न खींच सकी—उसके सारे

अगों में एक प्रकार की बिजली दौड़ गयी। उसके कमल सरीखे दोनों नेत्रों से जल बहने लग गया—वह थरथराती हुई रुद्ध कंठ से बोली—"छोड़ दो-छोड़ दो! मुझे अब भूल जाओ। अब कभी मुझसे न मिलना।"

"अच्छा तुम्हारी यदि यही इच्छा है तो हेमागिनी! अब विदाई दो, जाता हूँ।"—

रमेन्द्र ने इसके बाद बेहोश की भाँति चुपचाप हेमागिनी का एक हाथ खींचकर अपनी धड़कती हुई छाती के ऊपर रख कर दबा लिया और उसी समय रुकती साँस से एक बार ललचाई आँखों से देखकर वहाँ से चले गये।

और भी कोई दूसरा आदमी इस दृश्य को देख रहा है, यह बात हेमागिनी या रमेन्द्र दोनों में से किसी ने भी नहीं जाना। पाठक! वह और कोई नहीं सतीशचन्द्र हैं जिनके साथ हेमागिनी का ब्याह होनेवाला है। सतीश इस बात को जानते नहीं थे—कभी मनमें इसकी उन्हें चिन्ता भी नहीं थी कि रमेन्द्र हेमागिनी के पास बैठा है।

उन्होंने अपनी आँखों के सामने जो दृश्य देखा उससे वे क्रोध और ईर्ष्या से जलकर स्तम्भित हो वहीं जड़वत् खड़े रह गये। उस समय उनमें आगे चलने की शक्ति ही नहीं रह गई थी! उन्होंने उन लोगों की सारी बातें सुन ली और सारा काम देख लिया। हाय! जिसके साथ कुछ दिन के बाद ही नका ब्याह होगा—वही दूसरे के साथ प्रेमालाप कर रही है। प्रेम की गुलछर्रा उड़ा रही है। मारे क्रोध और ईर्ष्या से उनका शरीर सिर से पैर तक जल उठा। अत: बिना हेमागिनी से भेंट किये ही वे उल्टे पाँव पागल की भाँति जल्दी वहाँ से बाहर निकल गये। वे न मालूम कब तक रास्ते में घूमते रहे—इसका उन्हें कुछ पता

नहीं। उन्हें स्वय इसका ज्ञान नहीं रहा कि वे कहाँ जा रहे हैं और क्या कर रहे हैं।

उद्देश्यहीन की भाँति इधर-उधर घूमफिर चुकने पर जब दिमाग उनका कुछ ठिकाने आया तब वे धीरे धीरे मकान को लौट गये। उन्होंने यह बात अपने मन ही में दबा रक्खी, हेमांगिनी से इसकी कोई चर्चा नहीं की।

हेमांगिनी भी जान नहीं सकी कि रमेन्द्र के साथ उसकी मुलाकात का दृश्य सतीश बाबू ने देख लिया है। अत विवाह होने के पहले ही दोनों ही ने एक दूसरे से अपने मन की बात छिपा रक्खी। पाठक ! इस प्रकार के व्याह का क्या परिणाम होगा—इसे ईश्वर ही जानें ?

× × × ×

सतीशचन्द्र के साथ हेमांगिनी का शुभ व्याह हो गया। सतीश स्त्री और सास दोनों को लेकर अपनी जमींदारी कालीपुर चले गये। हेमांगिनी की माँ को अब और अधिक दिन मरन-सेज पर तड़फना नहीं पड़ा शीघ्र ही उनका अपने स्वामी के साथ अनन्तधाम में पुन मिलाप हो गया।

उसके बाद तीन वर्ष और बीत गया है। इस समय हेमांगिनी एक पुत्र और एक कन्या की माँ है। किन्तु दिन पर दिन उसका स्वास्थ्य बिगड़ता जाता है—इसके लिए सतीशचन्द्र बड़े ही सोच फिकर में पड़ गये हैं। अस्तु, बहुत सोच-विचार के बाद एक दिन उन्होंने हेमांगिनी के निकट दवा पानी बदलने के लिये मधुपुर जाने की इच्छा प्रकट की। इस पर हेमांगिनी भी राजी हो गई। अस्तु उसी समय उनकी तैयारी होने लगी।

छठवाँ परिच्छेद


महीना कुवार का है। जाड़े की ठण्डी ठण्डी हवा का धीरे धीरे बहना आरम्भ हो गया है। उसी समय एक दिन सवेरे कलकत्ता से एक रेलगाड़ी मधुपुर स्टेशन पर आ खड़ी हुई। मुसाफिर गाड़ी से उतर पड़े। मुसाफिरों को उतार कर गाड़ी पुनः भकभक करती हुई आँखों से ओट हो गई। जो लोग गाड़ी पर से उतरे पाठक! वे लोग हमारे बहुत पुराने जान पहचानी हैं। वे और कोई नहीं पुत्र कन्या और स्त्री सहित सतीशचन्द्र हैं।

हेमांगिनी इस समय भी पहले की तरह वही कमल-कमनीय, माधुर्य्यमयी, स्थिर यौवना सुन्दरी है। उसका सुन्दरता में अभी कोई कमी नहीं हुई है। तोभी वह इस समय पतिगृह की मालकिन है। स्वयं गृहस्थिन हुई है और उसमें यौवन की वह उ ग का भाव नहीं हैं।

कौन से मकान में रहेंगे—इसको सतीशचन्द्र जानते नहीं थे। रामपाल बाबू नाम के एक जान-पहचानी मित्र मधुपुर में रहते थे। अस्तु सतीश ने उन्हीं को पत्र लिखा था। सतीश का पत्र पाकर उन्होंने छै महीने के लिए एक मकान भाड़े पर ठीक कर दिया था। वह मकान कैसा है स्टेशन से कितनी दूर पर है यह सब कुछ भी वे नहीं जानते थे। सतीश ने सोचा था, रामपाल बाबू स्टेशन पर मिलेंगे किन्तु देखा वे स्टेशन पर नहीं हैं। एक बिल्कुल अजनबी आदमी पालकी और बैलगाड़ी लेकर उनके आसरे बैठा राह ताक रहा है। रामपाल बाबू को स्टेशन पर न देख कर सतीशचन्द्र मनही मन बड़े ही उदास और

विरत हुए। अपनी स्त्री से बोले—"देखता हूँ, यहाँ के लोगों में भद्रता का ज्ञान एक दम से ही नहीं है।"

हेमांगिनी स्वामी की बातों को भली प्रकार पुष्ट नहीं कर सकी—गर्दन जरा टेढ़ी कर स्वामी की बात का उद्देश्य लेकर बोली—"हाँ—नहीं भी हो सकता है। शायद मालूम होता है किसी विशेष काम में फँस जाने के कारण वे नहीं आ सके हैं। निश्चय ही किसी आदमी को भेजा होगा।"

इसी समय एक अजनबी आदमी ने आकर सतीशचन्द्र के मुख की ओर देखा और पूछा—"क्या आप ही का नाम सतीश बाबू है ?"

सतीशचन्द्र ने उसकी ओर देखकर कहा—"हाँ मेरा ही नाम सतीश बाबू है।"

सतीशचन्द्र के चुप होते ही उस आदमी ने पुनः कहा—"रामपाल बाबू सवेरे ही किसी विशेष काम से देवघर गए हुए हैं। मैं आप लोगों के लिए पालकी और बैल गाडी ले आया हूँ।"

सतीशचन्द्र इतमीनान की साँस लेकर बोले—"अच्छा तो चलो कितनी दूर जाना होगा ?"

"अधिक दूर नहीं—पानिया खोला तक।"

पानिया खोला ! वह और कहाँ है ! सतीश अच्छी तरह समझ नहीं सके। अतः नौकरों को माल असबाब गाड़ी में रखने को कह स्त्री कन्या को पालकी में सवार कराया और दरबान को पालकी के साथ २ जाने की ताकीद कर आप पैदल ही राखाल बाबू के आदमी के साथ पानिया खोला की ओर चल पड़े।

नये देश, नये मकान में आकर सारा बन्दोबस्त ठीक करने में सतीश को प्रायः सारा दिन बीत गया। तीसरे पहर को नये स्थान को देखने के लिए घर से बाहर हो गये।

वे जिस मकान में उतरे हुए थे वह बड़ा ही सुन्दर कवि कल्पना योग्य है। सामने अजया नदी झिर्‌झिर् करती बह रही है। दोनो बगल नये पल्लवों से मंडित सरल तरु लताओं की शाखा प्रशाखाओं में बैठ पक्षीगण अपने मधुर गान से चारो दिशाओं को मुखरित कर रहे थे। मकान के सामनेवाले भाग में कितनी मील तक खाली जमीन दूर तक चली गयी है—यह कहना कठिन है। दूर—दूर—बहुत दूर भूभाग के परे विस्तीर्ण नज़र पहुँचती है वहाँ तक वृक्षश्रेणियों की गाढ़ी हरियाली खासा क़िलाबंदी दीवारो की तरह दीख पड़ती है। फिर बीच बीच में एक एक नीले गगनभेदी पहाड सिर ऊँचा किये खड़े हैं। मेघ और पहाड दोनो मिलकर मानो एक हो गये हैं। आसमान में बादलों के टुकडे नीले रंग में इधर-उधर दौड कर चन्द्र देव को अपनी ओट में छिपा लेने का प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं।

इस मकान के नजदीक और भी दो-तीन मकानों के अतिरिक्त और कोई भी मकान नहीं है। और वह मकान भी सब खाली पडे हैं। केवल एक एक माली मात्र उनमें रहते हैं। पता लगाने पर मालूम हुआ कि वहाँ और लोग प्राय सब ही स्टेशन और थाने के निकट या रेलवे लाइन के उस पार वास करते हैं। सतीश बाबू बड़े ही एकान्त स्थान में आ पड़े थे। हवा पानी बदलने के लिए सचमुच ही स्थान विशेष उपयोगी है।

उन्होंने इधर-उधर घूमकर दो-एक आदमियो से पूछ राखाल बाबू के मकान का पता लगा लिया। राखाल बाबू अभी अभी देवघर से लौटे आ रहे थे। उन्होंने सतीशचन्द्र को बड़े ही आदर के साथ बैठाया और कहा—"क्या कर विशेष काम के आ पड़ने से देवघर जाने को बाध्य हो गया था। अभी अभी वहाँ से वापस आ रहा हूँ। इसी कारण स्टेशन पर उपस्थित

न हो सका ।' क्षमा कीजियेगा । अच्छा मधुपुर आपको कैसा दीख रहा है ? स्थान आपको पसंद है न ?"

सतीशचन्द्र बोले—"हाँ स्थान एक दम से खराब नहीं है—तब भी लोग यहाँ बहुत कम हैं ।"

"हाँ ठीक है किन्तु अभी भी हवा-पानी बदलने के लिए बहुत से लोग आ नहीं चुके हैं । थोड़े ही दिन के बाद आप धीरे धीरे देखेंगे कि कितने ही लोग झुण्ड के झुण्ड वायु परिवर्त्तन के लिए यहाँ आकर जुट जायेंगे ।"

'अच्छा यह बताइये—यहाँ कोई अच्छे डाक्टर भी हैं ?"

"हाँ, डाक्टर का अभाव न रहेगा । रेलवे के डाक्टर—"

सतीशचन्द्र राखाल बाबू को बीच ही में रोककर बोले—"वे सब समय तो मिलेंगे नहीं ?"

"हाँ कभी कभी उन्हें लाइन में जाना पड़ता है अवश्य । तोभी एक बड़े ही अच्छे डाक्टर यहाँ प्रैक्टिस करते हैं उमर अधिक नहीं है—"

सतीशचन्द्र ओंठ बिचकाकर बोले—"कम उमरवाले डाक्टर ! वे क्या अभी भी यहाँ डाक्टरी सीख रहे हैं ? मैंने आपको पहले ही लिख दिया था कि मेरी स्त्री का शरीर अच्छा नहीं है । उस पर छोटे छोटे बच्चे लड़के लड़की भी साथ में हैं । ऐसी अवस्था में जहाँ किसी अच्छे डाक्टरों का अभाव हो वहाँ हम लोगों का रहना किसी प्रकार भी हो नहीं सकता । आपने तो लिखा था कि यहाँ खूब अच्छे डाक्टर हैं ?

"हाँ हम लोग उन्हे खूब ही अच्छा डाक्टर समझते हैं । अभी उनको यहाँ आये केवल दो ही वर्ष हुए हैं—इतने ही समय में लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करते हैं । सब उनको पुकारते हैं रमेन्द्र बाबू—"

"रमेन्द्र बाबू !" सतीशचन्द्र ने बड़े ही विस्मय विस्फारित नेत्रों से राखाल बाबू की ओर देखा फिर जल्दी से पूछ बैठे—"क्या नाम कहा आपने ?"

"रमेन्द्र बाबू !"

"क्या—क्या—?"

राखाल बाबू ने सतीशबाबू को स्वर-भंगी से विस्मित हो उनके मुँह की ओर ताका। सोचा, क्या सतीश आजकल कान से कम तो नहीं सुनते हैं ? अत जरा ऊँचे स्वर से बोले—"रमेन्द्रनाथ घोष, आप क्या उन्हें पहचानते हैं ?"

सतीशचन्द्र न मालूम क्या कहने जा रहे थे किन्तु फिर अपने को सम्भाल कर मृदुस्वर में बोले—"हां याद तो ऐसी ही पड़ती है कि मैंने उनको कहीं देखा है। वे यहां से कितनी दूर पर रहते हैं ?"

"यहीं पास ही में रहते हैं—अधिक दूर नहीं है प्रयोजन पड़ने पर वे घर में हर समय मिल सकेंगे।"

इसके बाद मधुपुर के सम्बन्ध में और भी नाना प्रकार की बातें दोनों में होती रही उसके बाद सतीशचन्द्र विदा होकर अपने घर चले गये।

सातवाँ परिच्छेद

नये स्थान में आकर सभी व्यस्त हो पड़ गये। सतीशचन्द्र की दास दासियाँ भी व्यस्त हो गई थीं। लड़के की दाई भी लड़के को भूल गई थी।

किन्तु लड़को की दाई के लिए वह उपाय नहीं था। कारण बच्चो म अभी भी स्वाधीन भाव से चलने-

फिरने की क्षमता नहीं थी इसी से वह सदा सर्वदा दाई की गोद में ही रहने के लिए बाध्य होती। बच्चे को वहाँ न देखकर बच्ची की दाई ने बच्चे की दाई से पूछा—"छोटे बाबू कहाँ हैं ?"

छोटे बच्चे के पाँव हो गये थे। और वह पैरों के बल धीरे धीरे चलना फिरना भी सीख गया था। बच्ची की दाई की यह बात सुन बच्चे की दाई ने भयभीत होकर चारों ओर नजर घुमाकर देखा। देखा बच्चा इधर-उधर कहीं नहीं दिखाई देता। अतः वह घबड़ाकर उसकी खोज में बाहर की ओर दौड़ पड़ी।

बाहर आते ही दाई एक दम चीखकर चिल्ला उठी। उसका चीखना सुन घर के सब लोग बाहर दौड़कर चले आये। देखा—बरामदे की रेलिंग के ऊपर से बच्चा नीचे पत्थर के मेज के ऊपर गिरकर बेहोश पड़ा है। और सिर फटकर माथे पर से खून की धारा बह रही है।

हेमांगिनी भी दौड़ी हुई आ गई थीं। उसने जल्दी से बालक को उठाकर गोद में ले लिया। उसके बाद अस्फुट स्वर में बोली—बाबू! बाबू कहाँ हैं—जल्दी बुलाओ।"

नौकर ने कहा—"वे बाहर घूमने गये हैं। किस तरफ गये हैं—कह नहीं सकता।"

"तब जा, शीघ्र एक डाक्टर को बुला ला.

उसी समय नौकर डाक्टर को बुलाने दौड़ा। हेमांगिनी पागल की भाँति बेहोश बालक को गोद में उठा-घर के भीतर चली आईं।

कुछ ही देर के बाद डाक्टर आ उपस्थित हुए। वे हाफ रहे थे जिससे मालूम होता था कि वे निश्चय ही एक साँस में चले आये थे। उनके आ पहुँचने के पहले ही बालक होश में आ गया था। उन्होंने झट बड़े ही यत्न से बालक का सिर धोकर उसमें

पट्टी बाँध दी। इसके बाद बोले—"बच्चे को उठने न दीजियेगा। मैं अभी घर से एक दवा भेज देता हूँ। कोई डर की बात नहीं है। मामूली चोट लगी है।"

पाठक! ये डाक्टर रमेन्द्रनाथ हैं। नौकर के मुँह से खबर पाते ही वे दौड़े आये थे। अब तक रमेन्द्र या हेमांगिनी दोनों में से किसी को भी एक दूसरे को देखने का समय या अवसर नहीं मिला था। विशेषतः हेमांगिनी इस समय रमेन्द्र को बिल्कुल ही भूल गई थी। आज तक उनकी याद भी उसके मनमें नहीं आयी थी। रमेन्द्र ने भी जो भाव दिखाया उससे इसके पहले कभी वे हेमांगिनी को प्यार करते थे—इस प्रकार का चिह्न मात्र भी उनके भाव से प्रकट नहीं हुआ।

रमेन्द्रबाबू उठकर खड़े हो गये। वे कोमल स्वर में बोले—"बहुत दिन के बाद आपसे भेंट हुई ?"

हेम ने सिर नीचे किये ही उत्तर दिया—"मैंने आपको देखते ही पहचान लिया था। मैंने रासालबाबू के मुँह से सुन लिया था कि आप लोग मधुपुर आ रहे हैं।"

"बच्चे को अधिक चोट तो नहीं आई है न ?"

"नहीं कुछ नहीं। मामूली है। मैं मन में समझे हुए था कि चोट भारी लगी है। लड़कों को प्रायः ऐसा ही हुआ करता है। यह आपका क्या सबसे बड़ा लड़का है ?"

"हाँ, एक और लड़की है।"

"अच्छा मैं अभी एक ओषधि भेज देता हूँ। उसमें का एक खुराक अभी पिला दीजिएगा। सतीशबाबू को मेरा नमस्कार कह दीजियेगा।"

इतना कह रमेन्द्रनाथ चले गये। उन्होंने कुछ दूर रास्ते पर जाकर पीछे पलटकर देखा, हेमांगिनी जंगले पर खड़ी है। इसके

बाद फिर पीछे फिर कर उन्होंने नहीं देखा। वे धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे। हेमागिनी को जङ्गले पर खड़ी देख वे जल्दी जल्दी पाँव बढ़ाकर चले गये। मालूम होता है हेमागिनी ने भी उन्हें नहीं देखा। सच-मुच ही उन दोनों के मन से पहले की बात एक प्रकार से बिल्कुल ही दूर हो गई थी।

किन्तु एक मनुष्य ने उस बात को नहीं समझा। सतीशचन्द्र मकान लौट आ रहे थे। उन्होंने दूर ही से अपनी स्त्री को जङ्गले पर खड़ी और रास्ते में रमेन्द्र को देखा। वे राखालबाबू के मुँह से रमेन्द्र का नाम सुन मन ही मन उनकी ही बातों की आलोचना करते हुए चले आ रहे थे। और वही रमेन्द्र उनकी स्त्री को मधुपुर आते न आते उनके ही मकान में उनकी अनुपस्थिति में चुपचाप छिपे छिपे उनकी स्त्री से भेंट करने आया था। वह चला जा रहा है और उनकी स्त्री जङ्गले में खड़ी होकर उसे देख रही है। सतीश मारे क्रोध के सिर से पैर तक जल उठे।

रमेन्द्रबाबू उन्हें देख नहीं पाये। दूसरी तरफ जरूरी काम होने के कारण रास्ते में जल्दी जल्दी चलकर आँखों की ओट हो गये। सतीशचन्द्र मन ही मन बोले—"मुझे देख कर भाग गया। उसे मुझसे भेंट करने को साहस नहीं हुआ। कैसे साहस होगा? अनायास ही मेरी स्त्री से चुपचाप भेंट कर चला गया ओह! एक दिन की भी देर उससे सहा नहीं गया।"

इसी समय यदि कोई सतीशचन्द्र को कहता कि सचमुच ही रमेन्द्र ने उन्हें नहीं देखा, अन्यत्र जरूरी काम होने के कारण जल्दी जल्दी चले गये हैं तो उन्हें उस बात पर कभी विश्वास न होता।

मकान के भीतर प्रवेश करने पर भी सतीशचन्द्र का मन

नहीं बदला। उन्होंने अपने स्त्री को घबडाई हुई व्याकुल और उत्कंठित देखा। यथार्थ में पूछिए तो उसकी वह अवस्था अपने पुत्र के लिए हुई थी। किन्तु सतीश ने सोचा—रमेन्द्र से भेंट करने के कारण ही उसका यह भाव हुआ है स्वामी को देखते ही मात्र हेमांगिनी बोल उठी—"आ गये! मैं बडी भारी विपद में पड़ गई थी। एक बडी भारी दुर्घटना हो गई है।"

सतीशचन्द्र क्रोध के स्वर में बोले—"खूब दुर्घटना हुई है जो घटना हुई उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ—तुम्हें कहने की ज़रूरत नहीं है।"

असावधानता के कारण बच्चे का चोट लगी है। इससे स्वामी गुस्से में हो गये हैं, यह सोच हेमांगिनी बोली—"विशेष भारी चोट नहीं लगी है डर की कोई बात नहीं है-रमेन्द्र बाबू ने यही बात कही है। वे यहां के एक नामी डाक्टर हैं अवश्य ही तुमने उन्हें यहाँ से बाहर जाते देखा होगा।

क्रोध को दबाने की चेष्टा करने में सतीशचन्द्र का कंठ मानों और भी बंद हो गया। कुछ देर के बाद वे बोले—हाँ, हाँ, मैंने उसे देखा है। यहाँ वे किस लिए आये थे ?"

डरती हुई हेमांगिनी बोली—"मैंने उन्हे बुला भेजा था। मैं—"

जिस प्रकार बारूद में आग के लगने से बारूद भड़क उठती है, उसी प्रकार क्रोध से जल भुनकर सतीशचंद्र ने कहा—"तुमने बुला भेजा था ? क्यों किस लिए किस साहस से तुमने उन्हें यहाँ बुलाया था ? मेरे घर से बाहर जाते न जाते तुमने उनको घर में बुला भेजा। मालूम होता है पहले ही से तुम लोगों में भेंट मुलाकात होती रही है—वैसे ही आज भी हुई है।"

हेमांगिनी बड़े ही विस्मित स्वर से बोली—"तुम यह सब

न मालूम क्या कह रहे हो, मेरी समझ में कुछ भी आ नहीं रहा है।"

सतीशचन्द्र ताने के स्वर में बोले—"हाँ तो अब समझ कैसे सकोगी ? अरे वही तुम्हारे पहले के पुराने प्रेमी रमेन्द्र की बात कह रहा हूँ। क्या अब भी नहीं आ रही है मेरी बात। थोड़ी देर के लिए मेरे आँखों की ओट होते ही तुमने झट अपने प्रेमी को बुला भेजा। बड़ी अच्छी बात है। किसने तुमको इतना जल्दी खबर पहुँचाई कि वह यहाँ रहते हैं। इतनी जल्दी तुम्हें वह बात मालूम कैसे हुई। नहीं नहीं तुम बराबर जानती थी कि वह यहाँ रहते हैं, मुझसे तुमने नहीं कहा, छिपा रखा !"

हेमागिनी ने स्वामी के मुँह की ओर विस्मय विस्फारित नेत्रों से ताका और रुद्ध कंठ से बोली—"यह तुम आज कैसी बात कह रहे हो, तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है ?"

आठवाँ परिच्छेद



कुछ समय तक स्वामी और स्त्री दोनों ही एक दम चुपचाप रहे। किसी के मुँह में कोई बात नहीं। नेत्र पलक शून्य हैं—देह में मानो प्राण नहीं—मानों दो मूर्ति रखी हुई हैं।

हेमागिनी निर्निमेष नेत्रों से टकटकी बाँधे धीरे धीरे बार बार स्वामी के सिर से पैर तक घूर घूर ताकने लगी। सतीशचन्द्र स्थिर दृष्टि से हेमागिनी के मुँह की ओर एक टक ताकते रहे। बहुत देर तक किसी के भी मुँह से कोई बात नहीं निकली। अन्त में, उस मौनता को भंग करते हुए सतीशचंद्र ने बात का सिलसिला उठाया। उनके नेत्रों से प्रचण्ड अग्निज्वाला

निकल रही थी और वदन में तीव्र हलाहल भरा था। वे बोले—देखो, तुम्हें स्पष्ट कहे देता हूँ—अब कभी यदि रमेन्द्र से छिपे छिपे तुम भेंट करोगी तो याद रखना फिर किसी तरह भी तुम्हारी रक्षा नहीं होगी—मैं तुम्हे कभी क्षमा न करूँगा। इस बात को बिल्कुल निश्चित समझ लेना।"

हेमांगिनी ने सिर ऊपर उठाया—उसका नारी सुलभ अभिमान जागकर देदिप्यमान हो उठा। अमृत भरे नेत्रों से विश्व दाही आग की चिनगारियाँ फूट फूटकर निकलने लगीं। अपमान के पैरों से कुचला हुआ क्षोभ और क्रोध से पीपल के पत्ते भाँति उसका सर्वाङ्ग थर २ काँपने लगा। अपमान से छेड़ी हुई क्रुद्धसिंहिनी उच्च स्वर में बोली—"छिपी मुलाकात !-छिपी मुलाकात क्या ? बच्चा पत्थर पर गिरकर बेहोश हो गया। इस लिए मैंने नौकर को शीघ्र डाक्टर बुला लाने के लिए कहा, वह रमेन्द्र बाबू को जाकर बुला लाया। मैं यह नहीं जानती थी कि वे यहाँ डाक्टरी करते हैं। वे यहाँ आये और बच्चे के सिर में मलहम पट्टी लगा औषधि दे चले गये। वे यहाँ मुझसे मिलने नहीं वरन् तुम्हारे लड़के को देखने आये थे। तुम छिपे छिपे मिलना किसको कहते हो ?

इतनी बात गुस्से में कह अभिमान से भरी मानिनी-चचल दामिनी की भाँति पैर पटकती हुई उस कमरे से उठकर चली गई। पाठक, यही रमणियों की विशेषता है। कोमलता और कठोरता का विचित्र मनोहर समावेश है जो, कुसुम कोमलाङ्गिनी फूल के स्पर्श से ही मूर्च्छित हो पड़ती है वही फिर उसी क्षण वज्र के समान कठोर बन, अग्नि की वर्षा करने लग जाती है। अपमानिता भामिनी छेड़ी हुई उत्तेजिता सिंहिनी है—मजाल क्या कि उसके सामने पाप ताप आ सकें।

सतीशचन्द्र कुछ देर तक स्तम्भित हो खड़े रहे। उसके बाद जिस कमरे में उनका पुत्र सोया हुआ था उस कमरे में उन्होंने धीरे धीरे प्रवेश किया। जो घटना वहाँ हुई थी सब एक एक करके दाई के मुँह से उन्होंने सुना। किन्तु इससे भी उनके मन की शान्ति नहीं हुई। ईर्ष्या और क्रोध ने उनके हृदय में घुसी हुई नरकाग्नि को उत्तेजित कर भड़का दिया था। बहुत दिन से जो ईर्ष्या की आग तुषार मार्जित अग्नि की भाँति धीरे धीरे धू धू कर उनके हृदय में जल रही थी आज वह मानो घी की आहुति पा जोर से धधक कर जल उठी।

वे विवाह करके सुखी छोड़ असुखी नहीं हुए। हेमांगिनी के हृदय का भाव पहले जैसा भी क्यों न रहा हो उसे उसने कभी उनके आगे प्रकट नहीं किया। उसने हर प्रकार से उनको सुखी किया था। किन्तु ईर्ष्या ऐसी भयकरी काल सार्पिणि होती है कि वह एक बार हृदय में स्थान पाने से फिर सहज ही वहाँ से जाने का किसी प्रकार भी नाम नहीं लेती। आज बहुत दिन के बाद रमेन्द्र को अपनी पत्नी के पास देख मौका पाकर वही भीषण काल सर्पिणी मस्तक उठा डसने को खड़ी हो गई।

स्वामी और स्त्री में उस दिन फिर और एक भी बात नहीं हुई। सतीशचन्द्र बाहर ही बैठक में रहे। अभिमानिनी हेमांगिनी भी उनके निकट नहीं आई।

दूसरे दिन सवेरे रमेन्द्रनाथ आये। उन्होंने सरल चित्त से सतीशचन्द्र से हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। सतीशचन्द्र ने उनको देखकर भी नहीं देखा। केवल हाथ से से उन्हें बैठने का इशारा किया किन्तु रमेन्द्र बैठे नहीं। बोले—"नहीं काम बहुत ज़रूरी है। एक रोगी को अभी देखने जाना होगा। आपका पुत्र कैसा है?"

उसी समय रमेन्द्र का कंठस्वर सुन हेमागिनी वहाँ आ पहुँची। वह आकर बोली—"इस समय तो अच्छा मालूम होता है। सो रहना नहीं चाहता।"

सतीशचन्द्र रुष्ट भाव से बोले—"ऐसे लापरवाह आदमियों को मैंने और कहीं भी नहीं देखा। मैंने कह दिया है कि सब दाई नोकरों को हटा दिया जाय। भला ऐसी असावधानी किस काम की। कहीं कुदाम में लगता तो लड़के की जान ही निकल जाती।"

रमेन्द्रबाबू ने कहा—"हाँ ऐसा भी होना कोई असम्भव नहीं था। अच्छा बच्चे को दिखलाओ तो।"

हेमागिनी ने कहा—"इसी पास ही के मकान में सोया हुआ है। चले जाइये। मैं आती हूँ।"

रमेन्द्रनाथ भीतर चले गये। हेमागिनी ने स्वामी से कहा—"आओ, तुम जावोगे नहीं ?"

हेमागिनी भीतर चली गयी। कुछ देर के बाद वह और डाक्टरबाबू बाहर निकल आये। रमेन्द्रनाथ ने कहा—"इस समय बच्चा अच्छा है। तो भी अभी उसे उठने देना किसी प्रकार भी उचित नहीं है। थोड़ा ज्वर चढ आया है। आजही ज्वर के उतर जाने की सम्भावना है। इस विषय में जरा विशेष सावधान रहियेगा।"

सतीशचन्द्र ने पूछा—"और कोई डरकी बात नहीं है न ?"

"नहीं कुछ भी नहीं। तब भी उठने से ज्वर चढ जाने की सम्भावना है। अतः किसी प्रकार और एक दिन उठने न दीजियेगा। कल सबेरे और एक बार आकर देख जाऊँगा। कोई चिन्ता की बात नहीं है।

रमेन्द्रनाथ चले गये। उनके सरल सहज और निष्कपट

भाव को देख सतीश विस्मित और किंकर्तव्य विमूढ हो गये। अत. वे बहुत देर तक चुप लगाये बैठे रहे।

बालक के उठने से ज्वर बढ आने की सम्भावना है। इसलिये जिसमें वह उठने न पावे इस विषय में दास दासियों को हेमांगिनी ने विशेष सावधान कर दिया था। किन्तु इतने ही में सत्य सत्य ही बालक उठ बैठा। क्यों न उठता—दास दासियाँ सदा से ही बे फिक्र और असावधान होती हैं। बच्चा सो गया है ऐसा समझ वे लोग आपस में बतकही करने को थोड़ा बाहर चले गये थे। उसी अवसर पर बच्चा बाहर घाम में जा खड़ा हो गया।

कुछ देर के बाद ही उसके रोने की आवाज़ से मकान प्रतिध्वनित हो उठा। बच्चा दोनों हाथों से सिर दाबकर चिल्ला रहा था—"माथ फूटा! माथा गया! बाबा दादा!"

दासी कांपते हृदय से दौड़ी हुई जाकर बच्चे को भीतर ले आयी। और चुप कराकर बिस्तरे पर सुला दिया लेकिन ज्वर बन्द नही हुआ। बिचारा बच्चा ज्वर में बेहोश हो पड़ गया। अब बाध्य होकर इस बार स्वय सतीशचन्द्र ने रमेन्द्रनाथ को बुला भेजा।

रमेन्द्रनाथ आकर रोगी को देखते ही भ्रुकुटी चढ़ा कर बोले—"बच्चे को उठने दिया था न ?"

जो कुछ घटना हो गयी थी सतीशचन्द्र ने सब उन्हें कह सुनाया। सुनकर रमेन्द्रबाबू बोले—"ओह! बड़ा अन्याय हुआ। खैर जो हो भय नहीं है। केवल थोड़ा ज्वर मात्र बढ़ गया है। तब भी खूब सावधानी के साथ रखना आवश्यक है। किसी आदमी को साथ कर दीजिए। दवा अभी भेज देता हूँ।"

नवाँ परिच्छेद

कुवार का महीना है—न अधिक गर्मी है न जाड़ा। दिन के समय आकाश में सफेद-सफेद बादलों के टुकड़े इधर-उधर चलते-फिरते दीख पड़ते हैं आकाश बादलों से घिरा रहता है। यही कारण है कि धूप की गर्मी का कष्ट अधिक भोगना नहीं पड़ता। रात को आकाश एक बारगी ही मेघों से खाली होकर साफ हो जाता है और कोटि कोटि नक्षत्रों से उज्वल हो उठता है।

मधुपुर की प्राकृतिक शोभा बड़ी ही मनोरमा है। मानो प्रकृति देवी परम शोभामयी होकर इस छोटे से गाँव को शोभा की खान बना रही है नीले आकाश के बीचसे जिस समय सफेद बगुला कभी कभी पर फट-फटाते उड़ जाता वह दृश्य देखने में बड़ा ही चमत्कारिक मालूम होता। कभी कभी दल बांधकर बगुलों की कतार मंडलाकार सुफेद पुष्पमाला की तरह नीले आकाश में से उड़ कर जाते जाते दूर दूरान्तर की दृष्टि सीमा की आड़ में जब तक मिलकर एक नहीं हो जाते तब तक अवाक हो एक टक उधर ही ताकते रह जाना पड़ता है। शरदऋतु का आगमन हो चुका है। इस समय वर्षा एक दम समस्त स्थान पर समाप्त नहीं चुकी है। कहीं-कहीं खुले हुए विशाल स्थानों पर कुछ कुछ वृष्टि हो रही है। यह बात यहाँ से समक्ष में आ जाती है। उस समय उस ओर की शैल सुषमा और वृक्षादिकों का प्राकृतिक दृश्य मानो उदास और फीका हो गया है। मालूम होता है कि प्रकृति देवी पर्दे की आड़ में चिक के भीतर बैठ इधर का यह अभिनय दृश्य देख रही हैं। पाठक

रङ्गप्रिया प्रकृति देवी की लीला यही हँसना—यही रोना, यही गर्मी और यही वर्षा है।

यहां का प्रातःकाल बड़ाही मनोहर है। पूर्वाकाश में जहां आकाश पृथ्वी की ओर झुक पड़ा है वहाँ से ऊषा की काचन घटा में से जिस समय सूर्यदेव धीरे धीरे उदय होने लगते हैं और नवीन बाल रवि की कनककिरणधारा जिस समय गंगा के बालुकामय पुलिन में स्वर्ण शय्या की भाँति चारो तरफ फैल पड़ती उस समय की शोभा कैसी अपूर्व है, देखते ही बनता है।

सतीशचन्द्र के मधुपुर में आये आठ-दश दिन बीत गये हैं। इस समय बच्चा बहुत कुछ अच्छा है तब भी ज्वर ने अभी सम्पूर्ण रूप से छोड़ा नहीं है। और कोई अच्छा डाक्टर न होने से सतीशचन्द्र रमेन्द्रनाथ को ही बार बार बुलाने के लिए बाध्य हुए। बिलकुल इच्छा न होने पर भी वे रमेन्द्रनाथ का घर में आना बन्द नहीं कर सके। प्रति दिन ही रमेन्द्रनाथ दो-तीन बार आ बच्चे को देख जाने लगे।

इन थोड़े दिनों में ही मधुपुर के बहुत से लोगों से उनकी जान पहचान हो गई है। अत नित्य ही वे लोग सतीशचन्द्र से बात-चीत करने और उनका हाल-चाल पूछने आया करते थे। इन में से प्रफुल्ल बाबू और उनकी स्त्री के साथ उन लोगों की विशेष घनिष्ठता होगई थी। प्रफुल्ल बाबू और उनकी पत्नी प्रायः रोजही उनके घर आया करते। बच्चे का शरीर आज बहुत कुछ अच्छा है यह देख सतीशचन्द्र और हेमागिनी दासदासियों को बच्चे को सावधानी से रखने के लिये कह दोनों प्रफुल्ल बाबू के मकान पर घूमने चले गये।

प्रफुल्ल कुमार ने बड़े ही आदर से सतीशचन्द्र को बैठाया।

उनकी स्त्री हेमांगिनी को भी बड़े यत्न और खातिरदारी से भीतर ले गयी। इधर-उधर की बातें करने के बाद प्रफुल्ल कुमार बोले—"चलिये सतीशबाबु नर्सरी देख आवें।"

सतीश मृदु हँसी हँसकर बोले—"अच्छा तो चलिये न।" दोनों ही नर्सरी देखने के लिए बाहर चले गये। सतीशचन्द्र और प्रफुल्ल कुमार के बाहर जाने के कुछ देर के बाद ही वहाँ डाक्टर रमेन्द्रनाथ आ उपस्थित हुए। प्रफुल्ल कुमार कहाँ गये हैं—यही बात वह नौकर से पूछ रहे थे। ठीक उसी समय सतीशचन्द्र का एक नौकर हँसते-हँसते वहा आ उपस्थित हुआ बोला—"आइये शीघ्र चलिये। देर न कीजिए।"

अपने नोकर का कंठ स्वर सुन भीतर से हेमांगिनी जल्दी के साथ बाहर चली आई और व्यग्रता के साथ बोली—'इस प्रकार हाँफते हाँफते दौड़ा हुआ आया क्यों? मालूम होता है निश्चय ही बच्चे का दुखः बढ़ गया है।"

नौकर बोला—"बच्चा बाबू की तबीयत न मालूम कैसी तो हो रही है। इसी से दाई ने मुझे डाक्टर बाबू के घर भेजा था। वहाँ डाक्टर बाबू का नौकर बोला—"वह अभी प्रफुल्ल-बाबू के घर गये हैं।" इसी कारण यहाँ दौड़ा चला हूँ।

आह! माता की ममता विचित्र होती है। सतीशचंद्र किस ओर घूमने गये हैं। यह किसी को मालूम नहीं था। बस अब और एक पल की देरी भी हेमांगिनी नहीं सह सकी—उसी समय झट रमेन्द्रनाथ के साथ घर की ओर दौड़ पड़ी।

उस समय सन्ध्या हो गयी थी। निर्मल नभमंडल में विश्व-विमोहन शरद चन्द्रदेव उदय हो गये हैं प्रकृति की लाल लाल उज्वल चाँदनी सर्वत्र फैली हुई है सुखः माधुर्य्य और सौन्दर्य के एक साथ मनोहर मिलन में मानों विश्वसम्राज्ञी सर्वत्र प्रेम

को विजयघोषणा कर रही है। ऐसे ही समय हेमांगिनी और रमेन्द्रनाथ एक साथ संग संग जल्दी जल्दी पानियाँखोला की ओर जा रहे थे। नौकर उतना फुर्तीला नहीं है लाचार वह उन लोगों के बहुत पीछे पिछड़ गया था।

इस गाँव के बीच राह में प्रफुल्ल कुमार और सतीशचन्द्र खड़े थे। उन लोगों ने हेमांगिनी और रमेन्द्र को साथ साथ जाते देखा। प्रफुल्ल कुमार बोले—"मालूम होता है हम लोगों के डाक्टर ही तो हैं? हाँ निश्चय वे ऐसे ही नाटे हैं। साथ में कोई स्त्री भी है। वाह खूब!—

सतीशचन्द्र हँसे। वे दूर से अपनी स्त्री को पहचान नहीं सके। इसके बाद वे लोग दोनों ही प्रफुल्ल कुमार के घर की तरफ लौट पड़े। उस समय और भी दो एक भले आदमी रास्ते में साथ साथ चले आ रहे थे। उन लोगों को देख प्रफुल्ल कुमार हँसते हँसते बोले—"देखिए हम लोगों के डाक्टर बाबू चुपचाप डुब्बी लगाकर पानी पीते हैं। यहाँ न आकर चुपचाप एक सुन्दरी को साथ लेकर घूम रहे हैं। क्या खूब! कैसी टट्टी की ओट में शिकार खेल रहे हैं।"

उनमें से एक मनुष्य ने हँस कर कहा—"सतीश बाबू की स्त्री तो हैं।"

यह बात उन्होंने कोई बुरे खयाल से नहीं कहा। उन्होंने आते ही सुन लिया था कि लड़के की तबीयत खराब होने की बात सुन हेमांगिनी डाक्टर के साथ मकान चली गई हैं। किन्तु सतीश के हृदय में यह बात मानो विष से बुझी हुई तीर की तरह चुभ गई।

प्रफुल्ल कुमार ने पूछा—"वे डाक्टर के साथ चली क्यों गयीं?"

जो कुछ घटना घटी थी एक दूसरे मनुष्य ने सब कह सुनाया। किन्तु सतीशचन्द्र ने कोई बात नहीं कही। वे चुपचाप टकटकी लगाये पलक शून्य दृष्टि से रास्ते की ओर ताक रहे थे। दिगदिगन्त तक फैला हुआ पृथ्वी का प्रान्त उज्वल चन्द्र किरण से ओत-प्रोत हो रहा था। ऊपर मेघशून्य साफ आकाश में न मालूम कितने ही तारागण हीरे के टुकड़ों की तरह चमक रहे थे। उनके बीच में चन्द्रदेव आज ऐसे भाव से जगत् में अपनी उज्वल चांदनी फैला रहे हैं कि मानो आज अपना सर्वस्व खर्च कर अपने आपको भी स्वाहा कर डालने को तय्यार हैं। बाह्य प्रकृति बड़ी ही शोभामयी और आनन्द विह्वला है। बाह्य जगत की ऐसी विमल शोभा और प्रकाश सचमुच ही सतीशचन्द्र के हृदय पट के साथ अमावस्या की गाढ़ी कालिमा से लिप्त हो उठा था।

वे बैठे हुए थे। सहसा चकित होकर खड़े हो गये और बोले—"मैं चलता हूँ—देखूं घर में क्या हो गया है।"

उनके चले जाने पर एक आदमी ने कहा—सतीश बाबू अपने लड़के को बड़ा ही प्रेम करते हैं। इसी से उसकी बीमारी की बात सुनते ही कैसे घबड़ा गये—देखा?"

किन्तु यथार्थ में लड़के के लिए सतीशचन्द्र का वह भाव नहीं हुआ था। प्रचण्ड ईर्ष्यारूपी अग्नि उनके समस्त हृदय में व्याप्त होकर अपने अमोघ प्रभाव का विस्तार कर रही थी।

कुछ देर पहले वे लड़के को बहुत अच्छा देख आये थे। इतने ही में उसकी बीमारी के बढ़ आने की कोई सम्भावना नहीं थी। इसी से उन्होंने सोचा—"दोनों एक साथ एकान्त निर्जन स्थान में घूमने के लिए ही आपस में चुपचाप सलाहकर इसी बहाने चले गये हैं। लड़के की बीमारी की बात बिल्कुल ही

झूठी है। अत: वे क्रोध में आपे से बाहर हो मकान की ओर दौड़ पड़े। ईर्ष्या से देवता भी राक्षस हो जाते हैं। सतीश तो केवल क्षीणदर्शी दुर्बल हृदय दानव मात्र हैं।

मकान के पास आकर वे मकान के भीतर नहीं गये। कुछ देर तक चोर की भाँति चुपचाप मकान के चारों ओर घूमते रहे। उसके बाद पाँव दबाकर चुपचाप घर के भीतर जा उन्होंने धीमे स्वर में नौकर से पूछा—"तेरी मालकिन आयी है?"

उसने कहा—"हाँ डाक्टर बाबू के साथ आयी हैं। डाक्टर साहब बच्चे को देख रहे हैं।"

इसके बाद धीरे धीरे पाँव दबाकर उन्होंने उसी घर में प्रवेश किया। देखा—उनकी स्त्री पलग के पास खड़ी है। रमेन्द्र नीचे से झुककर बच्चे की नाड़ी देख रहे हैं।

पहले बच्चे ने ही सतीशचंद्र को देखा। देखते ही—"बाबा बाबा!" कहकर उठने की चेष्टा करने लगा।

स्वामी को देखकर हेमांगिनी बोली—"इस समय तो बच्चा बहुत अच्छा है। दाई न मालूम क्यों इतनी घबड़ाई गई थी, कुछ समझ में नहीं आता।"

सतीशचन्द्र रुष्ट होकर दासी की तरफ मुड़े और बोले—"तू ने व्यर्थ बिना समझे इतनी जल्दी डाक्टर को क्यों बुलाने भेजा?"

दासी बोली—"वाह क्यों न बुलाने भेजती? बच्चे को ज्वर बढ़ आया था बक झक करता था। मुझे बड़ा डर लगा। तुम्हारा कोई पता नहीं था कहाँ घूमने गये हो। और कहकर भी नहीं जाते कि अमुक जगह जाता हूँ। इसी से डरकर मैंने डाक्टर को बुलाने के लिए आदमी भेजा था।"

रमेन्द्रनाथ मुँह ऊपर को उठाकर बोले—इस प्रकार के

ज्वर में कभी २ ऐसा ही हो जाता है इसमें डरने की जरूर ही बात है।

औषधियों की व्यवस्था कर रमेन्द्रनाथ वहाँ से चले गये। हेमागिनी कुछ देर तक लड़के के पलग के पास बैठ अपने सोने वाले कमरे में चली आयी। हेमागिनी के घर के भीतर प्रवेश करते ही उसी समय उस घर में सतीशचंद्र ने प्रवेश किया।

दसवाँ परिच्छेद



तीशचद्र ने घर के भीतर आते ही द्वार बद कर लिया। हेमागिनी विस्मित होकर बोली—"दरवाजा बद क्यों कर लिया।"

सतीशचंद्र वज्र गभीर स्वर में बोले—"जिसमें मेरी बात समाप्त होने के पहले इस घर से बाहर न जा सको इसी लिए दरवाजा बदकर लिया है। मुझे तुमसे बहुत सी बातें करनी हैं। बताओ, आज इस चाँदनी रात में अपने प्रेमी के साथ घूमकर आनन्द लेने का वृत्तान्त कैसा है मैं सुनना चाहता हूँ।"इससे पहले कई बार ऐसा हुआ है।

हेमागिनी ने दरवाजे की ओर ताका। स्वामी का यह भाव देखकर वह बिना कोई बात मुह से कहे वहाँ से उठ दूसरी ओर चली जाती। आज सहसा इस प्रकार पिंजरे में बद होना उससे सहा नहीं गया। वह रो पड़ी और बोली—क्यों तुम मेरे साथ ऐसा कर रहे हो?" मैंने क्या कभी कोई तुम्हारे आगे कसूर किया है? बिना कारण व्यर्थ क्यो तुम यह सब बातें कहते हो? मुझमें कभी क्या कोई दोष पाये हो?"

सतीशचन्द्र बड़े ही कर्कश स्वर में बोले—नहीं आज तलक नहीं पाया है। इसे स्वीकार करता हूँ यहाँ आने के पहले कभी मैंने तुम पर सदेह नहीं किया। किन्तु तुम यहाँ आकर देखता हूँ—अपने को सभाल नहीं सकी हो। बताओ यह सब कैसी बातें हैं!

"तुम अन्याय की बात कह रहे हो। मै तुम्हें छोड़ और किसी से भी प्रेम नहीं करती।"

"यदि वही प्रेम की विदाई का दृश्य खुद अपनी आखों से न देखता—

'कैसी विदाई?

'कैसी विदाई। क्या फिर से ब्योरेवार कहकर सुनाना होगा? तुम क्या उसे नहीं जानती। आखों से जल बहाते बहाते जिस समय तुम अपने प्रेमी को कह रही थी कि—तुम मुझसे प्रेम न करो, मुझे भूल जाओ—और फिर उसी के साथ प्रेम के गुलछर्रे उड़ाना। जिस समय उसने तुम्हारा हाथ अपनी छाती पर रखा था—क्या मैंने वह सब अपनी आँखों नहीं देखा है?"

हेमागिनी की साँस प्राय बद सी हो गयी थी। इससे वह कोई बात नहीं कह सकी।

सतीशचन्द्र बोले—"यह सब अपनी आँखों से देखकर भी मैने कभी तुमको कुछ नहीं कहा। कारण मैं तुम्हें सबसे अधिक अपने प्राण से बढ़कर प्यार करता हू। मैं पिछली सभी बातें प्राय भूल गया था। और तुम, हेमागिनी! हा, हतभागिनी तुम!—"

हेमागिनी कातर कठ से बोली—"ईश्वर की सौगध खाकर कहती हूँ कि मैं वह सब भूल गयी हूँ। ईश्वर की कृपा से मुझे इस समय दो एक लड़के लड़की हो गई हैं। और तुम्हारे भिन्न

मैं किसी को भी नहीं जानती। फिर व्यर्थ तुम इन सब पुरानी बातें उठाकर क्यों मुझे कष्ट दे रहे हो? क्या तुम्हारे मन में तिल भर भी दया नहीं है?"

"जिस दिन से हम लोग यहाँ आये हैं उस दिन से वह बराबर तुम्हारे पास आता है। दिन में एक बार भी नहीं सात आठ बार!"

"हाँ तुम्हारे लड़के को देखने के लिए। तो क्या तुम बिना चिकित्सा के लड़के को मार डालना चाहते हो? वे यहाँ सब दिन ही डाक्टर की तरह आते हैं। इसके सिवाय और किसी भाव से वे कभी नहीं आते। इसे तुमने स्वयं अपनी आँखों से क्या नहीं देखा है?"

"और आज? तुम दोनों लगभग आध कोश का रास्ता साथ साथ चलकर आये हो। तुम लोगों की यह चाल देखकर मैं प्रायः पागल सा हो गया हूँ—इसे क्या तुम नहीं समझती? उसका यह बड़ा सौभाग्य है कि उस समय उससे मेरी भेंट नहीं हुई—नहीं तो उस समय न मालूम क्या हो जाता कह नहीं सकता।"

"तुम ज्ञानी हो, विवेकी हो, पढ़े लिखे सब कुछ हो और तुम्हारा यह व्यवहार! छिः क्या तुम्हें ऐसी बातें अच्छी लगती हैं? उन्होंने कभी भी यहाँ आकर कोई असभ्यता या अपमान की बात नहीं कही है। वे भी ज्ञानी और पढ़े लिखे हैं। वे क्या नहीं जानते कि इस समय मैं दूसरे की स्त्री और लड़के-लड़की की माँ हो गई हूँ?"

पाठक पूछ सकते हैं कि इस समय सतीशचंद्र क्या पागल हो गये हैं? हां बिल्कुल पागल न होने पर भी बहुत से अंशों में पागल अवश्य हैं। वे एक दम रो पड़े। दोनों बाहुओं

से हेमागिनी को उन्होंने लपेट लिया और छाती से सटाकर व्याकुल हो बालक की भाँति रोने लगे।

हेमागिनी उनकी भाव-भंगी देखकर डर गयी उसने स्वामी का ऐसा भाव कभी नहीं देखा था। इससे पहले वह इतना रुष्ट हो गयी थी कि स्वामी के निकट से चले जाने का उपक्रम कर रही थी। किन्तु इस समय स्वामी का यह भाव देख वह उन्हें छोडकर जा नहीं सकी। वरन अब उन्हें शान्त करने की चेष्टा करने लगी। अब सान्त्वना देकर धीरज कौन बधावे। स्वामी को रोते देखा हेमागिनी खुद ही रोने लगी।

उस समय सतीशचन्द्र के मन में अपनी स्त्री के प्रति जो सदेह उत्पन्न हुआ था उसके लिए वह मन ही मन बड़े ही लज्जित हुए। हेमागिनी की बातों से उनके मन में विश्वास पैदा हुआ। वे शान्त हो गये। इसके बाद आँखों के आँसू पोछ एक लम्बी साँस खींच पलग के ऊपर लेट गये।

ग्यारहवाँ परिच्छेद



र्ष्या भीषण कालसर्पिणी होती है। किसी तरह एक बार हृदय के अन्तर में स्थान पाने से फिर वह वहा से दूर नहीं होती। भला किसकी ताकत है कि उसे वहा से दूर करे। इतना ही नहीं बिना अच्छी तरह जलाये वह कभी नहीं छोडती। थोड़ी सी सुविधा पाते ही वह सिर उठाकर डक मारने की चेष्टा करती है। सतीशचन्द्र के साथ भी ऐसा ही हुआ। वह ईर्ष्या को हृदय से दूर नहीं कर सके। तो भी बहुत कुछ उन्होंने दमन कर लिया था अवश्य किन्तु वह समय न

मिलने मात्र तक। बस सामान्य सुयोग्य पाते ही उसने अपना भीषण फण फैला ही तो दिया। अस्तु।

रमेन्द्र और अपनी स्त्री के सभी कामों में वे अब सदेह करने लगे। यह सत्य है कि उन्होंने अपनी स्त्री को उस सम्बन्ध में और कोई बात नहीं कही किन्तु रमेन्द्र उनकी स्त्री के साथ, यही क्यों उनके लड़के के सम्बन्ध में भी यदि कोई बात कहते तो वे मन ही मन उन्मत्त पागल-सरीखे हो जाते। अत धीरे धीरे उनके मन में इस बात का दृढ़ विश्वास होने लगा कि उनकी स्त्री उनके आंखों में धूल झोंक रमेन्द्र से मिला करती और आनन्द मनाती है। जिसने कभी चाण्डालिन ईर्ष्या की ज्वाला का सहन नहीं किया है। वह भला किस तरह सतीशचन्द्र के हृदय की नरक-यन्त्रणा का अनुभव कर सकता है। फलत सतीशचन्द्र न मालूम कैसे हो गये। पाठक! उनकी इस अवस्था को न तो पागलपन कह सकते हैं और न स्वाभाविक अवस्था।

इधर बच्चा दिन पर दिन अच्छा और भला चगा होने लगा। इसी कारण लाचार रमेन्द्र भी अब शायद ही कभी कभी सतीशचन्द्र के मकान आते। क्यों कि बच्चा प्राय अच्छा हो गया है। अब उसको रोज देखने की आवश्यकता नहीं थी।

अन्त में बच्चे के सम्पूर्ण रूप से, आरोग्यलाभ कर लेने पर रमेन्द्रनाथ एक दिन हँसते-हँसते बोले—"अब और मेरा यहा कोई काम नहीं है। अब मैं आप लोगों से विदा ग्रहण कर सकता हूँ।"

यह कहकर रमेन्द्र चले गये। सतीशचन्द्र कुछ अनमने से होकर बोले—"ओह इतने दिन के बाद विदा हुआ!"

हेमागिनी ने कहा—"हाँ मैंने उन्हें बिल बनाकर भेज देने को कह दिया है।"

उस दिन सोमवार था। मंगलवार को सतीशचन्द्र आहारादि के बाद बोले—"आज तक बच्चे के दुख के कारण यहाँ का कुछ भी सैर नहीं कर सका हूँ। आज इच्छा होती है कि एक बार जाकर इधर उधर का सैर कर आऊँ।"

बच्चे के कारण जितना भी क्यों न हो अपने खुद के लिए अवश्य वे अधिक देर तक घर के बाहर नहीं रह सकते थे। कारण उन्हें अपनी स्त्री के ऊपर भारी सन्देह था। आज रमेन्द्रनाथ विदा हो चले गये हैं। यह जान वे बहुत कुछ निश्चिन्त हो गये थे। उसी साहस से आहारादि के बाद घूमने फिरने के लिए घर से बाहर हुए।

वे क्यों अधिक देर घर को छोड़ बाहर नहीं रहते इस बात को हेमागिनी अच्छी तरह समझ गयी थी। किन्तु उसने अपने मन की बात मन ही में दबा रखी, कभी स्वामी के सामने प्रकट नहीं किया।

दूसरे दिन भी सतीशचन्द्र खा पी चुकने के बाद घर से बाहर हो गये।

आज तीसरे पहर को उनकी मौसी अपने पुत्र सुधांशु के साथ उनके मकान में आ उपस्थित हुई। वे आयेंगी यह बात पहले उन्होंने चिट्ठी में नहीं लिखी—न कुछ सूचना दी थी। इसी से लाचार सतीशचन्द्र को उनके आने की बात मालूम नहीं हुई।

सन्ध्या हो गयी तब भी सतीशचन्द्र नहीं लौटे। इसी समय हेमागिनी बाहर किसी के पैर का शब्द सुन चौंक उठी और मन ही मन बोली—"हाँ यही वह आ रहे हैं मौसी आई हैं यह सुन कर निश्चय ही वे चकित होंगे।"

किन्तु सतीशचन्द्र आये नहीं, उनके बदले में आये रमेन्द्रनाथ।

फिर रमेन्द्र! हेमागिनी का प्राण काँप उठा; ओह! सतीश चन्द्र की अनुपस्थिति में रमेन्द्र! वे तो कह गये थे कि अब नहीं आवेंगे। किन्तु फिर आ गये—क्यों? इस समय यदि सतीश लौट आकर उसे रमेन्द्र के साथ देख पाये तो भला मन में क्या सोचेंगे? हेमागिनी की आँखों में एक दम अंधेरा छा गया। वह सिर से पैर तक थरथर काँपने लगी और बड़ी ही मुश्किल से अपने को सभालकर चुपचाप खड़ी रही।

रमेन्द्रनाथ ने पूछा—"बच्चा कैसा है?"

हेमागिनी—"अच्छा है। मैंने उस दिन आपको कह दिया था कि अब आपके आने की आवश्यकता नहीं है।"

रमेन्द्र ने कहा—"हाँ अब उसके देखने की आवश्यकता नहीं है। इसी रास्ते से जा रहा था। इसी से मन में सोचा कि एक बार जाकर उसकी खबर लेता आऊँ। आज बड़ा कुहिरा हुआ है। यहाँ कभी कभी जाड़े में ऐसा ही कुहिरा होता है। रात के इस समय एक हाथ के दूर पर भी आदमी देखना कठिन हो जाता है।"

इतना कह वे एक कुर्सी खींचकर हेमागिनी के पास बैठ गये। इस समय उनके मन में पहले का कोई भी भाव नहीं था वे सतीशचन्द्र के मन का भाव भी न जानते थे इसी से उनके मन में कोई संदेह नहीं था। जिस प्रकार और लोगों के साथ वह व्यवहार करते उसी प्रकार हेमागिनी के साथ भी करते थे। वे उसे पूर्वपरिचिता मित्र की भाँति मन में समझते थे। किन्तु उनके इस प्रकार बैठ जाने से हेमागिनी की छाती और भी थरथर काँपने लगी। यदि इसी समय सतीशचन्द्र घर लौट आवें तो क्या कहेंगे। अपने मन में क्या सोचेंगे?

अत वह रुकते कंठ से बोली—"क्या एक बार बच्चे को देखेंगे नहीं ?"

हेमांगिनी की यह इच्छा थी कि जहाँ तक सम्भव हो रमेन्द्र शीघ्र बिदा होकर चले जायँ। किन्तु आज रमेन्द्रनाथ ने उतनी जल्दी बिदा होने की चेष्टा नहीं की। बोले— 'अच्छा पीछे देखेंगे।"

हेमांगिनी उठकर खड़ी हो गई थी। रमेन्द्रनाथ ने कहा—"बैठ जायँ। आपसे एक बात कहनी है।"

हेमांगिनी का सिर घूमने लगा। वह कोई भी बात मुँह से कह नहीं सकी। चुपचाप उनके सामने बैठ गयी। क्षण भर के लिए उसका सिर से पैर तक थर्रा उठा।

रमेन्द्रनाथ बोले—"एक गोपनीय विषय में मैं किसी की सलाह लेना चाहता हूँ। मुझे मालूम है कि आप बड़ी ही बुद्धिमती और ज्ञानवती हैं। मैं आपकी सलाह को सबों से अधिक मूल्यवान समझता हूँ। इसी कारण मैं अपने एक खास विषय में आपका क्या मत है, जानना चाहता हूँ।"

हेमांगिनी के कंठ से कोई बात बाहर नहीं निकली। वह निर्जीव पत्थर की मूर्ति की तरह चुपचाप बैठी रही।

बारहवां परिच्छेद

बात कहने की चेष्टा करने पर भी हेमांगिनी कोई बात नहीं कर सकी। उसका सारा शरीर इतना काँप रहा था कि मानो उसकी छाती भीतर ही भीतर फटी जा रही है। रमेन्द्रनाथ कौनसी बात कहना चाहते हैं। उसके साथ कौनसी उन्हें सलाह करनी है। इसी समय यदि उसके स्वामी आ जायँ।

यह कोई बात नहीं कर रही है यह देख रमेन्द्रनाथ बोले—"आपने तो प्रफुल्ल बाबू की लड़की को देखा है ?"

"हाँ देखा है, बड़ी अच्छी लड़की है।"

"बड़ी अच्छी लड़की है ?"

"हाँ, बड़ी शान्त प्रकृति की लड़की है देखने में सुन्दर और लिखना-पढ़ना भी खूब जानती है। क्यों, उसकी बात पूछ क्या रहे हैं आप ?"

"उसके विवाह के लिए।"

"क्या आप उसका सम्बन्ध कहीं ठीक कर रहे हैं ?

"सबन्ध नहीं ठीक कर रहा हूँ वरन् स्वयं ही उससे ब्याह करना मैंने स्थिर कर लिया है।"

हेमांगिनी ने चकित दृष्टि से उनके मुँह की ओर ताका। कुछ देर के बाद बोली—' सुशीला बड़ी अच्छी लड़की है।'

रमेन्द्रनाथ ने मृदु हंसी के साथ कहा—"तब विवाह उसके साथ किया जाय ? प्रफुल्ल बाबू ने स्वयं यह प्रस्ताव मुझसे किया है।"

हेमांगिनी ने कहा—"मैं यह सुनकर यथार्थ ही में बड़ी सुखी हुई।"

यह बात हेमांगिनी ने झूठ नहीं कहा। क्योंकि ब्याहकर रमेन्द्रनाथ के सुखी होने से हेमांगिनी सत्य ही बड़ी सुखी होगी।

ओह इसी समय जंगले में से अन्धकार में किसी का मुँह बाहर निकला। उस मुँह का भाव बड़ा ही भयंकर था। उसकी जलती हुई तेज आंखों से आग की चिनगारी निकल रही थी। सिर के बाल काकुल इत्यादि भी बड़ी ही लापरवाई के साथ इधर-उधर बिखरे हुए थे—ओठ दोनों बड़े ही बिचके हुए थे। ओह कैसा भयंकर चेहरा है! यह कौन! मनुष्य का मुँह है या प्रेत का

हेमांगिनी या रमेन्द्रनाथ दोनों में से किसी ने भी यह विभी षिका नहीं देखी। तो भी इस मूर्ति के कण्ठ से जो अर्द्धस्फुट शब्द उस समय बाहर निकला उसे दोनों ही ने सुनकर चमत्कृत हो जंगले की ओर ताका। किन्तु कुछ भी वहाँ दिखाई नहीं पड़ा।

हेमांगिनी ने पूछा—"यह किसका शब्द है!"

रमेन्द्रनाथ बोले—"अधकार और कुहेसा इतने जोर का है कि मालूम होता है कोई रास्ते में चलते चलते गिर पड़ा है या ठोकर खा गया है। चलिए बच्चे को एक बार देखकर चले जाय।"

दोनों ने जाकर बच्चे का देखा। इसके बाद रमेन्द्रनाथ उस सूचीभेद्य अधकार और कुहिरा को देखकर हँसे और बोले—"आशा है रास्ते में किसी प्रकार की आपद विपद नहीं घटेगी। कुशल-पूर्वक मकान पहुँच जा सकूँगा।"

रमेन्द्रनाथ चले गये किन्तु तब भी सतीश घर नहीं लौटे।

ऐसे हाथ को हाथ न सुझाई पडनेवाले अधकारमें उनको रास्ते में किसी आपद्-विपद् का सामना तो नहीं करना पडा? जितना ही सतीशचद्र के लौट आने में देरी होते जाने लगी उतना ही हेमांगिनी और भी अधिक अधीर और उत्कठित हो उठने लगी।

धीरे धीरे इसी तरह करते दो घटे व्यतीत हो गये। अब वह निश्चिन्त होकर रह नहीं सकी। नौकरों को लाठी लेकर बाबू की खोज में जाने के लिए उसने आज्ञा दी। किन्तु इसी समय मकान के पिछलेवाले दरवाजे में से जल्दी जल्दी आकर मकान के भीतर सतीशचन्द्र ने प्रवेश किया। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा और अधकार में अपने खास सोनेवाले कमरे में जाकर भीतर से द्वार बद कर लिया।

"हाँ, हम लोगों के जान पहचानी में से ही कोई है ।"

"उसका नाम ?"

"डाक्टर रमेन्द्रनाथ! उनके मकान के दरवाजे के सामने ही कोई उनकी हत्या कर चला गया है ।"

इस कठिन निदारुण भयंकर समाचार से हेमांगिनी के मन की जो अवस्था हुई वह वर्णनातीत है। उसका सुन्दर मुखमण्डल एकदम बेरङ्गत होकर सुफेद हो गया। साँस भी भीतर से बन्द होकर गले में अटक आई। ओह कैसी भयानक बात है! अभी आज सन्ध्या को ही रमेन्द्र उसके पास आये थे। इन्हीं कुछ एक दो घण्टों के पहले वे अपने ब्याह की बात कहते थे। और वही रमेन्द्र दुनिया से उठ गये! क्या उनका अस्तित्व इतनी जल्दी संसार से लुप्त हो गया? क्या इस तरह अनायास ही उनकी हत्या हो गई ?"

क्षणभर में ही हेमांगिनी के मस्तक में हजारों चिन्तायें, हजारों विभीषिकायें हवा के झोंके से तरग-भग उत्ताल की भाँति उद्वेलित हो उठी। अपनी चिन्ता-सागर की तरङ्ग लहरियों को सँभालकर स्थिर करने की शक्ति भी बिलकुल उसमें नहीं रही।

मौसी बोलीं—"ये डाक्टर कौन हैं ?"

हेमांगिनी में इस समय बात कहने की ताकत नहीं थी। सतीशचन्द्र ने कहा—"वे यहाँ के एक अच्छे डाक्टर थे। बच्चे की दवा उन्हीं ने की थी। मैं जानता था कि वे अब मेरे घर में नहीं आवेंगे। मालूम होता है यहाँ से होकर अपने घर लौटते समय रास्ते में किसी ने उनका खून कर डाला है। बड़े अच्छे आदमी थे।"

मौसी बड़े ही आश्चर्य में होकर बोली—"ऐसे अच्छे आदमी की हत्या इस प्रकार निठुरता के साथ कौन करेगा ?"

संक्षेप में सतीशचन्द्र ने उत्तर दिया—"भला इसको मैं कैसे कह सकता हूँ—कौन करेगा। मौसी।"

मौसी ने फिर पूछा—"तुमने किस के मुँह से यह बात सुनी?"

सतीशचन्द्र ने कहा—"ऐसी बातें बहुत जल्द चारों तरफ फैल जाती हैं। जिस समय मैं मकान आ रहा था उसी समय देखा, रास्ते में दो आदमी बडे ही घबड़ाये हुए न मालूम क्या आपस में कहा सुनी करते करते दौड़े जा रहे थे। उन्हीं लोगो से पूछने पर मालूम हुआ कि वे डाक्टर थे।"

मौसी ने कहा—"किन्तु हम लोगों के खानसामा ने सुना है कि एक मारवाडी का खून हुआ है! सभव है कि डाक्टर के खून की बात झूठ हो।"

इस पर सतीशचन्द्र सक्षेप में 'वही होगा" कहकर आराम कुर्सी पर सो गये। मौसी के साथ कौन आया है—इसको भी पूछना वे भूल गये।

धीरे २ सब दास दासीगण खा पीकर सो गए। सतीशचन्द्र को चेयर पर ही सोते देख हेमागिनी उन्हे अकेले वहीं छोड अपने कमरे में सोने जा नहीं सकी। अत वह उसी घर में बैठ मौसी के साथ बातचीत करने लगी।

रात को लगभग प्राय बारह के अमल में न मालूम किसने दरवाजे पर जोर से धक्का दिया। इस आवाज से दोनों ही चौक उठीं। इतनी रात को कौन है? विशेषत वे लोग आज हत्याकाण्ड की बात सुन चुके थे। अत सामान्य कारण से भी डर से चौंक उठते थे।

सुधांशु माँ को सतीशचन्द्र के घर पहुँचाकर उसी समय अपने काका से भेंट करने के लिए गिरिधी चला गया था।

काका के यहाँ उसके दो तीन दिन रहने की बात थी। सुतरां वह तो अभी लौट नहीं सकता। तब इतनी रात को दरवाज़े पर कौन इतने ज़ोर से धक्का मार रहा है? उस शब्द से सतीशचन्द्र भी नींद से जागकर उठ बैठे।

चौदहवाँ परिच्छेद

बाहर के दरवाजे पर बारम्बार धक्के पर धक्के की भयानक आवाज होने से नौकर चाकरों की भी नींद टूट गयी। तब एक ने जाकर दरवाजा खोल दिया। उसी समय सुधांशु भीतर आ उपस्थित हुआ। उसको देखते ही उसकी माँ बोल उठीं—"अरे तू है? इतनी जल्दी लौट आया क्यों?"

सुधांशु बोला—"काका वहाँ गिरिधी में नहीं हैं। शहर चले गये हैं। सात आठ दिन तक नहीं लौटेंगे। इसी से मैं दूसरी गाड़ी से लौट आया। भला वहाँ किसके साथ रहता?"

अब सतीशचन्द्र को मालूम हुआ कि वह अकेली नहीं आयी हैं। आना भी असम्भव है। निश्चय ही उनके साथ सुधांशु आया है। किन्तु उनका मन दूसरे विषय की ओर इतना लगा हुआ था कि उन्हें इन सब बातों के विचारने का किंचित् मात्र भी समय नहीं मिला। इस समय अब एक दो बातें उससे पूछ लेना नितान्त उचित है, समझ बोले—"तू ऐसे अन्धकार में इतनी रात गये बिना रास्ता भूले चला कैसे आया?"

सुधांशु—गिरिधी से जिस समय चला उस समय यहाँ ऐसा कुहिरा और अन्धकार का प्रबल राज्य होगा—इस बात को

भला मैं कैसे जानता ? तब भी यहाँ स्टेशन पर उतरकर उतना अधिक कष्ट उठाना नहीं पडा ।"

इस पर सतीशचन्द्र ने पूछा—"क्यों कैसे ?"

"ऐसे कि वहाँ आदमी लोग हाथ में लाठी और मशाल लिये रास्ते में इधर-उधर दौड़ा-दौडी कर रहे थे। अत उन लोगों की रोशनी से मुझे बहुत कुछ सुविधा हो गयी ।"

मौसी ने कहा—"दुर कहीं का ! तू इतनी रात गये इस तरह दरवाजा पीट रहा था कि सुनकर हम लोगों के तो मारे डर के प्राण सूख गये ।"

"क्यों इतना भय किस लिये ?"

"खून हो गया है ।"

"कहाँ ?"

"यहीं मधुपुर में और कहाँ ।"

"ओह ! इसी से मालूम हुआ लोग लाठी और मशाल हाथ में लिये चारों तरफ दौड रहे थे। ठीक है, मैंने तो यह बात ध्यान में भी नहीं लाई थी, हाँ सतीशदादा ! किसका खून हुआ है ?"

सतीशचन्द्र बोले—"एक डाक्टर का ।"

आँखें फाड़कर आश्चर्य से सुधांशु बोला—"ओह ! कैसी भयानक बात है ।"

मौसी—"वे बच्चे को बराबर देखने आते थे ! आज भी सन्ध्या के समय यहाँ आये हुए थे ।"

सुधांशु—"क्या उन्हीं का खून हुआ है ?"

मौसी—"हाँ, आज सन्ध्या के समय वे यहाँ आये थे। हेम ! रमेन्द्रबाबू यहाँ से कब चले गये थे ?"

सुधांशु—"क्या कहा ? रमेन्द्र बाबू ! डाक्टर रमेन्द्र बाबू ! हम लोगों के रमेन्द्र बाबू तो नहीं !"

इतना कह कर सुधांशु ने हेमागिनी के मुँह की ओर ताका।

मौसी बोलीं—"हम लोगों के रमेन्द्रबाबू यह क्या ?"

सुधांशु—"हेम बहन को मालूम है। कलकत्ते में हेम बहन के साथ उनका परिचय था। मुझे वह बड़ा ही मानते थे। वही तो नहीं ?"

सतीशचन्द्र गम्भीर भाव से बोले—"हाँ वही रमेन्द्र बाबू।

सुधांशु—वही रमेन्द्र बाबू ! जो कलकत्ते में मुझे इतना मानते और प्यार करते थे ? कैसा भयानक है।"

"हाँ वे ही ! यहा डाक्टरी करते थे।" कह कर सतीशचन्द्र ने दूसरी ओर मुँह फेर लिया।

सुधांशु का मुँह एक दम से खिन्न और उदास हो गया। वह यथार्थ ही में किसी एक समय रमेन्द्रनाथ को बड़ा ही प्यार करता था। वह बोला— 'क्यों हेम बहिन !' रमेन्द्र बाबू यहा है, तुमने यह बात मुझे क्यो नहीं लिखी ? यदि मुझे मालूम हो जाता तो उनका खून होने के पहले ही मैं यहां आ पहुँचता।"

मौसी बोलीं—"उनका इस तरह खून होगा इसको भला पहले से कौन जानता था ?"

सुधांशु—"वे बड़े अच्छे आदमी थे, हमें तो बड़ा मानते थे।"

मौसी—"क्या सचमुच म बड़े अच्छे आदमी थे ?"

सुधांशु—"विश्वास न हो तो हेम बहिन से पूछ लो। दादा बाबू के सङ्ग यदि ब्याह न होता तो बहिन का विवाह रमेन्द्र बाबू के सग अवश्य ही होता। मैं उस समय छोटा बच्चा था किन्तु सब समझता बूझता था। देखो बड़ी बहिन, हमारी बातो से नाराज न होना।"

बुढिया के मन में पुत्र के मुँह से यह बात सुनते ही पहले की बीती बातें स्मरण हो आयीं। वह रमेन्द्रनाथ और हेमा-

गिनी के प्रेम की बात सुन चुकी थीं। उन्होंने सुना था कि रमेन्द्र हेमागिनी को प्यार करते और हेमागिनी भी उन्हें हृदय से चाहती केवल गरीब समझकर हेमागिनी ने उनसे विवाह नहीं किया। तब वही रमेन्द्र और यहाँ के यह रमेन्द्र दोनो क्या एक ही मनुष्य है? अत बुढिया मौसी के मन में जो बातें उत्पन्न हो आयीं उनके स्मरणमात्र से उनका हृदय भय से थर्रा उठा। रात अधिक बीत चुकी थी। अतः सबके सब सोनेको चले गये।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद



बिस्तरे पर सोते ही सुधाशु नींद में बेखबर हो गया। किन्तु उसकी माँ को उतनी जल्दी नींद नहीं आयी। घर की एक पुरानी दाई बैठी पान लगा रही थी। उसने मौसीको देख कर कहा—"जब से यह बात सुनी है तब से मारे डर के छाती धकधक कर रही है। आँखों में नींद का नाम नहीं है।"

मौसी ने कहा—"यदि और कोई दूसरा आदमी होता तो इतनी डरने की बात नहीं थी। उनके यहाँ से चले जाने के बाद ही न यह भयानक काण्ड हो गया।"

"किसके चले जाने के बाद?"

"डाक्टर बाबू के और किसके।"

"डाक्टर बाबू! वह कौन है?"

"हाँ, वही तो। तुमने क्या नहीं सुना? केवल मारधाड़ की बात ही मात्र सुनी थी? नहीं वह बात नहीं है। डाक्टर रमेन्द्रनाथ ही मारे गये हैं असल में।"

"डाक्टर बाबू मारे गये ? किसने कहा ?"

"सतीश ने। मकान लौटते समय रास्ते में किसी के मुंह से यह बात सुन आये हैं।"

"बाबू ने यह बात सुनी—किससे यह बात सुनी ? नहीं नहीं खानसामा ठीक ठीक सुन आया है—एक मारवाड़ी ही मारा गया है। यदि ऐसा न होता तो व्यर्थ लोग मारवाडी का नाम क्यों लेते ?"

"खानसामा ने सुनने में भूल की है। तुम्हारे बाबू जी जो सुन आये हैं वही ठीक है।"

"नहीं उनको ही सुनने में भूल हुई है। जिस आदमी ने मारवाडी को रास्ते में मरे हुए पड़ा देखा था, खुद उसी के मुंह से खानसामा यह बात सुन आया है। तुम लोगों के सामने साहस कर वह सब बातें कह नहीं सका है। मुझसे उसने सब बात कह दी हैं। भला डाक्टर बाबू क्यों मारे जायँगे ? अहा ! वे मनुष्य नहीं —देवता हैं।"

"हाँ सुधाशु भी यही बात कहता था।"

"हाँ क्यों नहीं सभी रमेन्द्र बाबू को प्यार करते थे। केवल "

'केवल क्या ?"

'केवल हमारे बाबू साहब ही उनको फूटी आँख से भी देख नहीं सकते थे। बहूजी के लिए ही पहले उन लोगों में भारी झगडा था। बेटी हेम की मैं बहुत पुरानी दायी हूँ— सब बातें जानती हूँ। व्याह के बाद आज तक कोई ऐसी बात देखने सुनने नहीं आई। किन्तु यहां आने के बाद ही बाबूजी का मिजाज मानों कुछ खराब हो गया। वे हर बातों में शक्की हो गये हैं। इसी से समझती हूँ बाबू उन्हीं पुरानी बातों का खयाल कर एक दम ऐसे हो गये है।"

"बिचारी हेम वैसी लड़की नहीं है।"

"नहीं नहीं। वह बात नहीं कहती, पहले जो कुछ हो किन्तु इस समय बहिन बाबूजी को हृदय से प्यार करती है।"

"इससे पहले भी कभी रमेन्द्र के साथ हेम की मुलाकात हुई थी?"

"नहीं कभी नहीं हुई है। जा हो माँजी! हमें तो यह स्थान अच्छा नहीं लगता। यहाँ से चले जा सकने ही में कुशल है।"

उसी रात में हेमागिनी ने सोते समय स्वामी से कहा—"अब उस बात के कहने में कोई फल नहीं कि कहाँ ब्याह होगा! ओ हकैसा भयानक व्यापार है।"

सतीशचन्द्र केवल इतना ही मात्र बोले—"भयानक! निश्चय ही भयानक!"

"उनका ब्याह हो जाता। प्रफुल्ल कुमार बाबू की कन्या के साथ उनके ब्याह की बात हो रही थी।"

"तुम्हे छोड़कर तुम्हें भुलाकर!" यह बात कहने की सतीशचन्द्र को इस समय कोई आवश्यकता नहीं थी।

अन्य समय यदि सतीशचन्द्र यह बात कहते तो हेमागिनी क्या करती—नहीं-कहा जा सकता। किन्तु आज के इस लोम हर्षण व्यापार से हेमागिनी का हृदय एकबारगी ही टूट गया था। वह बड़े ही कातर कंठ से बोली—"क्यों तुम व्यर्थ यह सब बात कहते हो! तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ—यह सब बातें भूल जाओ। मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कहती हूँ कि तुम्हारे साथ मेरा ब्याह होने के बाद से मैंने अपने हृदय में कभी भूलकर भी किसी और को स्थान नहीं दिया है। क्यों व्यर्थ यह सब बात कहकर मेरे मन को कष्ट पहुँचाते हो।"

शतीशचन्द्र कुछ नहीं बोले। तब हेम पुन बोली—"आज वे यहाँ अपने विवाह की बात कहने के लिए ही आये हुए थे"।

इस बार भी सतीशचन्द्र के मुँह से कोई बात नहीं निकली चुपचाप पलंग पर सो गये। किन्तु उस रात को वे सो सके या नहीं—यह बात उनको छोड़ और किसी ने जाना नहीं।"



सवेरे सतीशचन्द्र सुधांशु को साथ लेकर बाजार की ओर चले गये। उनके चले जाने के थोड़ी देर बाद ही वहाँ प्रफुल्ल कुमार बाबू आ उपस्थित हुए। सतीशचन्द्र के साथ उनकी विशेष मित्रता हो गयी थी। "आप" न कहकर दोनों ही एक दूसरे को "तुम" कहकर बुलाते थे। इसके अतिरिक्त सतीशचन्द्र के घर उस प्रकार के पर्दे का व्यवहार भी नहीं था। विशेषत मधुपुर की स्त्रियों में पर्दे का रिवाज बिल्कुल ही नहीं के बराबर था। इन्हीं सब कारणों से प्रफुल्ल बाबू हेमांगिनी के साथ बेखटके बातचीत किया करते थे। यहाँ आकर मौसी भी बहुत कुछ स्वाधीन हो गयी थीं।

प्रफुल्लकुमार आते ही बोले—"ओह! कैसी भयंकर बात है? आप लोगों ने सुन लिया है न?"

हेमांगिनी बड़े ही दुखित स्वर में बोली—"हां वे एकदम से मर गये हैं या भारी चोट खाकर घायल मात्र हो गये हैं?"

प्रफुल्ल कुमार बड़े ही उदास मुँह से बोले—"बदमाश लोग क्या कुछ बाकी रख गये हैं?"

मौसी मां नजदीक ही बैठी हुई थीं बोलीं—"तो फिर ठीक रमेन्द्र बाबू ही मार डाले गये हैं। सतीश भी तो यही बात कहता था। किन्तु खानसामा कहता है—न मालूम कौन एक मारवाड़ी मारा गया है।

प्रफुल्ल—उसकी भी बात ठीक है । एक मारवाड़ी भी कल्ह रात को मारा गया है। ओह एक बारगी होदो दो खून ! मधुपुर में ऐसा भयानक काण्ड और कभी भी नहीं हुआ था। मारवाड़ी राम बहुत से रुपये पैसे साथ लेकर मधुपुर आ रहे थे कि सहसा किसी ने हमलाकर उन्हें मार डाला और सब रुपया पैसा लेकर चम्पत हो गया। डाक्टर का विषय अलग है–उससे उनकी हत्या का कुछ भी लगाव नहीं है। न मालूम किसने डाक्टर को उनके मकान के सदर दरवाजे के पास लाठी मारकर हत्या कर डाली है।

मौसी—हाँ, सतीश भी यही कहता था।

हेमांगिनी मृदु स्वर में बोली—"मालूम होता है—उनके यहाँ से चले जाने के बाद ही यह काण्ड हुआ था।

प्रफुल्ल कुमारने पूछा–"क्या यहाँ कल रातको डाक्टर आयेथे?

हेमा०—हाँ। बच्चे को देखने आये थे। जान पड़ता है—रात के साढे सात आठ के समय वे यहा से चले गये।

प्रफुल्ल—निश्चय ही उसके बहुत देर के बाद वे मार डाले गये है। कब यह सब काण्ड हुआ है—ठीक नहीं कहा जा सकता। बहुत रात बीत जाने पर भी जब डाक्टर घर नहीं लौटे तब उनका नौकर उन्हें ढूंढने बाहर निकला। उन्हें कहीं न पाकर जब वह घर की ओर लौटा आ रहा था उसी समय सदर दरवाजे के पास ही एक लाश पड़ी हुई उसने देखा।"

"इसके कुछ पहले सतीश को यही खबर मिली थी।

प्रफुल्ल—डाक्टर के खून होने के पहले वे किस तरह खून की बात जान सकेंगे?"

"जब खानसामा ने जाकर मारवाड़ी के खून की बात कही तब उसने कहा था कि मारवाड़ी का खून नहीं हुआ

*कृपया इसके पहलेवाले ६५ ८० को ६९ ६४ पृष्ठ पढ़ें।

वल्कि डाक्टर का खून हुआ है। शायद कोई किसी से य
वात कहता होगा—वही वह सुनकर आया था।"

प्रफुल्ल—"रात के एक वजे पहले उनका नौकर भी जानत
नहीं था कि डाक्टर का खून हुआ है। कोई भी इस वात प
विश्वास नहीं कर सका कि डाक्टर का खून हुआ है।"

मौसी ने कहा—"सतीश ने निश्चय ही किसी से य
वात सुनी थी। नही तो वह हम लोगों से यह वात कैसे कहता
कहा, किस प्रकार डाक्टर वावू मारे गये हैं, यहा तक उसन
वेखटक कह दिया था।"

इस पर प्रफुल्ल वावू चिन्ता करते हुए वोले—"वड़े ही
आश्चर्य का विषय है, इसमें सदेह नही। कह नहीं सकता कि
सतीश वावू ने यह वात किसके मु ह से सुनी थी।"

मौसी—"रास्ते में कोई दौडा जा रहा था, उसी के मुंह से
सुनी थी। उस समय रात को कितना वजा होगा? ठीक रात
के नौ वजे सतीश घर लौट आया था।"

प्रफुल्लकुमार एक दम से वोल उठे—"ओह कैसी भयानक
वात है? कही वही लोग तो नही डाक्टर की हत्या कर भागे
जा रहे थे। डाक्टर की जो हत्या हुई थी उस वात के जानने
का उस समय और किसी को कोई उपाय नहीं था। भला
कोई जान ही कैसे सकता है। खैर हम लोगों को अव उस
आदमी को ढू ढ़ निकालना ही होगा। जितने दिन तक रमेन्द्र
का खुनी सजा न पाये उतने दिन तक हम लोग कोई भी
निश्चिन्त होकर रह नही सकेंगे। सतीश वावू अवश्य ही उन
लोगों को पहचान सकेंगे।"

"वे लोग शायद किसी वाग के माली हैं।"

इसी समय सतीशचंन्द्र और सुधाशु घर लौट आये।

सोलहवां परिच्छेद

सतीशचन्द्र को देखते ही प्रफुल्लकुमार ने पूछा—कल रात को डाक्टर के खून की बात तुमने किसके मुंह से सुनी थी?"

सतीश—"वही सेठ के बाग के माली निरंजन के मुंह से सुनी थी।"

"निरंजन के मुंह से? बस इस खूनी को पकड़ना ही होगा?"

सतीशचन्द्र के कोई बात कहने के पहले ही प्रफुल्लकुमार निरंजन माली की खोज में दौड़ पड़े।

सेठ का बाग वहां से अधिक दूर नहीं था आध घंटे में ही लौट आकर वे बोले—"वे लोग तो इस बात को इनकार करते हैं। कहते हैं, कि उन लोगों ने डाक्टर के खून की बात कभी कहा ही नहीं। डाक्टर मारे गये हैं यह बात कल रात भर वे लोग नहीं जानते थे।"

सतीशचन्द्र बोले—"न मालूम क्यों वे लोग झूठ कहते हैं नहीं जानता। मैं रात को घर लौटा आ रहा था। उन लोगों को दौड़ते जाते देख मैंने पूछा क्या हुआ। वे बोले, "भयानक काण्ड हो गया है डाक्टर बाबू मारे गये हैं। किसी ने उनकी हत्या की है यदि वे लोग मुझसे न कहते तो मैं यह बात फिर और कहाँ से सुनता। उस समय मुझसे और किसी से भी भेंट नहीं हुई। सिवा उन लोगों के।"

प्रफुल्लकुमार सन्देह के भाव से बोले—"तब वे लोग इस समय यह बात अस्वीकार क्यों करते हैं।। निरंजन बहुत दिन से सेठ के बाग में माली का काम करता है। उसे सब कोई अच्छा आदमी समझते हैं। यदि ऐसा न होता तो मैं समझता

कि वे लोग अवश्य इस खून में सम्मिलित हैं। मैं उसको तुम्हारे सामने बुला लाना चाहता हूँ। देखूँ तब वह उस समय कैसे तुम्हारे आगे झूठ बोलने का साहस करता है।"

"यों ही अनायास ही।'

प्रफुल्लकुमार फिर दौड़ पड़े। वे रमेन्द्रनाथ को विशेष प्यार करते थे। उनके साथ अपनी कन्या का विवाह करने का भी उन्होंने पक्का इरादा कर लिया था। अतः उनकी इस प्रकार एकाएक मृत्यु से उनके हृदय को बड़ी भारी चोट लग गयी थी। ऐसी अवस्था में वे रमेन्द्रनाथ के खूनी को गिरफ्तार करने के लिए यदि व्याकुल हो उठे तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

कुछ देर के बाद ही वे बूढ़े निरंजन माली को सतीशचन्द्र के सामने धर लाये। माली डरता २ बोला—"बाबू! हजूर! आपने न मालूम क्या कह दिया उसी से यह बाबू हमें यहां पकड़ लाये हैं।"

सतीशचन्द्र बोले—"कल रात को तुम और एक आदमी के साथ दौड़े जा रहे थे। वहीं न तुम लोग मुझसे मिले थे। जो।

माली बोला—"हाँ हजूर! आपके पूछने पर मैंने कहा—एक आदमी मारा गया है।"

सतीशचन्द्र प्रफुल्लकुमार के मुंह की ओर ताक कर बोले—"सुना न आपने?" इसके बाद निरंजन की तरफ पलटकर बोले—"जो बात तुमने उस समय मुझसे कही थी वही बात इस समय प्रफुल्लकुमार बाबू के सामने कहो।"

निरंजन—"हजूर, मैंने कहा था, एक आदमी मारा गया है।"

"हाँ ठीक वही।"

प्रफुल्ल—"तुमने क्या यह कहा था कि डाक्टर बाबू मारे गये हैं?"

"नहीं हुजूर ! मैं यह अवश्य कहने जा रहा था कि एक मारवाड़ी मारा गया है किन्तु सरकार उस बात को बिना सुने ही चले गये थे। रात को हम लोगों ने डाक्टर बाबू के मारे जाने की बात सुनी ही नहीं। आज सवेरे सुना कि दो खून हुआ है !"

सतीशचन्द्र विस्मित होकर बोल उठे—"ऍ ! दो खून ! डबल खून !! एक साथ यह दूसरा कांड !"

प्रफुल्ल—"एक मारवाड़ी दूकानदार भी कल रात को मारा गया है। मालूम होता है माली तुमसे उसी के खून की बात कहने जा रहा था। कारण डाक्टर मारे गये हैं, यह बात उस समय कोई नहीं जानता था। रात को एक के अमल में उनका नौकर यह बात जान सका है। इसी से सोच रहा हूँ कि तुमने उस समय और किससे यह बात सुनी कि डाक्टर मारे गये हैं।"

सतीशचन्द्र कुछ नहीं बोले। कहने के लिए ढूढ़ने पर भी उन्हें कोई बात नहीं मिली। कुछ देर तक वे चुप लगाये खड़े रहे। उनकी यह मौनता बड़ी ही भयंकर और सन्देहजनक थी। इस बार प्रफुल्लकुमार ने गंभीर स्वर में पूछा—"सतीश ! तुमने यह बात कल रात को किसके मुँह से सुनी थी ?"

इस बार भी सतीशचन्द्र चुप हैं। जोर २ उनकी साँसें चलने लगीं। बड़े ही कष्ट से अपने को सँभाल कर वे दूसरी ओर चुपचाप ताकते रहे। सुधांशु मौसी और दूसरे सब लोग विस्फारित नेत्रों से सतीशचन्द्र की ओर टकटकी लगाये ताकते रहे।

सतीशचन्द्र समझ गये कि जो बात वे पहले मुँह से कह चुके हैं उसे अच्छी तरह ठीक बचाये रखना बड़ा ही कठिन है। बात को बदल डालने का भी कोई उपाय नहीं है। मामला धीरे २ संगीन हो रहा है। बहुत देर तक चुप रहकर अन्त को सतीशचन्द्र ने बात करना शुरू किया—बोले—"मैं ने इसी माली

के मुह से ही सुना था। इस समय क्यों यह उस बात को इनकार कर रहा है, नहीं कह सकता।"

निरंजन बोला—"हजूर! सरासर झूठ कह रहे हैं। मैंने डाक्टर बाबू की बात कल रात को नहीं सुनी। भला इसको मैं आपसे कैसे कह कर बताऊँ। हजूर कल रात को सिर्फ खून की बात सुनकर ही चले गये थे। मैं अब इस समय जा रहा हूँ हुजूर हुकुम पाते ही फिर सेवा में हाजिर हो जाऊँगा।"

सत्रहवां परिच्छेद



धुपुर कोई बड़ा शहर नहीं है। ऐसे छोटे गाव में एक साथ दो २ खून के हो जाने से सारा मधुपुर में जो एक हलचल सी मच गयी है, इसमें आश्चर्य ही क्या? विशेषतः जो मारे गये हैं वे दोनों ही बड़े भारी और प्रसिद्ध मनुष्य हैं। मधुपुर के बूढे बच्चें नरनारी सभी उन लोगों को पहचानते थे। मारवाड़ी एक बड़ा भारी दूकानदार और रमेन्द्रनाथ सब लोगों के प्रियपात्र थे॥ अतः उनके इस लोमहर्षण हत्याकाण्ड से सभों को विशेष दुःख हुआ, और शहर भर में एक बड़ी भारी हलचल सी मच गयी। रात से इस बात को छोड़ और कोई भी बात किसी के मुह में नहीं है। बस सबों के मुह में इसी घटना की चर्चा है।

पहले सबों ने यही सोचा था कि जिन आततायियों ने मारवाडी की हत्या की है उन्हीं लोगों ने डाक्टर बाबू का भी खून कर डाला है। किन्तु मारवाड़ी के रुपये पैसे सब चोरी चले गये थे। अतः यदि वे ही रमेन्द्र की हत्या करते तो उसके पास जो

कुछ था सब ले लिवा कर चले जाते, यों ही छोडकर कभी न जाते। किन्तु रमेन्द्र बाबू की सोने की घडी-चेन उनके हाथ की हीरे की अगूठी और उनके पाकेट के रुपये पैसे आदि सब कुछ ज्यों के त्यों पडे हुए थे। एक भी चोरी नहीं गया था। इससे स्पष्ट मालूम होता था कि पैसे की लालच से किसी ने उनकी हत्या नहीं की है। क्योंकि यदि ऐसा होता तो वे लाग उनकी अगूठी घडी आदि कभी छोड न जाते। इस लिए सबों ने यही खयाल किया कि जिन लोगों ने मारवाड़ी की हत्या की थी उन लोगों ने रमेन्द्र बाबू का खून नहीं किया। रमेन्द्रनाथ का खूनी अवश्य कोई दूसरा है। अब यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि वह कौन शख्स है? उसने रमेन्द्रनाथ का क्यों खून किया? मधुपुर में तो उनका कोई शत्रु नहीं था। तब फिर क्या किसी दूसरी जगह से कोई आकर उनकी हत्या कर भाग गया। बस मधुपुर के निवासी लोग इसी बात को लेकर हाट-घाट गली-कुचा घर द्वार म बैठ उसकी आलोचना कर रहे थे।

रमेन्द्रनाथ की मृतदेह देखकर जाना गया किसी ने पीछे से आकर उनके सिर पर लट्ठ जमाया था। उसी चोट से ही वे लड़खड़ा कर रास्ते के बगल में गिरपड़े थे। खूब सम्भव है उनके सिर पर जो चोट लगी थी उसी से उनकी मृत्यु हुई है। वे मर गये या जीवित हैं—इस बात को उनके हत्याकारी ने पीछे लौटकर फिर देखा नहीं, उस समय फोरन वहाँ से भागकर नौ-दो ग्यारह हो गया।

उस जगह की मिट्टी पत्थर की तरह कड़ी थी। इसी से उसके आसपास में किसी के पेर का दाग भी नहीं पड़ा था। कितने आदमी उस समय वहाँ मोजूद थे—इसके भी जानने का उपाय नहीं था।

रमेन्द्रनाथ का नौकर बोला—"वह बाबू के आसरे बैठा जाग रहा था। रात के करीब दस बजे के अमल में बाहर उसे एक शब्द सुनाई पड़ा था। किन्तु अन्धकार में शायद कोई चलते चलते ठोकर खाकर गिर पड़ा है सोच फिर उसने उधर उतना ध्यान नहीं दिया। उसके बाद बहुत से लोग मारवाड़ी सज्जन को देखने के लिए बाबू को बुलाने आये थे। उस समय भी बाबू घर लौटे नहीं थे। रात का बारह बजा। तब भी बाबू को लौटते न देख हाथ में लालटेन लेकर बाबू को ढूंढने बाहर निकला था। बाबू को कहीं न देख वह घर लौटा आ रहा था। मकान के पास आते ही लालटेन की रोशनी में उसने देखा, मानो कोई रास्ते के किनारे गिरा पड़ा है। रोशनी रखकर जब उसने अच्छी तरह देखा, तो जाना कि उसके मालिक हैं। तब उस समय भयभीत होकर उसने सबको इसकी खबर दी थी।

कहना व्यर्थ होगा कि प्रफुल्ल कुमार ने निरजन माली और सतीशचन्द्र के मुह से जो कुछ सुना था सबों से कह दिया। निरजन को सब लोग पहचानते थे। उस पर सदेह करने का कोई कारण भी नहीं था सुतरा उसकी बातों पर सहज ही कोई अविश्वास नहीं कर सका। और सतीशचन्द्र बड़े आदमी ठहरे। यद्यपि वे अभी थोड़े दिन से ही मधुपुर आये हुए थे तथापि सब लोग उन्हें एक अच्छे भले आदमी कहकर जानते थे। इसलिये जो कुछ उन्होंने बयान दिया उस पर भी किसी को अविश्वास करने का साहस नहीं हुआ। तो भी इन दोनों आदमियों के दो किसम की बातोंमे सभी कुछ न कुछ अवश्य विस्मित हुए। मात्र असल कारण क्या है—कोई इसको स्थिर नहीं कर सका।

जो हो, पुलिस निश्चिन्त बैठी नहीं थी। वे लोग एक साथ इन दो खून के मामले की जॉच पड़ताल विशेष रूप से कर रहे

थे। अत तीन दिन के भीतर ही पुलिस द्वारा मारवाड़ी के दोनो खूनी पकड़े गये। ये दोनों ही बड़े बलवान डुपाध हैं। इनका काम ही चोरी-डकेती करना है। बिना कारण पुलिस ने इन दोनों को पकड़ा नहीं है। मारवाड़ी के पास से जो कुछ चीजें चोरी चली गयी थी पुलिस को वह सब उन लोगों के पास मिल गयी। पुलिस ने इन लोगों के विरुद्ध और भी अनेक प्रमाण अपनी तहकीकात से जुटा लिया था। उन सबों को यहाँ पर लिखना इस समय बिल्कुल व्यर्थ है।

पता लगाने पर मालूम हुआ कि कई दिन से ये दोनों दुपाथ मधुपुर में चक्कर लगा रहे थे। घूम घूम कर मौके को ढूंढ़ रहे थे। इन लोगों के साथ दामन नाम का एक आदमी और भी था। किन्तु पुलिस उसका कोई पता नहीं पा सकी। जो दो आदमी पकड़े गये थे उन लोगों ने कहा कि न मालूम दामन कहाँ चला गया वे लोग नहीं जानते।

-मारवाड़ी और डाक्टर दोनों प्राय एक ही समय मारे गये थे यह भी एक प्रकार से अच्छी तरह साबित हो गया। लोग यह समझ गये कि इन दुपाधों ने कभी रमेन्द्रनाथ का खून नहीं किया है वे दूसरे ही किसी मनुष्य द्वारा मारे गये हैं।

पुलिस मारवाडीके खूनी इन दोनों दुपाधों को गिरफ्तार कर लेने के बाद रमेन्द्रनाथ के खूनी को पकड़ने की चेष्टा में विशेष रूप से लग गयी।

इसी समय रमेन्द्रनाथ की वृद्धा माता अपने देश से मधुपुर में आ उपस्थित हो गई। प्रफुल्ल कुमार प्रभृति अनेकों ने उन्हें अपने यहाँ टिकने के लिए बहुत अनुरोध किया किन्तु वे कहीं न टिक कर अपने मृत पुत्र के मकान में ही जाकर उन्होंने आश्रय लिया।

अट्ठारहवाँ परिच्छेद



धीरे धीरे सतीशचन्द्र के ऊपर ही डाक्टर के खून का सदेह विशेष रूप से आ पड़ा। तब भी मधुपुर का कोई आदमी उन पर सन्देह नहीं कर सका। कारण वे लोग यह नहीं जानते थे कि रमेन्द्रनाथ के साथ उनकी स्त्री का परिचय था। और साथ ही रमेन्द्रनाथ के मन का भाव भी वे लोग जानते नहीं थे इसी से लाचार उनके ऊपर उन लोगों का सदेह पूरी तरह अपना जड़ नही जमा सका।

किन्तु हेमांगिनी की बात सबों से अलग है। अपने स्वामी के मन का भाव उनकी भयंकर ईर्ष्या रमेन्द्रनाथ के ऊपर वि गलीय क्रोध ये सभी हेमांगिनी अच्छी तरह जानती थी। यही क्यों एक दिन सतीशचन्द्र ने उसके सामने साफ कह भी दिया था कि वे रमेन्द्र को भली भाँति विधिवत शिक्षा देंगे। इसके ऊपर उस दिन सतीशचन्द्र बहुत रात गये मकान लौटे थे। और चोर की भाँति किसीसे कुछ बात न कर एक दम से सोनेवाले कमरे में द्वार बन्द कर लिया था। अत में बहुत देर के बाद वे कपडा लत्ता बदलकर बाहर चले आये थे। जो हो इन सब बातों से सचमुच ही उनके ऊपर सन्देह करने का कोई कारण नही था। क्यों कि वे एक शिक्षित, चरित्रवान ज्ञानी, और अच्छे सज्जन पुरुष सबके ऊपर वे उसके स्वामी हैं। तब जिस समय उन्होंने रमेन्द्र की हत्या की खबर दी था उस समय इस हत्या के सबध में कोई कुछ भी नही जानता था। जानने की सभावना भी नहीं थी। फिर उन्होंने यह बात कैसे जानी? अत: हेमांगिनी इसी प्रकार आकाश-पाताळ सोचने लगी। उसकी आँखो

के सामने चारों तरफ अंधकार ही अंधकार दीख पड़ने लगा। छाती भीतर ही भीतर ज़ोर से धड़धड़ करने लगी।

इसके सिवा सतीशचन्द्र हमेशा ही बाहर जाते समय एक बड़ी सी लाठी हाथ में लेकर बाहर जाते। अत: उस रात को वे लाठी लेकर घर लौटे थे या नहीं इसको हेमागिनी ने देख नहीं पाया तब भी फिर उस रात से उसे आज तलक लाठी दिखाई नहीं पड़ी। वह लाठी कहाँ चली गयी क्या हुआ? उन्होंने उस लाठी को फिर क्या किया? हेमागिनी ने सुना था कि किसी ने पीछे से उनके सिर पर लाठी मारकर उनकी हत्या की है। स्वामी के ऊपर इस भीषण सन्देह ने मानो हेमागिनी के दिल औ दिमाग में एक प्रचंड आग का शोला जगा दिया। उसके स्वामी ऐसा भयंकर काम करेंगे इस बात को मानने के लिए उसका मन तय्यार नहीं हुआ। किन्तु कार्य कारण के परस्पर संयोग से सन्देह के वशीभूत न होने का और कोई उपाय नहीं था। तो भी वह किसी प्रकार इस बात पर विश्वास नहीं कर सकी। पाठक! दाम्पत्य का ऐसा ही पवित्र बंधन होता है। यही क्यों गुरु और इष्ट देवता की बातों में अनास्था भले ही कर सकती है किन्तु पति का अविश्वास स्त्री कभी नहीं कर सकती।

दूसरी दिन सतीशचन्द्र ज्यों ही घूमने के लिए बाहर निकले त्यों ही हेमागिनी ने आकर झट शयनगृह का दरवाजा बन्द कर लिया। उस हत्याकांड के दिन उसके स्वामी जो कपड़ा पहनकर बाहर गये हुए थे वे हमेशा जिस लाठी को हाथ में लिया करते थे वह सब कहाँ गया—क्या हुआ? इसका पता लगाने के लिए हेमागिनी व्याकुल हो पागल की भाँति हो गई। उसका विश्वास इस बात पर जम गया कि उसके स्वामी अवश्य

उन सब चीजों को इसी घर में कहीं छिपा कर रखे हुए हैं। बहुत सम्भव है कि वे अपने खास बक्स में ही उन सब को छिपा रखे हों। जब तक इस सबंध में सच झूठ की परीक्षा वह कर न लेगी तब तक उसके मन को किसी प्रकार भी चैन नहीं आवेगा यदि सत्य सत्य ही वह और अधिक दिन तक इस अवस्था में रहेगी तो एक दम से पागल हो जायगी।

हेमांगिनी ने भीतर से दरवाजा बंद कर लिया और घर के कोने कोने एक एक ढूंढने लगी। किन्तु वह जिस वस्तु को ढूंढ रही थी वह कहीं भी उसे नहीं मिली। तब फिर क्या उसने जो सोचा है वही सत्य है? सचमुच ही क्या उसके स्वामी उस दिन के कपड़े लत्ते और लाठी अपने खास सदूक में छिपा रखी है?

सतीशचन्द्र के पास बड़ी तीन चार सदूकें थीं। इन सब सदूकों की चाभी वे स्वयं अपनी जेब में रखा करते थे। हेमांगिनी अपनी खास चाभियों का गुच्छा लेकर उन सदूकों के खोलने की चेष्टा करने लगी। बहुत कष्ट करने पर बहुत देर के बाद उनमें से एक को वह खोल सकी। देखा उसमें वह सब चीज नहीं हैं। फिर दूसरा बक्स खोला उसमें भी नहीं। उसके बाद तीसरा खोल डाला। उसीसमय माना सहसा किसी ने उसकी छाती में जोर से धक्का दिया। उसने अपनी आँखों के सामने चारों ओर अन्धकार ही अंधकार देखा।

उसी सदूक के भीतर वही लाठी दो टुकडे होकर टूटी पड़ी है। न मालूम कैसा एक काला सा दाग लाठी के सिर पर पड़ा हुआ है। लाठी के नीचे ही वह धोती कमीज भी खून में सनी हुई तरवतर है।

वह उसी समय धम्म से नीचे घुटना टेक बैठ पड़ी और

मारे डर के उसका सर्वाङ्ग थरथर काँपने लग गया। उसके श्वास प्रश्वास में दृष्टि में, नसनस में एक बहुत ही तीव्र बिजली का प्रवाह खेल गया। तब क्या सत्य सत्य ही उसके स्वामी नरहन्ता हैं ? क्या सत्य सत्य ही निरपराध बेचारे रमेन्द्र के खून से उन्होंने अपना हाथ रंग डाला है ?

हेमांगिनी की विचार शक्ति एकबारगी ही लुप्त हो गयी। वह स्तम्भित और भयभीत होकर बहुत देर तक बैठी रही। वह क्या करती है—उसके स्वामी अवश्य ही यह जान जायगे। अब जानकर ही क्या होगा ? अब उसका संसार में कोई किसी से कुछ भी आस्था नहीं है। किसी का भरोसा नहीं। माया ममता नहीं है। उसके हृदय की ग्रंथि छिन्न भिन्न हो गयी है। उसको यदि कन्या-पुत्र न होते तो अब तक वह न मालूम क्या कर डालती नहीं, कहा जा सकता।

इसी समय किसी ने दरवाजे पर जोर से धक्का मारा। इस शब्द से हेमांगिनी बाणविद्ध हरिणी की भाँति जोर से उठ खड़ी हुई। बाहर से घर की पुरानी दाई बोली—"कोई एक आदमी आपसे मिलने आया है" इसका हेमांगिनी ने न मालूम क्या उत्तर दिया इसको स्वयं उसने नहीं जाना। दाई फिर बोली—"कौन तो एक आदमी आया है।"

काँपते हुए हाथों से हेमांगिनी ने संदूक को बंद किया। इसके बाद धीरे-धीरे जाकर दरवाजा खोल दिया। दायी बोली—"एक औरत आपसे मिलने आयी है। यह क्या ? बहिन ! तुम्हारी यह कैसी दशा है। तबीयत कुछ खराब तो नहीं है ? तुम्हारा मुँह आँख ऐसी क्यों हो गयी है ?"

हेमांगिनी ने बड़े ही अस्पष्ट स्वर में कहा—"नहीं कुछ नहीं। सिर में थोड़ा दर्द है। कौन औरत आयी है ? कह दो

जाकर कि मेरी तबीयत खराब है। सिर में भारी दर्द हो रहा है।

उसी समय दायी के पीछे से किसी ने कहा—"सिर्फ दो एक बात मात्र करनी है—ज्यादा दिक न करूँगी।"

स्त्री चुपचाप दायी के पीछे पीछे चली आयी थी। हेमागिनी स्त्री को देखते ही मात्र पहचान गयी थी। उनको देखते ही उसका हृदय और भी काँप उठा। उसने अपने चारों ओर अधकार ही अधकार देखा। पाठक! स्त्री और कोई नहीं रमेन्द्रनाथ की माँ हैं।

कलकत्ते में एक बार रमेन्द्र को माँ से हेमागिनी की भेंट हुई थी। ससार में इन्हीं एक गरीब माँ के सिवा रमेन्द्र का अपना कहनेवाला और कोई नहीं था। रमेन्द्रनाथ अपनी माँ से कोई भी बात छिपाते नहीं थे। हेमागिनी की सभीबातें उन्होंने अपनी मां से कह दी थीं। इसी से कलकत्ते में उनकी माँ ने आकर हेमागिनी से एकवार भेंट की थी। उसी दिन से हेमागिनी उनसे बहुत डरती थी। क्यों डरती थी यह बात वह नहीं जानती।

हेमागिनी रुद्ध कंठ से बोली—"आइए बैठिए।

रमेन्द्र की मा आकर घर के भीतर पलग पर बैठ गयीं। जब तक दायी वहाँ से चली न गयी तब तक उन्होंने कोई बात नहीं कही। हेमागिनी को भी बात करने की ताकत नहीं थी।

दायी के चले जाने पर रमेन्द्रनाथ की माँ बड़े ही गभीर भाव से धीरे धीरे बोलीं—"हमारे रमेन्द्र का किसने खून किया है, यही सुनने को मैं तुम्हारे पास आयी हूँ।"

हेमागिनी को मालूम हुआ कि उसके पैर के नीचे की धरती धीरे धीरे सरकती जा रही है। मानो किसी ने जोर से दोनों हाथों से उसका गला धर दबाया है। उनके सामनेही उसी वक्स

के भीतर उनके पुत्र की हत्या का घोर ज्वलन्त प्रमाण छिपा हुआ रखा है। ओह! यह कितना भयकर और कितना भीषण है। इसके सोचने की भी हेमागिनी का ताकत नहीं है। अत वह कोई भी बात अपने मुंह से नहीं कह सकी।

रमेन्द्र की माँ ने कहा—"तुम्हीं ने मेरे लड़के को मार डाला है। खून किया है।"

हेमागिनी अब और अधिक नहीं सह सकी रो पड़ी। उसके बाद नेत्रों से आँसू की धारा बहाते हुए बोली—"क्या मैंने उनको मार डाला है। क्या यही बात कहते आप मेरे पास आयी हैं।"

रमेन्द्र की माँ—"मेरा बच्चा किस प्रकार मरा है। यह मैं सब सुन चुकी हूँ। किसने मेरे बच्चे की हत्या की है—मै रात-दिन यह बात सोच रही हूँ। यहाँ के सभी लोग कह रहे हैं कि मेरा लड़का सभी का प्रियपात्र था सभी उसे दिल से चाहते थे। आज ही मैंने यह बात सुनी कि तुम यहाँ आयी हुयी हो। यह बात सुनते ही मेरे मन में हुआ कि ओह अब समझ में बात आ गयी कि मेरा बच्चा मेरा चाँद का टुकडा क्यों गया है। मैं जानती हूँ—तुमने अपने हाथ से उसका खून नहीं किया—कर भी नहीं सकती। तो भी दूसरे के द्वारा उसकी हत्या करा सकती हो। क्यों यही तुमने नहीं किया है?"

हेमागिनी चुपचाप अपने ऊपर तीर वर्षण की तरह इन सब भयानक बातें सुनने लगी। इससे उसको क्रोध नहीं हुआ। वह विनीत भाव से दु खित हृदय के साथ बोली—"आप ऐसी भयानक बात अपने मुंह से न निकालें। मेरे प्राण देकर भी यदि वे जीवित हो सकते तो मैं वह भी कर डालती—कभी पीछे न हटती।"

रमेन्द्र की माँ ताव दृष्टि से हेमागिनी के मुँह की ओर ताकती रहीं। अन्त में बोलीं—"तुमने मेरे लड़के की सुख-शान्ति एकबारगी ही नष्ट कर डाली है। तुम उसके जीवन के साढेसाती शनिश्चर हो। इसी से उसकी इस प्रकार मृत्यु में मेरा संदेह स्वभावत: तुम्हारे ही ऊपर हो रहा है।"

इन बातों पर भी उसे क्रोध नहीं हुआ। लज्जा और घृणा से मानो वह आप ही मरी जा रही थी उसी प्रकार के भाव में बोली—"बीती हुई बातों को उभार कर मुझे और अधिक कष्ट न दीजिए। आप के लडके ने यहाँ हमारे बच्चे को रोग से प्राण रक्षा की थी। भला आपके लडके का अनिष्ट हो ऐसा काम मुझसे क्या हो सकेगा?"

इस बार रमेन्द्र की माँ बातो का सुर बदलकर बोलीं—"यह तो बताओ तुम्हें ऐसी क्यों देख रही हूँ? तुम्हें हो क्या गया है? यह शरीर की बीमारी हैं—ऐसा तो मालूम नहीं होता। यह तो हृद रोग (मन की बीमारी) है! किसके लिए?"

हेमागिनी सरल हृदय से बोली—"आप से कोई बात नहीं छिपाऊँगी। आपके लडके की इस प्रकार आकस्मिक भीषण हत्या से मै बड़ी ही दुखित हो रही हूँ। आप मेरी बातों का विश्वास करें—मैं उनकी मृत्यु का विषय कुछ नहीं जानती।"

"और तुम्हारे स्वामी?"

"मेरे स्वामी! वे भला उनका अनिष्ट क्यों करेंगे।"

उस समय हेमागिनी के मन की अवस्था कैसी थी इसका वर्णन करना बहुत ही कठिन है उसके प्राण मानों छाती छोडकर बाहर निकल जाना ही चाहते थे। स्वामी की वह टूटी लाठी और खून से तर कपडो के दर्शन—इतने ही मात्र से वह एक प्रकार

ने अकाट्य प्रमाण पा चुकी थी कि रमेन्द्र की हत्या करनेवाला कौन है। खूनी उसके ही स्वामी उसके पुत्र कन्या के पिता हैं! और उसके सामने बैठी हुई निहत रमेन्द्र की माता हैं। जो कभी उसकी भाँति अवस्था में नहीं पड़ा है वह भला उसकी दशा का अनुभव कैसे कर सकता है। अत हेमांगिनी की सांस मानों भीतर से बन्द होती आने लगीं।"

सज्ञा रहित बेहोशकी भाँति हेमांगिनी बोली—"आह! आप कृपा कर ऐसी बातोंको कभी अपने मनमें स्थान न दीजियेगा! हम लोग आपके पुत्र का अनिष्ट करेंगे—यह असभव है।"

रमेन्द्र की माँ उठकर खड़ी हो गयी और बोली—हेमांगिनी बहुत दिन पहले एक समय तुमने मेरा सुख-शान्ति सब नष्ट कर दिया था। तुम्हारे ही लिए उसने आज तक भी विवाह नहीं किया। उस समय मैंने तुमको कह दिया था कि यदि तुम्हारा जीवन कभी दु ख-यातना कष्ट और संताप से श्मशान भूमि बन जाय तो उस समय तुम मन में समझ लेना कि तुम अपने पापों का दण्ड भोग स्वय पा रही हो। इस समय भी मैं वही बात कहती हूँ। मेरी यह बात अच्छी तरह मन में गठिया कर रख लेना।'

हेमांगिनी का कठरोध हो गया। सचमुच ही क्या उसके पापों का दण्ड भोग आरभ हो रहा है? ओह! कैसी भीषण समस्या है।

रमेन्द्र की माँ दरवाजे के पास, जा बड़े ही गभीर स्वर में बोली—"तो फिर तुम नहीं जानती हो कि मेरे बच्चे की हत्या किसने की है?"

हेमांगिनी रुकती सांस से बड़े ही कष्ट के साथ बोली—"हम लोग भला कैसे जानेंगे?"

रमेन्द्र की माँ चली गयीं। उनके साथ जाकर उन्हें कुछ दूर पहुँचा देना उचित है—ऐसा करने में भी उसे साहस नहीं हुआ। वह उसी जगह धम्म से बैठ पड़ी। सारी पृथ्वी उसकी आखों में चक्कर मारने लगी। एक भयकर स्वप्न विभीषिका मानो उसके सामने जमाअत बाँध कर एकट्ठी हो गयी।

उन्नीसवाँ परिच्छेद


सी समय हेमांगिनी के कानों में बाहर किसी का पद शब्द सुनाई पड़ा। उस शब्द से उसके प्राण एक दम काँप उठे। फिर क्या रमेन्द्र की माँ लौट आ रही हैं?

नहीं, इस बार वे नहीं है। हेमांगिनी ने एक समाधान की साँस ली। उसी समय घर के भीतर मौसी माँ ने प्रवेश किया।

मौसी माँ के भीतर आने पर भी हेमांगिनी कोई बात नहीं कह सकी। वे हेमांगिनी की बगल में आ बैठ गयीं। कुछ क्षण चुप रहकर बोलीं—"बेटी! तुम्हारी यह शकल कैसी हो रही है? इस ओर भी क्या तुम्हारा कुछ ध्यान है?"

तब भी हेमांगिनी के मुँह से कोई बात निकल नहीं सकी। उस समय उसमें बात करने की क्षमता नहीं थी।

मौसी माँ धीरे धीरे बोलीं—"बेटी! यहाँ के सभी लोग नाना प्रकार की बातें कह रहे हैं। हेम। मैं तुमसे दो एक बातें करना चाहती हूँ।

तो भी हेमांगिनी चुप है। उसकी दृष्टि मौसी मा की आँखों के ऊपर लगी है, निश्चल, निस्पन्द नेत्र के साथ टकटकी बंधी हुई है।

मौसी बोली—,'देख हेम ! किसने यह भयानक काम किया और किसने नहीं किया यह सब मैं कुछ नहीं कहती। सतीश ने उस दिन जो कहा था उसे यहाँ के सभी लोगों ने अच्छी तरह सुन लिया है इसी लिए अनेकों लोग अनेकों तरह की बातें कहते हैं। जितने मुँह उतनी तरह की बात हो रही हैं। जिस समय रमेन्द्रनाथ के खून की बात कोई नहीं जानता था उस समय हम लोगों के सतीश ने कैसे यह बात जान ली कि रमेन्द्र मारे गये हैं ? केवल यही नहीं—कैसे और किस प्रकार से खून हुआ है यहाँ तक वह बता गया था। अत जहाँ तक मैं समझती हूँ यह बात न कहना ही उसके हक में अच्छा था। मैं भी उस समय न समझ सकने के कारण प्रफुल्ल बाबू के आगे कह बैठी थी। हम लोग स्त्री जाति ठहरीं—कम बुद्धि वाली ! न तो ज्ञान और न विचार ही हम लोगों में होता है। इसी से बड़े बड़े लोग पहले से कहते आये हैं कि "स्त्री बुद्धि प्रलयकरी" बुद्धि और विचार का तो हम लोगों में नाम मात्र नहीं रहता। अब जो हो गया है उसका कोई उपाय नहीं है। "बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले" के अनुसार जिसमें भविष्य में और कोई अनिष्ट न हो सके यही इस समय करना होगा।

हतभागिनी केवल रुद्ध कंठ से इतना ही बोली—"हा भगवन् !"

"उपाय है ! हेम"

"क्या उपाय है ?"

"उपाय ? मैं और सुधांशु दोनों ही झूठ बात कहेंगे। जिस समय पुलिस हम लोगों से पूछेगी—क्यों कि निश्चय ही वह बिना पूछे न छोड़ेगी। उस समय हम लोग एक दम बात को

उलटदूंगे। सतीश ने जो कहा है वह न कहेंगे। सतीश को भी हम लोगों ही की तरह बात करनी होगी।"

"वे क्या कहेंगे ?"

"सुनो, सुधांशु कहेगा कि वह गिरिडी से रात को लौटते समय डाक्टर के घर के सामने से हो कर आ रहा था। उसी जगह बहुत से लोगों को एकट्टा देखकर वह भी वहाँ खड़ा हो गया। उस समय रमेन्द्र की मृतदेह उसने देख लिया था। क्या हुआ है यह सब उसने उन्हीं लोगों से सुन पाया था। उसके बाद उसी रात को हम लोगों के पास आकर उसने वह सब बातें कह सुनायी थीं।"

- किन्तु यह सब बातें तो ठीक नहीं हैं।"

"वह मैं भी जानती हूँ। किन्तु ठीक न होने पर भी इस समय सतीश को यही कहना होगा। दूसरा कोई उपाय नहीं है। मैं भी कहूंगी भूलकर मैंने सतीश का नाम लिया था। खून की बात सुन कर माथा खराब हो गया था—ठिकाने पर नहीं था। इसीसे सुधाशु का नाम न लेकर भूल से सतीश का नाम ले बैठी थी। सतीश भी भूल ही से माली की बात के साथ सुधाशु की बात ग. वडी में डाल बैठा था। वह उस समय नहीं जानता था कि एक साथ दो दो खून हो गया है। इसी से माली ने जिस खून की बात कही थी सतीश ने उस खून को डाक्टर के सवध में ही समझ लिया था। ऐसी भूलें प्राय हुआ ही करती है। हम सभी लोगो से भूल हो गयी थी। यह सब केवल भूल ही भूल मात्र है और कुछ नहीं है। हेम! सब बातें अच्छी तरह याद तो रहेंगी न ? पुलिस के आने के पहले ही हम सबों को इस स व में सब बातें ठीक कर रख लेनी होगी यही उचित है।"

हेमागिनी लडखड़ाती हुई अस्पष्ट स्वर में बोली—"हाँ मौसी माँ। भगवान ने हम लोगों के भाग्य में यह भी लिख दिया था—"

मौसी—जाने दो इस समय उन सब बातों को। दूसरी बातों का इस समय काम नहीं है। इस समय जिसमें सतीश की रक्षा हो—हम सबो का मान सभ्रम अक्षुत बचे वही करना होगा। इस समय और कुछ भी सोचने विचारने की आवश्यकता नहीं है।

"और-और सुधाशु क्या—?"

"उसके बारे में तुम निश्चिन्त रहो! वह ऐसा मूर्ख नहीं है। मैंने उससे सलाह करके सब ठीक कर लिया है। वह ठीक कहेगा। इसके लिए कोई भय नहीं सौभाग्य का विषय है कि उस दिन रात को सतीश नौकर चाकरों के सामने कोई बात नहीं कह बैठा।

हेमागिनी कुछ नहीं बोली—चुपचाप बैठी रही। मौसी माँ बोली—"देखो, सतीश को यह सब बातें कह कर अच्छी तरह समझा देना। जिसमें वह भी ठीक यही बात कहे। ऐसा होने से उसकी बातों से लोगों को जो सदेह हो रहा है वह सब दूर हो जायगा। बस सब गडबड़ी मिट जायगी।

मौसी माँ चली गयी। हेमागिनी उसी जगह हाथ बाँधे शून्य हृदय, पत्थर की मूर्ति की भाँति बैठी रही उसे मालूम हुआ कि मानो उसका माथा फटा जा रहा है। अन बहुत देर के बाद वहाँ से उठ बच्चे की कोठरी में जाकर सो गयी।

मौसी माँ ने जो बातें स्वामी से कहने को कही हैं वह अब उन्हें कैसे कहेगी। यह कहना क्या सभव है हेमागिनी सारा दिन यहा शोचती रही। सतीशचन्द्र बाहर चले गये थे। अत

अकेली बिस्तरे पर पड़ी वह इसी की चिन्ता करने लगी। किन्तु सोचते सोचते सारा दिन बीत गया तब भी वह कोई बात स्थिर न कर सकी।

सन्ध्या को सतीशचन्द्र घर लौट आये। वे हेमांगिनी को सोती देख बोले—"क्या तबीअत ज्यादा खराब तो नहीं हो गयी है ?—

हेमांगिनी सूखे कंठ से बोली—"हाँ, कुछ खराब है।"

"अच्छा तो अपने कमरे में जाकर थोड़ी देर सो जाओ। इससे शरीर हलका और ठीक हो जायगा।"

"नहीं यहांबहुत अच्छी तरह से हूँ।"

सतीशचन्द्र सिर नीचे किये स्नेह के साथ मृदु हँसी हँस कर हेमांगिनी के गोरे-गोरे गालों का चुम्बन लेने को तैयार हुए। हेमांगिनी बड़े ही कातर कंठ से अर्द्ध स्फुट स्वर में आर्तनाद कर उठी और तकिये में मुँह छिपा कर रोने लगी। उस समय धीरे धीरे रात होती आ रही थी। घर के भीतर थोड़ा-थोड़ा अन्धकार जमा हो गया था। उसी अन्धकार में सतीश आसुओं से तर अस्त होते हुए चन्द्रमा की भाँति हेमांगिनी का पीला मुखमंडल देखपाये या नहीं—कह नहीं सकते।

सतीशचन्द्र के ललाट में सिकुड़न पड़ गयी। वह कोमल स्वर में बड़े ही दृढता के साथ बोले—"ओह! कैसा झूठा विश्वास इस सिर के भीतर आ घुसा था। मैं कहता हूँ सम्पूर्ण भूल सम्पूर्ण भूल सिर से पैर तक केवल भूल ही भूल मात्र है। और कुछ नहीं।"

इसके बाद और कुछ न कह वह घर से बाहर चले गये।

धीरे-धीरे सन्ध्या पूर्ण रूप से हो गई। अन्धकार ने एक पैर दो पैर करके धीरे-धीरे अपना दखल जमा लिया। सन्ध्या

के ब द सुविधा पाकर मौसी माँ ने आकर पूछा—"क्या तुमने सतीश से यह सब बातें कहदी है न ?"

हेमांगिनी बड़े हो खिन्न और कंपित स्वर में बोली—"मौसी माँ ! तुम्हीं कह देना—मैं कह न सकूँगी।

वह कुछ देर चुप रह कर धीरे-धीरे बोली—"देखती हूँ लाचार हमी को कहना पड़ेगा। सतीश को सब बातें जान लेना नितान्त ही उचित है।

हाय ! हेमांगिनी के हृदय में जो दारुण देवासुर का द्वन्द युद्ध मच रहा है उसे भला कौन समझ सकेगा ? उसके स्वामी हत्याकारी-खूनी हैं ! नहीं नहीं क्या ऐसा भी कभी हो सकता है। न होगा क्यों ? प्रमाण तो बड़े ही ज्वलन्त आँखों के सामने है। ओह नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। इस समय उसका हृत्पिण्ड वक्ष स्थल को भेदन कर बाहर निकल पड़ने की तैयारी कर रहा था।

बीसवाँ परिच्छेद



दूसरे दिन इन्स्पेक्टर ने आकर रमेन्द्रनाथ की हत्या के सम्बन्ध में जिसे जो बात मालूम थी, एक एक कर सबों का इजहार लेना आरम्भ किया। पहले ही रमेन्द्रनाथ के खानसामा का इजहार हुआ। उसने कैसे कब और कहाँ अपने मालिक की लाश देखी थी एक एक सभी उसने अपने बयान में कह सुनाया।—

अपने इस नौकर को रमेन्द्रनाथ विशेष प्यार करते थे वह अपने मालिक की मृत्यु सम्बन्ध में इजहार देते देते एक दम रो

पडा । उसके दोनों गालो से झराझर आँसुओं की धारा वह कर नीचे जमीन में गिर पडने लगी ।

रेलके डाक्टरवाबू ने रमेन्द्रनाथ की लाश की जाँच की थी अत. वे भी वहाँ उपस्थित थे । इन्स्पेक्टर साहव के पूछने पर कि रमेन्द्रवावू किस प्रकार मारे गये, वे बोले—"किसी ने पीछे से हो कर रमेन्द्रनाथ के सिर पर वडी भारी लाठी जोर से मारी है । उसी चोट से वे तलमला कर सडक के किनारे गिर पडे थे—और गिर पडने के साथ ही उनकी मृत्यु हो गई है ।

वहाँ से होकर इन्स्पेक्टरसाहव सतीश के मकान पर आ उपस्थित हुए । वहाँ उन्होंने सतीशवावू के नौकर चाकरो के मुँह से सुना कि रमेन्द्रवावू उस रात को आठ के अमल में वहाँ से चले गये थे । हेमागिनी ने भी इस वात को स्वीकार किया । जब इस्पेक्टरवावू ने उससे पूछा तो उस दिन की सारी घटना कह कर वह बोली—' डाक्टरवावू प्रायः आठ के अमल में यहाँ से चले गये थे ।"

उसके वाद सुधाशु का वयान लिया गया । उसने कहा—"मैं रात की गाडी से गिरिडी से लौटकर मधुपुर स्टेशन होता हुआ सतीश भय्या के घर आरहा था । उस समय रात विशेप जा चुकी थी । मालूम होता है एक वज गया था । डाक्टर रमेन्द्रवावू के मकान के सामने आकर देखा—उनके मकान के दरवाजे पर वहुत से लोग जमा हो कर वड़ा हल्ला मचा रहे हैं । मैं मामला क्या है जानने के लिए उसी भीड़ के नजदीक जा उपस्थिति हो गया । एक आदमी से मामला क्या है पूछने पर वह वोला—"डाक्टरवावू मारे गये हैं—किसी ने उनकी हत्या कर डाली है मधुपुर आतेही सहसा इस खून की खवर पाकर न मालूम कैसा मेरा मन आपही आप भीतर दब गया । हृदय में

खल बली मच गयी। मैं घर पहुँचतेही सब बातें सतीश भय्या से कह दी वहाँ उस समय प्राय सभी लोग घर के उपस्थित थे , पुत्र ने जो कहा माता ने भी उस की बातों का समर्थन किया। इन्सपेक्टरबाबू के पछते ही वे बोलीं—"सुधांशु के उस दिन आने की बात नहीं थी। एकाएक उस रात को सुधांशु को आते देख मेरा प्राण भय से थर २ काप उठा था। वह आकर बोला-"गिरिडी में काका जी नहीं हैं। इसी से मैं रात की गाडी से ही लौट आया। स्टेशन से आते २ देखा यहा एक खून हुआ है वे यहा के एक डाक्टर थे। नाम उनका रमेन्द्रनाथ घोष हैं। इस तरह यहा एकाएक खून हो गया है सुन हम लोग मारे डर के एक बारगी ही काठ हो गये।"

उनके चुप होते ही इन्सपेक्टर साहब ने विस्मित होकर पूछा—"किन्तु यह बात तो आप ने प्रफुल्ल कुमार बाबू से नहीं कही। आप ने उनसे कहा था कि रमेन्द्र बाबू के खून की बात सतीश बाबू ने ही आप से पहले पहल कहा था। आज फिर यह दूसरी बात कहने का क्या कारण है?"

इन्सपेक्टर की बातों के उत्तर में मौसी मा ने कहा—'दो खून हो गया है यह बात हम लोग नही जानते थे। इस के अतिरिक्त इस खून की बात सुन कर हम लोगों का एक दम माथा चकरा गया था, होश हवाश ठिकाने नही था। इसी से यह भूल हो गई थी उसके बाद जिस समय सुधांशु ने हम लोगों की भूल सूझा दी उस समय समझ में आया कि खून की बात सुधांशु ने ही आकर पहले पहल हम लोगों को कही थी।

सब के बाद अन्त में सतीशचन्द्र का इजहार हुआ वे बोले—"मकान लौटते समय मैंने निरंजन माली के मुह से

सुना था कि न मालूम कौन एक आदमी मारा गया है। उसके वाद सुधासु ने आकर डाक्टर के खून की वात कही। वस इसी से लाचार न मालूम कैसी एक गडवडी सी हो गयी थी। मेरी धारणा वरावर यही थी कि निरजन माली ने ही मुझ से डाक्टर के खुन की वात कही थी। एक साथ एकही रात में दो २ खून हो गया है यह वात विल्कुल ही मैं नहीं जानता था इसी से यह भूल मुझसे हो गयी थी।

इन्सपेक्टर वावु जिस समय सतीश वावू के मकान में इजहार लेने आये थे उस समय वहा प्रफुल्ल कुमार वावू प्रभृति कई एक भले आदमी भी उपस्थित थे। इन्सपेक्टर के चले जाने पर प्रफुल्लकुमार वावू हंसते २ सतीश चद्र के मुह की ओर ताक कर वोले—"तुम्हारी एक वात और माली की दूसरी वात सुन सचमुच ही में हम लोगों के मन में एक विपरीत दुर्भाव का उदय हो आया था। अव समझ गया कि तुम से ऐसी भूल क्यों हो गयी थी। ऐसी दशा में भूल हो जाना कोई विचित्र वात नही है। मधुपुर ऐसे छोटे शहर में एकही रात एक साथ दो २ खून हो सकेगा इस वात की कोई सहज ही कल्पना तक भी नही कर सकता।'

सतीशचन्द्र प्रफुल्लकुमार को वीचही में रोक कर वोले-मैंने माली के मुह से सुना-एक खून हो गया है उसके वाद सुधाशु आकर वोला—"डाक्टर वावू का खून हुआ है। किसी ने उन्हे डडे से मार कर सडक के किनारे फेंक दिया है। उसी से ही मेरे मन में हुआ था कि माली ने ही डाक्टर वावू का नाम लिया है। और भी दूसरा खून हो गया है यह वात एकवार भी मेरे मन में नही आयी।"

प्रफुल्लकुमार समाधान की सास लेकर वोले—इतने दिन

के बाद आज मामला क्या है साफ समझ में आगया। इतने ही से मैं विशेष सतुष्ट हुआ हूँ।

प्रफुल्लकुमार के चुप होते ही सतीशचन्द्र ने पूछा—"भला पुलिस डाक्टर के खून के सबध में क्या कहती है? वे लोग क्या यही तो नहीं कहते कि दुसाधों के दल के किसी भी बदमाश ने डाक्टर की हत्या नहीं की है?

प्रफु०—हाँ,पुलिस का कहना है कि दुसाधों के दल का कोई भी आदमी डाक्टर की हत्या कर डालेगा इसकी सभावना बहुत कम पायी जाती है। वे लोग सिर्फ पैसे के लिए ही मनुष्यों की हत्या करते हैं। किन्तु यहा तो डाक्टर के रुपये पैसे घड़ी चैन कुछ भी चोरी नहीं गया है। सब के सब उसी तरह अछूत डाक्टर की लाश क साथ पाये गये हैं।

सतीशचन्द्र जरा अनमना सा होकर बोले—"यह बात तो निश्चय ही है। तब डाक्टर का खून किया किसने?

प्रफुल्लकुमार चिन्तित भाव से बोले—' स्थानीय पुलिस तो कुछ भी स्थिर न कर सकी है। सतीश बाबू! हम लोगों ने यहा आपस में चदा कर कुछ रुपया इकट्ठा कर लिया है। जो व्यक्ति डाक्टर के खूनी का पता दे सकेगा हम लोग उसी को वह इनाम देंगे।

इस पर सतीशचन्द्र विशेष आग्रह के साथ बोल उठे—"मैं भी चदा देने को तैय्यार हूँ। रमेन्द्र बाबूका खूनी जिसमें पकड जाय इसके लिए आप लोग मुझे जो कुछ भी करने को कहेंगे मैं उसे करने को सहर्ष तैय्यार हूँ। विशेषत यह इस प्रकार एक साथ एक ही रात में दो दो खून हो जाने से सभी बड़े ही भयभीत हो पड़े हैं। हमारी स्त्री तो इतनी डर गयी है कि वह अब यहाँ रहना ही नहीं चाहती है। खेर वह कुछ नहीं। यह बताइये कि आप लोगों में किसने किसने कितना २ चदा दिया है?

प्रफु०—अभी विशेष किसी ने कुछ दिया नहीं है तब भी सबोंने दश २ रुपया कर पाच सौ एकट्ठा कर लेगें ऐसा सोच रखा है।

सतीशचन्द्र मृदु हँसी हँसकर बोले—"पाच सौ रुपया विशेष कुछ भी नहीं है मैं समझता हू इतने से कोई भी काम नहीं बन सकेगा।"

प्रफु —मधुपुर ऐसे छोटे शहर में पाच सौ चन्दा उठानाही बड़ी भारी बात है। इससे अधिक की सभावना ही नहीं है। अच्छा आप के नाम कितना चन्दा लिखूं ?"

सतीशचन्द्र के कण्ठ से एक गंभीर स्वर बाहर निकला पाँच हजार रुपया।"

पाँच हजार रुपया!! प्रफुल्लकुमार और वहाँ दूसरे जो २ लोग उपस्थित थे उन सब लोगों ने इस आशातीत कल्पना के बाहर रुपये की बात सुन बड़े ही विस्मित हो सतीशचन्द्र के मुख की ओर ताका। रमेन्द्र सतीशबाबू के होते कौन हैं कि वे उनके लिए इतना रुपया खर्च करने को तैय्यार हैं।

सतीशचन्द्र उन लोगों के मन का भाव समझ कर बोले—"पाँच हजार रुपया अधिक कुछ नहीं है। डाक्टर बाबू का खूनी यदि इससे पकड़ा जाय तो मैं सहर्ष इतना रुपया देने को तय्यार हूँ।

दिन ढल रहा है देख प्रफुल्लकुमार और दूसरे सब लोग उठ कर अपने २ घर चले गये। सतीशचन्द्र उसी जगह स्तब्ध होकर बैठ रहे। उनके मन में बिन्दु मात्र भी शान्ति नहीं थी। सारा ससार उन्हें गाढ़े अधकार मे डूबा हुआ दीख पडा पृथ्वी उनके नेत्रों के सामने पहिले की भाँति चक्कर खाने लगी। उन्हें चारों ओर केवल अपार अनन्त सीमा हीन भीषण महा मरु ही मात्र दिखाई पडने लगा।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

कब तक सतीशचन्द्र बाहर बैठक में बैठे रहे इस बात का स्वयं उन्हें खयाल नहीं था। एकाएक न मालूम क्या सोच कर वे झट उठ खड़े हुए और धीरे २ घर के भीतर चले गये। भीतर जाने पर उन्होंने सुना कि हेमांगिनी सोने वाले घर में सोई हुयी है। आज एकबार के लिए भी नहीं उठी। उसका शरीर बिलकुल ही सुस्त है। अत सतीशचन्द्र ने स्त्री को देखने के लिए धीरे २ उसी घर में प्रवेश किया। हेमांगिनी पलंग पर खिड़की की ओर मुंह किये अनमनी सी होकर लेटी हुई थी। स्वामी के पैर की आहट से विचलित हो उसने घबड़ा कर दरवाजे की ओर ताका। सतीशचन्द्र की दृष्टि पत्नी के ऊपर जा पड़ी। उन्होंने देखा उसके सारे सुन्दर मुख मंडल में मानो एक काली विषाद की रेखा खींच गयी है धीरे २ पत्नी के पास आकर उन्होंने पूछा—"मैंने सुना है आज सारा दिन तुम सोती रही हो। कहो कोई विशेष तकलीफ तकलीफ तो नहीं है?"

हेमांगिनी ने अपही विषाद पूर्ण उतरे हुये शुष्क मुख मंडल को स्वामी की ओर फेर कर जरा तेज नजर से उनके मुंह की ओर देखा। उस दृष्टि की प्रखरता सतीशचन्द्र सहन नहीं कर सके। उन्होंने अपनी दृष्टि झट नीचे की ओर कर ली। हेमांगिनी कुछ देर तक उसी एक भाव से स्वामी के मुंह की ओर देखती रही। इसके बाद सहसा बोल उठी—"अब तुम इस समय क्या करोगे कुछ स्थिर किये हो? मुझसे साफ कह दो। मेरी समस्त छाती टूट कर चूर २ होने की भाँति हो रही है।

सतीशचन्द्र पत्नी की इन बातों का अर्थ अच्छी तरह समझ नहीं सके। हेमांगिनी सहसा उनसे यह प्रश्न क्यों कर बैठीं? अत सतीशचन्द्र एक बड़ी ही विस्मय जनक दृष्टि से स्त्री के मुह की ओर देख बोले– 'तुम्हारी इन बातों का अर्थ मैं अच्छी तरह समझ नहीं सका हूं। अब इस समय तुम क्या करोगी एकाएक तुम्हारे यह प्रश्न करने का मतलब क्या है ?"

हेमांगिनी दांतो से होंठ दबा कर अपने को थोड़ा संभाल कर दृढ स्वर में बोली—"अर्थ ! अर्थ तो साफ जाहिर ही है। जाने दो, अधिक कहने की जरूरत नहीं है। मैं जानती हूं, रमेन्द्रबाबू का किसने खून किया है।"

पत्नी की इस बात से एक विषाद की हसी सतीशचन्द्र के मुखमडल पर मानो शुक्ल पक्ष की पचमी की धीमी चांदनी क्षण भर के लिए मेघों से मुक्त की भांति दीख पडी। अस्तु वे सहज कंठ से बोले–"तुम कुछ भी नहीं जानती।"

हेमांगिनी का स्वर गाढा होता आ रहा था। अतः वह उसी स्वर में बोली–"मैं तुमसे तर्क करना नहीं चाहती। मुझमें वह ताकत नहीं है। मौसी मा और सुधांशु भी जानते हैं कि रमेन्द्र का खूनी कौन है। और उसका प्रमाण इसी घर में मौजूद है।"

पत्नी की इन बातों से सतीशचन्द्र का मुह एक दम पीला पड़ गया। वे बड़े ही विचलित कंठ से बोल उठे–"इसी घर में वह क्या।"

हेमांगिनीकी सास बडी तेजी से चल रही थी। वह एक छाती फोडने वाली लम्बी सास लेकर बोली—"तुम्हारी वही लाठी टूटी लाठी और खून से तर तुम्हारा वही कपडा।"

पत्नी की बातों से सतीशचन्द्र का मुह मारे क्रोध के लाल हो उठा था। उन्होंने बडी ही मुश्किल से अपने को सभाला।

उसके बाद बड़े ही कठोर स्वर में बोले—"क्या चाभी चुरा कर तुमने मेरी सन्दूक खोली थी?

हेमागिनी बड़े ही धीर और गभीर स्वर में बोली—"हाँ मैं ने मैंने ही खोली थी। जाने दो उस बात को। तुम खूनी हो! तुमने ही रमेन्द्र बाबू की हत्या की है। अब तुम्हारे साथ एकत्र मैं रह नहीं सकती। रहना असभव है। मेरे बाल बच्चे न होते तो मैं कभी की यहा से चली जाती। तुम मेरे स्वामी हो मैं तुम्हे कुछ भी नही कह सकती। तब भी मेरा तुमसे कातर विनती यही है कि जितना शीघ्र हो सके तुम यहा से चले जाओ।"

सतीशचन्द्र मग्न होकर स्त्री की बात सुन रहे थे। वे एक उदास हसी हसकर बोले—"आरम्भ से लेकर अन्त तक सारा भूलही भूल है। हेम! विवेचना शक्ति को खो मत दो। विचार से काम लो।

हेमागिनी के दोनों सुन्दर गालों से आसुओं की धारा बह रह थी। वह लड़खड़ाती जबान से बोली—"जो कहती हूँ उसे अच्छी तरह सुन लो। जाओ! देश में जाकर रहो। मैं अपने पुत्र कन्या को लेकर पिता के घर जा रहूँगी।

सतीशचद्र फिर बोले—"देखो हेम! तुम बड़ी ही भूल कर रही हो।"

"मैं मन ही मन यह बात स्थिर कर चुकी हूँ। मैं—मैं—" हेमागिनी बात खतम नहीं कर सकी। आसुओं के वेग से उसका गला बद होता आ रहा था। वह तकिये में मुह छिपा कर रोने लगी। बहुत देर के बाद बड़े ही कातर कठ से बोली—"आज से मैं जीते जी मरी के समान हो गयी। मेरा सर्वस्व लुट गया एक दम निराश्रया, इस विशाल विश्व ससार में अकेली हूँ। न मालूम कब तुम पकड़े जाओ, कब तुम्हारा—ओह! कैसा सर्वनाश है।"

हेमांगिनी इसके आगे और नहीं बोल सकी। न मालूम किसने उसका गला चाप दिया। सतीशचंद्र बाधा देकर बोले—"चुप! चुप! तुम जो बात सोच रही हो वह बात नहीं है। मैंने खून नहीं किया है मैं खूनी नहीं हूँ।"

हेमांगिनी कातर कंठ से बोली—'मैं-मैं

सतीशचंद्र उसे बीच ही में रोक कर बोले—"अच्छा ठहरो अपनी बात भी रहने दो। आज ही तुम यहां से चली जाना चाहती हो या जितने दिन तक यह मकान भाड़े पर लिया गया है तब तक यहां रहोगी?"

हेमांगिनी ने स्वामी के मुंह की ओर देखा। इतनी जल्दी वे उसके प्रस्ताव पर राजी हो जायगे इसको उसने सोचा नहीं था। वह कुछ देर तक स्वामी के मुंह की ओर ताकती रहने के बाद न मालूम क्या कहने जा रही थी, कि सहसा आंसुओं की की झड़ी से उसका गला बंध गया उसके मुंह से एक भी बात बाहर नहीं निकली। वह विह्वल दृष्टि से स्वामी के मुंह की ओर देखती रही। सतीशचंद्र मृदु स्वर में बोले—"घबड़ाओ नहीं। सुधांशु रहेगा मौसी मां रहेंगी। नौकर चाकर सभी रहेंगे। जब तक मकान का भाड़ा पूरा न हो जाय तब तक तुम यहीं रहो। इतनी जल्दी सब के सब यहां से चले जाने से केवल लोगों का सन्देह मात्र बढ़ेगा।"

सतीशचंद्र की बात आग में तपाये हुए लोहे के फल के समान उसके कोमल कलेजे में जा चुभी। हेमांगिनी स्वामी की बातों के उत्तर में एक भी बात नहीं कह सकी। वह सिर्फ तकिये में मुंह छिपा कर रोने लगी। अबलाओं को रोने के सिवाय और क्या आधार, सहारा हो सकता है? जिसके एक मात्र जीवन के साथी, इस काल, परकाल के अभिन्न बंधन, हलाहल

पान कर बैठे हैं, उसका अब और क्या उपाय है? अब और वह क्या करेगी? आत्म हत्या, ! हा इन दारुण दुःख और क्लेश के बोझ से छुटकारा पाने के लिए बस सिर्फ यही एक अमोघ औषध है, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु पवित्र चरित्र पतिव्रता, आत्महत्या क्यों करेगी। वह जानती है कि जिस गुरुतर पापों के फल से उसकी यह मनोव्यथा है इसका पूर्ण भोग समाप्त हुए बिना आत्महत्या से छुटकारा पाने की चेष्टा केवल मूर्खता मात्र है। देह-त्याग से क्या कर्म फल का भोग मिट जाता है? आत्म-हत्या से सिर्फ और पापों का भोगमात्र बढ़ेगा। फिर आत्म हत्या से लाभ! अस्तु, हतभागिनी का जीवन इस समय अविराम दुःखमय अशेष क्लेशों का घर हो गया है। फिर उसके ऊपर मृत्यु और भी भयकर है।

× × × × ×

सतीशचन्द्र इतनी जल्दी इतने सहज स्त्री पुत्र परिवार को त्याग कर भाग रहे हैं, क्यों? तब क्या वे समझ गये हैं कि फाँसी के तख्ते से बचने का केवल एकमात्र उपाय भाग जाना है, भागने से जान बच जायगी! उस रात को उस कुसाइत में यदि वे सबसे पहले रमेन्द्र के खून की बात कहने न जाते तो आज कोई भी उन पर सदेह न करता। क्यों ऐसे घोर पागलपन के वश होकर वे ऐसी भयकर मूर्खता का काम करने गये थे? इसका एकमात्र उत्तर है—होनहार। ब्रह्मा का लेख अमिट है। भला किसकी शक्ति है, कि उसे रोक सके। जो होने को है वह होकर ही रहेगा। सदा से ऐसा ही होता आया है, मनुष्य की सामर्थ्य क्या है कि उसके विरुद्ध कर सके।

सतीशचन्द्र घर से बाहर जा रहे थे, लौट कर बोले—"रमेन्द्र के खूनी को जो पकड़ा दे सकेगा उसे पाच हजार रुपया इनाम देने की बात मैंने कह दी है।"

हेमांगिनी ने मन में समझा—उसे चिढाने के लिए ही मानों उसके स्वामी यह बात सुना रहे हैं। मानों मरे पर और तलवार का घाव लगाना ही उन का उद्देश्य है। बात सुनते ही उसकी छाती फटकर टुकडे २ होने के समान हो गयी। सतीशचन्द्र इसके बाद और एक बात भी नहीं बोले। केवल एक बार उदास दृष्टि से पत्नी के मुंह की ओर देख वे धीरे २ घर से बाहर हो गये।

स्वामी के घर से बाहर होने के साथ ही साथ हेमांगिनी का जडीभूत हृदय और भी अवसन्न हो पड़ा, कलेजा एक दम मुंह को आ गया। उसे चारों ओर केवल अंधकार ही अंधकार मात्र दीख पडने लगा। मौसी हेमांगिनी के मन की बात जानती थी। सतीशचन्द्र के चले जाने के कुछ देर बाद वे आकर हेमांगिनी की बगल में बैठ गयीं। किन्तु एक भी बात उनके मुंह से नहीं निकली। उस समय हेमांगिनी को चेत है या नहीं। वह जाग रही है अथवा सोई है! जीवन मरण के संधि-स्थल में खड़ी हो न मालूम वह क्या स्वप्न देख रही है, कौन जाने।

बाईसवाँ परिच्छेद



उसी दिन रात को सतीशचंद्र कलकत्ता चले गये क्योंकि मधुपुर में रहना उनके लिए असंभव हो गया था। चारों ओर से नाना प्रकार की विभीषिकाओं ने आकर उनके समस्त प्राणों को एकबारगी ही अशान्ति का घर बना डाला था। इसी से थोड़ी शान्ति पाने के लिए प्रथम सुविधा में ही वे मधुपुर छोड़ चले गये। हेमांगिनी ने भी सोचा था कि जहाँ तक शीघ्र संभव

हो वह भी मधुपुर परित्याग कर चली जायगी। किन्तु उसके भाग्य ने ऐसा होने नहीं दिया। दूसरे दिन उसे बड़े जोर का बुखार चढ़ आया। ज्वर चढ़ने के साथ ही साथ वह बकझक भी करने लग गयी। घर के सभी लोग हेमांगिनी के लिए घबड़ा गये। डर से सबों का हृदय बड़ा ही चचल हो उठा। उस समय यदि सुधांशु और उसकी मा वहाँ न होती तो न मालूम क्या हो जाता। इसे केवल एक भगवान ही जान सकते हैं।

अब रमेन्द्र बाबू हैं नहीं कि जो उसकी चिकित्सा करगे। इसी से लाचार रेलवे के डाक्टर बाबू बुलाये गये। वे ही हेमांगिनी की चिकित्सा करने लगे। ज्वर के विकार में बकझक करते समय शायद रमेन्द्र बाबू के खून के सबन्ध में हेमांगिनी कोई बात कह न बैठे और पीछे कोई उसे सुन पाये तो बड़ा अनर्थ होगा। यह सोच मौसी किसी को भी हेमांगिनी के पास जाने नहीं देती थीं। सर्वदा वे या उनके पुत्र सुधांशु ही हेमांगिनी के पास रहा करते अत इस बार मौसी ने एक बड़े ही अनुभवी शाली और वयोवृद्ध जननी के समान काम किया।

एक दिन घर के किसी एक विशेष काम का बन्दोबस्त करने के लिए मौसी अपने पुत्र को हेमांगिनी के पास रख कर रोगिनी के घर से बाहर चली आयीं। उनको वहा से बाहर चली आती देख हेमांगिनी की पुरानी मजदूरनी झट रोगिनी के पास जाकर बैठ गई। हेमांगिनी ज्वर में बेसुध हो पड़ी थी। अत ज्वर के झोंक में धीरे २ वह रमेन्द्रनाथ का नाम लेने लगी। इस घटना से बेचारा सुधांशु बड़ा ही भयभीत हो पड़ा। कारण, हेमांगिनी ज्वर के बकझक में सिर्फ रमेन्द्रनाथ का नाम मात्र ही लेती हो, यह नहीं। साथ साथ उनके खून

के संबंध में हो अनेकों प्रकार के सिर-पैर की बातें उसके कण्ठ से बाहर निकल आ रही थीं। उस समय सुधांशु के मन में हो रहा था कि पुरानी मजदूरनी पास में आ बैठी है। ऐसे समय उसे चले जाने के लिए कहना भी असंभव है और उसके ऊपर किसी प्रकार का विश्वास किया जाय, यह भी अनहोनी बात है। ऐसी अवस्था में जो कुछ न हो जाय थोडा है।

उसी समय घर का काम समाप्त कर मौसी ने घर के भीतर प्रवेश किया। उनको घर के भीतर आती देख पुरानी मजदूरनी झट बोल उठी—"मौसी! बहिन तो ज्वर के झोंक में केवल मात्र रमेन्द्र बाबू का नाम लेकर अट सट बक रही हैं। बाबू के साथ न मालूम कैसा डाक्टर बाबू का भारी झगड़ा था। हाँ, माँजी! बार २ बहिन डाक्टर बाबू का नाम क्यों ले रही हैं। सत्य ही क्या डाक्टर बाबू के साथ बाबू जी का भारी झगड़ा था?"

दासी की बातों से मौसी बड़ी ही विचलित हो उठी थीं। किन्तु सुशिक्षा प्रवीण गृहिणी की भाँति मन का भाव मनही में दबा कर वे बोलीं—"डाक्टर बाबू यहाँ से होकर जाने के बाद ही मारे गये थे। इसी लिये ही हेम ज्वर की तरंग में उनका नाम बार २ लेती है ऐसी अवस्था में ज्वर के झोंक में हेम जो डाक्टर बाबू का नाम लेती है, इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है। इसके सिवा मनुष्य ज्वर की तरंग में न मालूम कितने ही प्रकार के बक-झक किया करते हैं। उन सब बातों का क्या कोई अर्थ होता है? ज्वर के प्रलाप में प्राय लोग इसी प्रकार बका करते हैं। सतीश ने कहा है, इस बार जो डाक्टर बाबू के खूनी को पकडा देगा उसे वे पांच हजार रुपया पुरस्कार देंगे। हम लोगों का विश्वास है कि इस बार खूनी शीघ्र ही गिरफ्तार हो जायगा।"

दासी ज़रा मुँह बना कर बोली—"सभी लोग ऐसा ही कहते हैं। निश्चय ही उन्हीं दुसाधों के दल में से किसी एक का काम है। अच्छा मासी तुम्हारा मन क्या कहता है ?"

मौसी ने उसकी हाँ में हाँ मिला कर कहा—"मेरा भी मन यही कहता है। ये लोग न कर सकें, ऐसा कोई भी काम पृथ्वी में नहीं है।"

कुछ देर तक दोनों में से किसी के भी मुँह से कोई बात नहीं निकली। सहसा दासी ने फिर पूछा—"अच्छा मौसी बहिन की तबीयत इतनी खराब है और बाबू कलकत्ते रहते हैं। वे अभी तक भी नहीं आये ! बड़ी ही आश्चर्य की बात है ?"

दासी की बातों के उत्तर में चतुर गृहिणी मौसी झट बोल उठी—"अरे कैसे आयें। तेरे बाबू को तो बहिन की बीमारी की खबर ही नहीं मिली है।"

दासी बड़ी ही आश्चर्यित होकर बोली—"खबर नहीं मिली ? यह कैसी बात ?"

मौसी गभीर स्वर में बोली—"अभी तो उन्हें खबर देने से कोई फल होगा नहीं। व्यर्थ उनके मनको दुख मात्र होगा। वे और भी अधिक घबड़ा जायँगे इसी से मैंने सुधांशु को उन्हें कोई खबर देने के लिए मना कर दिया है। हेम की तबीयत कुछ अच्छी होते ही उन्हें समाचार लिख भेजूँगी।"

मौसी आते ही हेमांगिनी के बगल में बैठी हुई थी इसी से लाचार दासी कुछ देर तक चुप लगाये खड़ी रही इसके बाद उठकर वहाँ से अपने काम में लग गई।

मौसी पुत्र की ओर देखकर बोली— 'मामला दिन पर दिन जैसा गहरा होता जा रहा है उससे मुझे और कोई भरोसा नहीं है। मारे भय के छाती मेरी दिन-रात धड़ धड़ किया करती है। सतीश—"

सुधांशु चुपचाप बैठ एक अंग्रेजी उपन्यास पढ़ रहा था। उसने अपनी माँ को बाधा देकर कहा—"माँ! तुम बुद्धिमती हो। समझदार हो। कोई बात तुमसे छिपी नहीं है। सब समझती बूझती हो। तब मैं समझता हूँ जहां तक हो इस बात की चर्चा न करना ही हम लोगों के लिए अच्छा है जो होना है वह होगा ही। भय या चिन्ता करना बिल्कुल व्यर्थ है।

मौसी एक लंबी साँस लेकर चुपचाप बैठी रही। सुधांशु फिर से उपन्यास पढ़ने में तन्मय हो गया।

× × × ×

हेमागिनी के ज्वर की अवस्था जैसी दिखाई पड़ रही थी उससे उसके जीने की कोई आशा नहीं थी। क्योंकि डाक्टर कह गये हैं कि यह भयंकर दिमाग की खराबी का ज्वर है। इससे रक्षा पाना बड़ा-ही कठिन है, लेकिन जिसकी परमायु है उसको कुछ नहीं हो सकता। अतः इसी सिद्धान्त के अनुसार हेमागिनी उस भयंकर ज्वर से बच गई। धीरे २ दिन पर दिन वह अच्छी होने लगी। वह अभी एक दम से ही अच्छी तरह भली चंगी नहीं हो गयी है। तोभी आज चार पांच दिन से उसे ज्वर नहीं आता। वैसे ही समय वह मौसी से रोते २ बोली—"मौसी! मुझे अब यहाँ से ले चलो। यहाँ रहने से मेरी जिन्दगी बच नहीं सकेगी। वही—वही खून मानो रात दिन मेरी आँखों के सामने नाच रहा है। मौसी मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ। जितनी जल्दी तुमसे हो सके मुझे यहाँ से ले चलो।"

मौसी बड़े ही कोमल स्वर में बोली—"छिः बेटी! व्यर्थ इस प्रकार क्यों घबड़ा रही हो? ऐसा करने से बीमारी और भी अधिक बढ़ जायगी। तुम्हारा रोग थोड़ा अच्छा होते ही हम लोग यहाँ से चले जायेंगे।"

इसके बाद और भी कई एक दिन बीत गये। हेमांगिनी पथ्य पा रही है। वह दिन पर दिन अच्छा होती जा रही है। अब इस बार उन लोगों के मधुपुर से चले जाने का बन्दोबस्त होने लगा। हेमांगिनी ने मौसी को बुलाकर कहा—"चलो" मौसी ने जरा मुँह को भारी बनाकर कहा—'डाक्टर कह गये हैं कि अभी भी तुम्हारी अवस्था रेल की यात्रा के लायक नहीं हुई है। और भी दो चार दिन तुम्हारा यहाँ रहना बहुत ही उचित है।"

लाचार और भी कई एक दिन हेमांगिनी को मधुपुर रह जाने के लिए बाध्य होना पड़ा। वह मधुपुर को छोड़ जाने के लिए बहुत ही व्याकुल हो उठी थी। क्योंकि यहाँ रहने से बीच २ में रमेन्द्र के खून की बात उसके मन के भीतर आन्दोलन मचा उठती है इस से वह उन्मादिनी की भाँति होकर घबड़ा उठती है। हेमांगिनी अच्छी तरह जानती थी कि यहाँ से चल जाने से भी शान्ति नहीं पायगी। कहीं जाने पर भी उसे शान्ति पाने की आशा नहीं है। बस दारुण यन्त्रणा और बिभीषिकाओं के बीच रहकर अशान्ति के साथ उसे जीवन बिताना होगा। न मालूम कौन दिन सतीशचन्द्र पकड़े जायँ—कौन दिन उनका बिचार हो। न मालूम कौन दिन उन्हें फाँसी के तख्ते पर लटकना पड़े इसी भय और सन्देह में इसी भीषण आतंक में, न मालूम कितने दिन उसे जीवन के दिन बिताना पड़े इसका कोई ठिकाना नहीं। उसके बाद, सभी उसे अंगुली दिखाकर कहेंगे कि यह देखो, इसी के स्वामी को खून के अपराध में फाँसी हुयी है। फिर पुत्रकन्या को दिखा कर कहेंगे, इन्हीं के बाप को फाँसी हुयी। हाय न मालूम उसके भाग्य में कितने दिन तक इस असहनीय यन्त्रणाओं का भोग भोगना बदा है!

यह सब तो हुयी बाहर की बात। हेमागिनी के हृदय अन्तर में जो असह्य यन्त्रणा हो रही है, उसका वर्णन करना बहुत ही कठिन है। जिसकी देह दुरारोग्य व्याधि के कारण एक दम विपाक्त होकर दुर्दमनीय ज्वाला से जरजर हो रही है। जिस के लिए डाक्टर की एकमात्र व्यवस्था यही रही हो कि तपाये हुए लाल २ लोहे के अगारे से छेदन करने के सिवाय उसकी पीडा की और कोई चिकित्सा नहीं वही रोगी ही सिर्फ हेमागिनी की हृदय यन्त्रणा समझ सकता है। अतर्दाहिनी यह यन्त्रणा-पल २ में मर्मस्थानों को जलाकर राख बना डालती है किन्तु बाहर कुछ भी नहीं दिखाई देती। अग्नि का ताप और ज्वाला मालूम होता है इस अन्तर्दाह की तुलना में केवल चन्दन का लेपमात्र है। हेमागिनी समझ गयी है कि वह एक प्रकार से अपनी आँखों से स्पष्ट प्रमाण पा गयी है कि उसके ही स्वामी खूनी हैं। वे ही इस निन्दनीय गर्हित और पशुवत आचरण को कर बैठे हैं। साथ ही उनकी बातों से यह स्पष्ट समझ में आ जाता है कि व इसके लिए अनुतप्त दुखित, यही क्यों, लज्जित मात्र भी नहीं हुए हैं। उसके स्वामी उसके इहकाल-परकाल के देवता क्या ऐसे ही पशु-प्रकृति के हैं? ओह! नहीं, अब और अधिक वह इस बात को सोच नहीं सकी। उसका माथा चक्कर खाने लगा। उसकी चेतना एकबारगी ही लुप्त हो गयी। फिर इसके बाद प्रेम और विश्वास आकर उसको प्रबोध देते—अरी! यह तू क्या सोच रही है! ऐसा भी क्या कभी हो सकता है? नहीं २! सतीशचन्द्र ने एक उच्च कुल में जन्म लिया है। वे एक सुविद्वान् सच्चरित्र और सुविवेचक हैं। समाज में सर्व श्रेष्ठ और सब के ऊपर तुम्हारा स्वामी पतिदेव हैं। तुमको अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं। उनसे भला

ऐसा गर्हित और नारकीय काम का होना क्या कभी सम्भव है? यह बात! बात ही क्यों ऐसी भावना तक भी तुम्हारे चित्त में जाग उठना क्या उचित है? निश्चय तुम्हारी आँखों ने तुम्हें धोखा दी है। तुम्हें भूल में डाल कर तुम्हारे चित्त को डाँवाडोल कर दिया है ऐसे ही समय फिर सन्देह ने हजार मुंह से आकर उसके प्रेम और विश्वास की जड़ में कुल्हाड़ी जमा दी। बिचारी हेमागिनी इसी निदारुण आन्तरिक देवासुर द्वन्द्व से बड़ी ही पीड़िता हो गयी है। वह इस समय प्रचण्ड वर्षा से विक्षुब्ध उत्ताल तरंग-माला से भरे हुए महासागर की गोद में चित्त पड़ी है।

तेईसवां परिच्छेद

मौसी स्नान कर पूजा करने जा रही थी कि ऐसे ही समय एक नौकर ने आकर खबर दी कि प्रफुल्लकुमार बाबू आपसे एक बार मिलना चाहते हैं।

नौकर की इस बात से वह मानों कुछ अवाक् हो गयी थीं। वह विस्मित भाव से बोल उठीं—"हमसे मिलना चाहते हैं। कौन प्रफुल्ल बाबू!"

नौकर ने सिर हिलाकर उत्तर दिया—"जी हाँ! शायद कोई विशेष बात है।"

विशेष बात है! उनकी छाती भीतर ही भीतर धड़ २ कर काँप उठी। वह अवाक् हो नौकर के मुँह की ओर देख बोली—"हमसे उन्हें कौन सी ऐसी बात कहनी है! अच्छा जा कह दे, मौसी आ रही हैं।"

नौकर चला गया। मौसी शंकित हृदय से प्रफुल्ल बाबू के सामने जा उपस्थित हुयीं। प्रफुल्लकुमार बाबू बैठक के भीतर एक कुर्सी पर दखल जमाकर, बैठे हुए थे। मौसी को घर के भीतर प्रवेश करते देख बोले—"सुना है कि सतीश बाबू की स्त्री इस समय अच्छी हैं। इसी लिये एक समाचार उन्हें देने को आया हूँ। किन्तु ऐसी अवस्था में उनको कहना उचित है या नहीं, इसी को पूछने के लिए आप को बुलाया है।"

प्रफुल्लकुमार की इन बातों से मौसी का हृदय और भी थर २ कांप उठा। उन्होंने मृदु स्वर में पूछी—"कैसी खबर ? कोई नयी खबर है—सतीश के—"

प्रफुल्ल बाबू सिर हिलाकर बोले—"नहीं २ वह सब कुछ नहीं है। इतने दिन के बाद आज रमेन्द्र का खूनी पकड़ा गया है।"

मौसी को उन्मुक्त नेत्रों में अन्धकार दीख पड़ा। तब क्या सतीश को पुलिस ने पकड़ लिया है। उनके मुह से कोई बात बाहर नहीं निकली। वे अचल पलक शून्य दृष्टि से एक टक प्रफुल्लकुमार के मुह की ओर देखती रहीं। प्रफुल्लकुमार कहने लगे—'यह खबर मैं स्वय ही देने आया हूँ। सतीश बाबू ने जो पाच हजार रुपया इनाम देने को कहा था, उसी से ही खूनी पकड़ा गया है।"

मौसी का कंठ स्वर काप उठा! उन्होंने शंकाकुल हृदय से प्रफुल्ल बाबू से पूछा—"यह खूनी कैसे पकड़ा गया ?"

प्र०—"सतीश बाबू यहा से कलकत्ता पहुँचते ही वहा के पुलिस जासूस विभाग के सब से बड़े साहब से जाकर मिले और रमेन्द्र के खून सम्बधी सारी बात सुना कर बोले कि जो शख्स इस खूनी को पकड़ा दे सकेगा उसको वे पाच हजार रुपया

इनाम देंगे। जासूस अफसर ने उनके मुंह से सारी घटना सुन एक सुचतुर जासूस कर्मचारी को खूनी को पकड़ने के लिए यहां भेज दिया। यहां आने के कुछ दिन बाद ही पता लगा कर उन्होंने रमेन्द्र के खूनी को गिरफ्तार कर लिया है। खूनी वही दुसाधों के दल का एक आदमी, नाम उसका दामन है। और दो आदमी जब मारवाड़ी की हत्या कर उसके रुपये पैसे हरण करने के लिए वहीं रास्ते के बगल में जा छिपे थे। उसी समय दामन स्वयं स्वतन्त्र रूप से लूट मार करने के लिए डाक्टर पर आक्रमण कर बैठा तब से बदमाश वहीं छिपा बैठा था।"

प्रफुल्लकुमार की बातों पर मौसी सम्पूर्ण रूप से विश्वास नहीं कर सकी। मानो वे मन ही मन समझ गयीं कि इसमें पुलिस ने बिल्कुल ही गलती से दामन को पकड़ा है। रमेन्द्र बाबू का खूनी दामन नहीं है। अतः उन्होंने कम्पित स्वर से फिर पूछा—"पुलिस ने कैसे जाना कि यही दामन ही रमेन्द्र बाबू का खूनी है?"

प्र०—"उसी पुलिस जासूस ने इन्हीं दुसाधों के दल में से एक आदमी को ढूंढ कर बाहर किया और उसे एक हजार रुपया इनाम देने का लालच दिखाया। रुपये की लालच में उसने जासूस को सारी बातें कह दीं। यह आदमी अभी बिल्कुल ही छोकड़ा है। यद्यपि चोरों के दल में था सही तथापि अभी वह उस काम में पक्का नहीं हो सका है। उमर अभी उसकी बहुत ही कम है। सोलह-सत्रह से अधिक नहीं है। दामन कहाँ छिपा हुआ है इसका भी पता उसी ने पुलिस को दिया। इसके बाद पुलिस ने जाकर दामन को उसी जगह गिरफ्तार कर लिया।"

इतनी बातों पर भी उनका मन इस बात को मानने को

आदमी ने पीछे से आकर मुझ पर हमला किया। मैं भी अपने को बचाने के लिए उस पर टूट पड़ा। मारामारी में उस आदमी की लाठी टूट गयी। जब मैं ने देखा कि बल में मैं उससे पार नहीं पा सकूंगा तब उसी समय भाग कर अन्धकार में गायब हो गया।"

तब हाकिम ने उससे पूछा—"वह कौन आदमी है? यदि तुम उसे देखपाओ तो पहचान सकोगे?"

दामन ने सिर हिलाकर कहा—"नहीं हजूर। उस दिन रात को बड़ा ही भयकर अधकार था। इससे मैं अच्छी तरह उसे देख नहीं सका। तब भी इतना अच्छी तरह समझ गया था कि वह एक गाली भद्र सज्जन हैं।"

सब बयान सुनकर मजिस्ट्रेट ने दामन को दौरा सुपुर्द कर दिया। दामन की इन बातो से सतीशचंद्र के मकान में अनेकों लोग अनेकों प्रकार की बातें लेकर आ पहुँचे। किन्तु तो भी मौसी दामन को खूनी कह कर समझ न सकी। यह विश्वास करना भी बिल्कुल ही असंभव था। उन्होंने घर की पुरानी दासी को बुलाकर कहा— 'देखो अभी इन सब बातों को हेम के आगे न कहना। अभी उसकी हालत इन सब बातों के सुनने योग्य नहीं है।"

किन्तु दासी ने कुछ और ही रूप में समझा। वह सोचने लगी—"हेमांगिनी रमेन्द्र बाबू का बड़ा ही यत्न और भक्ति करती थी। उनका खूनी पकड़ा गया है सुन वह संतुष्ट होगी।" इसी कारण मौसी की आदेश पर उसने कान नहीं दिया। अतः हेमांगिनी से सारी बातें कहने का वह मौका ढूँढने लगी।

चौबीसवां परिच्छेद

आज रात की गाडी से हेमागिनी कलकत्ता जायगी। सवेरे ही से नौकर चाकर दास दासियों ने माल असवाब सब बांध छाद करना आरभ कर दिया है। यद्यपि हेमागिनी अभी दुर्बल है तथापि वह उठकर बैठी है। मालूम होता है यहा से चले जा सकने से वह कुछ शान्ति पायगी। यहा की हवा मे मानों उसकी साँस रुक कर दम घुटा आता है।

पुरानी दासी को बुलाकर हेमागिनी ने पूछा—"कहो सब बाधना छादना समाप्त हो गया ?"

दासी—हाँ दोपहर के भीतर ही सब बाधना छांदना खतम, हो जायगा। तो भी—

दासी बात कहते २ बीच ही में रुक गयी। हेमागिनी उसे इस तरह चुप होते देख उससे जरा विचलित होकर पूछा—"तौभी क्या ?—"

दासी ने जरा गभीर स्वर में कहा—"वह आदमी पकड़ा गया है।"

हेमागिनी ने दासी के मुह की ओर देख कर पूछा—"कौन आदमी ?"

दासी ने उत्तर दिया—"खूनी! जिस ने डाक्टर बाबू का खून किया था।"

हेमागिनी बिल्कुल ही अस्पष्ट स्वर में बोली—"कौन—कौन—कौन है वह ?"

दासी—"एक दुसाध। नाम उसका दामन है। उसने खून करना खुद स्वीकार कर लिया है। उसने सिर पर लाठी मार कर डाक्टर बाबू की हत्या की थी।"

हेमांगिनी बड़ी ही विचलित स्वर में बोल उठी—"मौसी! को बुला दे।"

मौसी वहां चली आयीं। हेमांगिनी ने मौसी को जो कुछ हुआ है सब सुनाने के लिए आग्रह किया। जो कुछ हुआ था रुक २ कर सारी मौसी ने कहना आरम्भ किया। इसी समय सहसा हेमांगिनी आर्तनाद कर चिल्ला उठी। देखा द्वार पर खड़े सतीशचन्द्र हैं।

उन्हें देखते ही मालूम होता है वे अभी २ सीधे ट्रेन से उतर कर चले आ रहे हैं। उनके कपड़े बिल्कुल मैले, धूल में सने हुए और वे तरतीब अङ्ग में पड़े हैं। मानों उनकी इस समय पागलों की सी दशा हो रही है। वे हेमांगिनी के निकट आकर बोले—"हेम! अब तो तुम्हें विश्वास हो गया न?"

हेमांगिनी क्या विश्वास करेगी कि वे खूनी नहीं, दूसरा ही कोई खूनी है। वह स्वामी के मुख की ओर विपण्ण विस्फुरित नेत्रों से ताकती रही। ओह! यह कैसी दृष्टि है। देखने से जान पड़ता है कि मानों एक दारुण आर्तनाद उन्हीं दोनों नेत्रों को विदीर्ण कर अभी बाहर निकल रही हैं।

मौसी बोली—"सतीश! सतीश! तू ही, कह—तू ही कह कि—"

—"मौसी माँ! क्या तुम भी मुझे ऐसा पाखण्डी मन में समझती हो? नहीं, मौसी! यदि थोड़ा कुछ और पहले घटना स्थल पर पहुँच जा सकता तो दुसाध कभी रमेन्द्र का खून न कर सकता। मेरे डर से ही वह दुसाध भाग गया था। किन्तु अफसोस। सब व्यर्थ हुआ मौसी! हेम से मुझे कुछ बातें करनी हैं। जरा तुम बगलवाले घर में चली जाओ!"

मौसी सतीश के ऊपर अपने लोगों के निज का अन्याय

सन्देह से विशेष दुखित हो धीरे २ उठ कर उस घर से बाहर चली गयीं। सतीशचन्द्र स्त्री के सामने चुप चाप खड़े रहे।

तब हेमाङ्गिनी सूखे कंठ से बोली—

"यह क्या बताओ सत्य बात है?"

सती०—"इस बात को क्या फिर पूछ रही हो?"

"तब—तब इस बात को तुमने मुझसे पहले ही क्यों नहीं कहा?"

"तुम्हारी इस बात का उत्तर देने के पहले मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ। बताओ, यदि उस समय यह बात मैं तुमसे कहता तो क्या तुम उस समय मेरी बातों का विश्वास करती?"

हेमाङ्गिनी समझ गयी बात बहुत ठीक है। इसके पहले उसके हृदय में जिस कठिन सन्देह ने जड़ जमा लिया था वह क्या स्वामी के हजारों प्रकार की कसमें खाकर अस्वीकार करने पर भी हृदय से दूर होता?

सतीशचन्द्र बोले—"मैं जानता था कि उस समय सारी बात खोलकर साफ २ कह देने पर भी तुम्हारे मन से सन्देह कभी नहीं जायगा। इसी लिए उस समय मैंने तुमसे कोई बात कही नहीं। केवल इतना ही कहा था कि हेम! भ्रम में पड़ कर विश्वास को खो न डालना। उसके बाद तुम्हें यहाँ छोड़ कर मैं असली खूनी जिसमें गिरफ्तार हो इसी चेष्टा में वहाँ पाँच हजार इनाम देने की बात कह कर कलकत्ता चला गया और वहाँ के डिटेक्टिव पुलिस को इसकी रिपोर्ट देकर सारी बातें जना दीं। इसके बाद मैंने उनसे सहायता मागी और सहर्ष उन्होंने सहायता देना स्वीकार कर एक सुचतुर जासूस इस काम में तैनात भी कर दिया। मैंने तुम्हारे पागलपन और प्रलाप की बातों पर कान नहीं दिया, तुम्हारी

पच्चीसवाँ परिच्छेद

बहुत देर तक पति की गोद में अच्छी तरह आनन्दाश्रुवहा लेने के बाद वह कुछ स्वस्थ हुई। इसके बाद पहले की भाँति व्यग्र कण्ठ से स्वामी से बोली—"क्यों तुमने यह सब बातें पहले ही मुझसे नहीं कहीं ? रमेन्द्रबाबू की अवस्था देख आकर उसी समय क्यो नहीं तुमने सबों को वह बातें बता दीं ? सारी बातें स्पष्ट तुमने सबों को क्यों नहीं कह दीं ? क्यों ऐसी निष्ठुर उदासीनता दिखाई ? यदि तुम ऐसा करते तो मैं इतना कष्ट कभी न पाती। अपना हृदय अपने ही खुद उखाड़कर फेंकने का प्रयास कितना कठिन होता है, उसे तुम लोग समझ नहीं सकोगे।"

सतीशचन्द्र बोले—"क्यो मैंने सब बातें नहीं कहीं। इसको मैं कहता हूँ। सुनो मुझ पर लोग सन्देह करेंगे—इसी भय से सब बातें कहने का मुझे साहस नहीं हुआ। जिस समय रास्ते में माली ने मुझसे खून की बात कही उस समय मेरे मन में हुआ था कि वह निश्चय ही रमेन्द्र की हत्या की बात कह रहा है। इसी से खानसामा के मारवाड़ी के खून की बात कहने पर मेरे मन में हुआ था कि अवश्य इसके सुनने में भूल हुई है। मारवाड़ी का खून नहीं हुआ है बल्कि रमेन्द्रनाथ ही दुष्टों द्वारा मारे गये हैं।"

"क्यों तुमने ऐसा किया ? इसी से हम लोग भी तुम पर ही सन्देह कर रहे थे। मुझे कितना कष्ट भोगना पड़ा है यह तुम जान नहीं सकोगे—तुम मेरे स्वामी देवता इस काल परकाल के आश्रयदाता धर्म अर्थ काम मोक्ष सब कुछ मेरे तुम्हीं हो।

तुमको मन में खूनी हत्यारा समझने के पहले ही मेरा मर जाना कहीं सहस्रगुणा अधिक अच्छा है। किन्तु यह प्रशस्त राह भी मेरा बच्चों क लिए बन्द है। ओह! मेरी कैसी अवस्था हो गई थी उसका अब और मैं क्या बयान करूँ। मैं जीते हुए भी मरी के समान, चेत होते हुए भी अचेत बेसुध हो गयी थी। जिस पर पति सन्देह करे जो अपराधिनी समझी जावे उसका जीवन कैसा भीषण और भार है इसको कौन समझेगा ?"

इतना कहते-कहते हेमागिनी पुनः रो पड़ी।

सतीशचन्द्र बोले—"सब जानता हूँ। किन्तु उपाय नहीं था। जब तक असल खूनी गिरफ्तार न हो जाय तब तक और तो क्या तुम भी मेरी बातों पर विश्वास न करतीं। इसीसे लाचार मुझे चुप रह जाना पड़ा था। अब तो तुमने सब सुन लिया। क्या अब भी कुछ सन्देह है ?"

"नहीं नहीं। मैं जी गयी। मेरी रक्षा करो। मैं अवला मूर्ख निरक्षर हूँ। तुम्हारी ही गोद का आश्रय इसको है इसको अपनी सहधर्मिणी समझ क्षमा करो।"

सतीशचन्द्र ने अपने दोनों हाथो से हेमागिनी के आसुओ से तर मुखमण्डल को पकड़कर ऊपर उठाया और सादर प्रेम से चुम्बन कर उसके आँसू पोछे। बार २ हेमागिनी को गले लगाकर उसके गोरे गोर गालों का चुम्बन लेने पर भी उन्हें तृप्ति नहीं हुई। कुछ देर तक दोनों में किसी को भी बात करने की ताकत नही थी। आखिर में सतीश ने पूछा—"क्या आज ही यहाँ से चले जाने का निश्चय कर लिया ?"

"हाँ, रात की गाड़ी से जाने का स्थिर किया है।"

"तुम्हारा शरीर अभी भी अच्छा नही है। यदि कुछ दिन यहाँ और रह जाओगे तो तुम्हारा शरीर बिल्कुल ठीक हो जायगा।



' नहीं नहीं मैं जो गई। मेरी रक्षा करो मैं अबला मूर्ख निरक्षर हूं। इसको अपनी सहधर्मिणी समझ क्षमा करो।"

तुमको मन में खूनी हत्यारा समझने के पहले ही मेरा मर जाना कहीं सहस्रगुणा अधिक अच्छा है। किन्तु यह प्रशस्त राह भी मेरा बच्चों के लिए बन्द है। ओह! मेरी कैसी अवस्था हो गई थी उसका अब और मैं क्या बयान करूँ। मैं जीते हुए भी मरी के समान, चेत होते हुए भी अचेत बेसुध हो गयी थी। जिस पर पति सन्देह करे जो अपराधिनी समझी जावे उसका जीवन कैसा भीषण और भार है इसको कौन समझेगा?"

इतना कहते-कहते हेमागिनी पुन रो पड़ी।

सतीशचन्द्र बोले—"सब जानता हूँ। किन्तु उपाय नहीं था। जब तक असल खूनी गिरफ्तार न हो जाय तब तक और तो क्या तुम भी मेरी बातों पर विश्वास न करतीं। इसीसे लाचार मुझे चुप रह जाना पड़ा था। अब तो तुमने सब सुन लिया। क्या अब भी कुछ सन्देह है?"

'नहीं नहीं। मैं जी गयी। मेरी रक्षा करो। मैं अबला मूर्ख निरक्षर हूँ। तुम्हारी ही गोद का आश्रय इसको है इसको अपनी सहधर्मिणी समझ क्षमा करो।"

सतीशचन्द्र ने अपने दोनों हाथों से हेमागिनी के आसुओं से तर मुखमण्डल को पकड़कर ऊपर उठाया और सादर प्रेम से चुम्बन कर उसके आँसू पोंछे। बार २ हेमागिनी को गले लगाकर उसके गोरे गोरे गालों का चुम्बन लेने पर भी उन्हें तृप्ति नहीं हुई। कुछ देर तक दोनों में किसी को भी बात करने की ताकत नहीं थी। आखिर में सतीश ने पूछा,—"क्या आज ही यहाँ से चले जाने का निश्चय कर लिया?"

"हाँ, रात की गाड़ी से जाने का स्थिर किया है।"

"तुम्हारा शरीर अभी भी अच्छा नहीं है। यदि कुछ दिन यहाँ और रह जाओगी तो तुम्हारा शरीर बिल्कुल ठीक हो जायगा।

तब फिर सब लोग यहाँ से कलकत्ता लौट जायेंगे। कहो तुम्हारी क्या राय है ?"

"तुम जो कहो मेरे लिये मान्य है इस समय सब स्थान मेरे लिये स्वर्ग समान मालूम दे रहा है। क्यों कि पवित्र पति की गोद में मुझे पुनः आश्रय मिला है। शायद तुमने सुना न होगा। मुझे ज्वर-विकार हो गया था।"

"मैं सब जानता हूँ। तुम कैसी हो इसकी मुझे रोज खबर मिलती थी।"

"कौन तुम्हे खबर देता था ? मौसी तो कहती थीं कि उन्होंने तुम्हें कोई भी पत्र नहीं लिखा।"

"डाक्टरबाबू रोज खबर भेजते थे। तुम्हारी बीमारी बढते ही मैं उसी समय दौड़ा चला आता लेकिन डाक्टर बाबू रोज लिख भेजते कि यद्यपि रोग भारी है तथापि भय की कोई बात नहीं है। तुम्हारे आने की आवश्यकता नहीं है। तुम क्या समझती थीं कि मैं तुम्हे भूल गया हू ?"

"नहीं २ ऐसा तो मन में मैंने कभी खयाल नहीं किया। किन्तु हमारे हृदय की बात तुम समझे नहीं हो। जिस स्थान पर मेरे प्राणों के देवता विराजमान हैं वहा रक्त बहानेवाला निष्ठुर खूनी अपना अड्डा जमायेगा। देवताओं के मन्दिर में पिचाश आकर बैठेगा। आह! हृदय के इस चिन्ता-सागर की तुमुल झड़ी बड़ी ही भीषण है जाने दो। अब उन सब पापो की बातों की कोई आवश्यकता नहीं है। कर्म-फल सभी को भोगना पडता है। मैंने भी भोग लिया। तब तुम ने भी बिना विचारे बड़े ही अन्याय के साथ मेरे ऊपर सदेह किया था ?"

"हाँ, ठीक है, स्वीकार करता हूँ। किन्तु अब वह सदेह मन से एक दम से ही दूर हो गया है। अब कभी यह राक्षस रूपी

देह मेरे हृदय के भीतर घुस सकता इसकी कोई संभावना नहीं है। देखो, स्वामी और स्त्री एक हैं। शरीर दो होने पर दोनों का हृदय एक है, दोनों अभिन्न हृदय हैं। सम्पद, विपद सुख दुख सभी समय दम्पति अद्वैत भाव से एक दूसरे के साथ लिप्त रहते हैं। स्वामी और स्त्री का अलग काम या चिन्ता नहीं है। यह बात मेरी नस २ में अच्छी तरह समायी हुई है। इस विषय को मैं भली प्रकार जानता हूं। परस्पर का आत्म-गोपन ही गृह के दाम्पत्य-जीवन में दारुण हलाहल पैदा कर देता है। और उसी से बहुत शीघ्र सारा विश्व संसार नाश को प्राप्त हो जाता है। तुम मेरी पत्नी, इहकाल परकाल की अर्द्धांगिनी, सहचरी और सहधर्मिणी हो। तुम पर सन्देह करने से ही हम लोगों का सर्वनाश हो रहा था। मेरी बड़ी साध की सजायी हुयी सुन्दर सोने की गृहस्थी एकबारगी ही क्षार खार होकर मिट्टी में मिलने जा रही थी।"

"भगवान साक्षी हैं—"

सतीशचन्द्र ने बीच ही में रोककर कहा—"और पाँच हजार हो क्यों यदि सारी विषय सम्पत्ति देकर भी रमेन्द्र बाबू वापस लौट आवें तो वह भी करने को मैं तइयार हूँ।"

"उस रात को जो देखा था वह सब क्या तुम पुलिसों से नहीं कहोगे ?"

"नहीं हेम! इन सब बातों के कहने में कोई लाभ नहीं है। उस मनुष्य को मैं अंधकार में अच्छी तरह देख नहीं सका। जो मनुष्य पकड़ा गया है वही रमेन्द्र का खूनी है, इसे मैं अच्छी तरह शपथ खाकर कह नहीं सकूँगा। मैंने कलकत्ते की पुलिस को कह दिया है। और यहा उसी बात को कह कर तूल बढ़ाने से कोई फायदा नहीं है। जो कुछ हम लोगों ने जाना

वस यही यथेष्ट है, और किसी के जानने सुनने ~
श्यकता नहीं है।"

इसी समय बच्चा वहां दौड़ा हुआ चला आया
बाबा !" कह कर सतीशचन्द्र के गले से लिपट गया
ने प्रेम से गोद में उठा कर उसका चुम्बन किया।

बच्चे के पीछे २ घर की पुरानी दासी आ
लौट आये हैं यह वह नहीं जानती। इसी कारण
होकर उनकी ओर ताकती रही।

हेमागिनी ने कहा—"दासी ! बाबू कहते हैं—

सतीशचन्द्र बीच ही में बोले—"हां अभी भी
अच्छा नहीं है। और भी कुछ दिन तक उसका य-
जरूरी है। जाओ माल असवाव सब खोल कर
रखने कह दो।"

उपसंहार



ज सतीशचन्द्र के घर में चहल
तय्यारी है। आज हेमागिनी
होने के उपलक्ष में लोगों
है। सतीशचंद्र मधुपुरवासी
पहचानी और मित्रगण अपने
उनके घर निमन्त्रित होकर
प्रदोष को प्रीतिभोज होगा। स्टेशन के स्टाफों के
कलकत्ते के उन प्रसिद्ध पुलिस जासूस महाशय
उत्सव में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण देकर
बुला भेजा है। हेमागिनी अभी भी सम्पूर्ण रु

लाभ नहीं कर सकी है। रोगमुक्त हो जाने पर भी कमजोरी अधिक है तो भी आनन्द की उमंग में शय्या त्याग वह इधर उधर देख भाल कर रही है। मौसी और सुधाश के साथ वह भी सर्वत्र सब विषय में नाना प्रकार के आदेश उपदेश दे रही है। आज उसके प्राण उत्साह पूर्ण हैं। हृदय प्रफुल्ल है। सुन्दर मुखमंडल पूर्णमासी के पूर्ण चन्द्र की भाँति उज्ज्वल और हास्य मय है। बीच २ में कभी २ थकावट या ग्लानि मालूम होने पर हाल घर में जाकर सोफे पर लेट विश्राम कर लेती। धीरे धीरे सन्ध्या हुई। ठीक इसी समय सतीशचन्द्र से पहले किए हुए बंदोबस्त के मुताबिक घर में सर्वत्र रोशनी जगमगा उठी। अत मकान साज सजावट और रोशनी से दिन की तरह झकाझक होकर शोभा पूर्ण हो उठा क्योंकि आज की सारी तय्यारी करने में सतीशचन्द्र और घर के सभी लोग आनन्द और प्रेम में भरे हुए अपनी रुचि के अनुसार तन्मय होकर प्राणपण से लगे हुए थे। घर के सभी लोगों का हृदय आनन्द पर्ण है। मुंह में प्रेम का मीठी २ बातें हैं। कोठरी में हेमांगिनी को अकेला देखकर सतीशचन्द्र उसके पास आकर बैठ गये। उसे देखते ही मालूम होता है सतीश बाबू का हृदय आनन्द के आवेग से नाच उठता है। दोनों नेत्र प्रेम पूरित और मुंह में हसी थिरक उठती है।

वे बोले—"आज बड़े ही आनन्द का दिन है हेम! आज मानो हम पुन' विवाह के रात कोहबर में अपनी प्राणप्रिया नयी दूल्हिन के साथ केलि रस विहार करने जा रहे हैं। किन्तु—"

"किन्तु क्या? अब और किन्तु 'शब्द मुंह से न निकालो मेरा मन न मालूम भीतर से कैसा हो उठता है। एक बार इसी किन्तु के लिए तुमसे एक बात छिपाने में न मालूम कितना कठिन भीषण दण्ड भोग भोगना पड़ा।"

"ठीक बात है हेम! हम दोनों में परस्पर कोई भी बात छिपाने की नहीं है। चोरी लुका हो सुधामय दाम्पत्य जीवन में महा हलाहल विष ढाल देती है। मैं यह अच्छी तरह समझ गया हूँ—नस २ में यह बात मेरे भले भांति बैठ गयी है। मेरे किन्तु कहने का यह मतलब नहीं है। मैं यह कहने जा रहा था कि हम लोगों के इसी प्रीति भोज में डाक्टर रमेन्द्रनाथ यदि उपस्थित होते तो और न मालूम कितना आनन्द होता। रमेन्द्र बाबू ने हम लोगों के लिए कितना परिश्रम किया है यदि रमेन्द्र बाबू उस प्रकार प्राण देकर चिकित्सा न करते तो क्या बच्चे को उस भयकर रोग से हम लोग बचा सकते और मैं ईर्षा में अन्धा होकर उनके सारे कामों में दोष निकाल बैठता था। उनके पवित्र हृदय के संबंध में न मालूम कितने ही कुविचार और बुरे भाव को मैंने हृदय में पाल रखा है। मैं ने अपने इसी गुरुतर पापों का ही समुचित दण्ड भोगा है, और कुछ नहीं।"

एकाएक विस्मित और भयविह्वल कण्ठ से हेमागिनी आर्तनाद कर उठी—"कौन, कौन, आप हैं–र–!" इतना कहने के साथ ही हेमागिनी सोफे के ऊपर मूर्छित हो गिर पडी। सतीशचन्द्र बड़े ही घबराहट में जल्दी से व्याकुल हो अजलि में पानी ले२ कर हेमागिनी की आँख मु ह में बराबर डालने लगे। एकाएक हेमांगिनी को इस प्रकार मूछित होते देख सतीश बाबु बड़े ही भयभीत हो घबड़ा गये थे और किसी ओर भी उनकी दृष्टि नहीं थी।

कैसा आश्चर्य है। सत्य सत्य ही रमेन्द्र बाबू ने कमरे में प्रवेश किया। धीरे २ आगे बढकर नाड़ी परीक्षा के लिए उन्होंने हेमागिनी का हाथ पकड़ लिया। एकाएक सतीश बाबू की दृष्टि उन पर जा पडी। डर, विस्मय और आनन्द से उनकी बोली बद हो गयी।

रमेन्द्रनाथ सब समझ कर बोले—'घबड़ाइये नहीं, मैं मरा नहीं जीता हूँ। आज आपके इस उत्सव और प्रीति भोज की लालच छोड न सकने के कारण बराबर चला आ रहा हूँ। डर या घबराहट को हृदय में स्थान न दीजिए सतीश बाबू! ये अभी होश में आ जायगी।"

सतीशचन्द्र बोले—"आपको मैं क्या कह कर पुकारूँ समझ नहीं सका हूँ और न कोई ऐसा शब्द ही मुझे मालूम है कि जिसे आपके योग्य उपयोग में लाऊँ। मैं आपके आगे बड़ा ही अपराधी हूँ। यह मेरा बड़ा ही सौभाग्य है कि मुझे आपका पुनः दर्शन प्राप्त हुआ धन्य भगवान!"

रमेन्द्र—'कुछ भी नहीं सतीशबाबू! सब केवल भूल ही भूल है। आपने भूल की थी। मुझसे भूल हो गई थी। आपकी पत्नी ने भी भूल की थी। भूल ही भूल ने सबों को इस बखेड़े में डाल दिया है और कुछ नहीं। इसी से हम सबों ने अपना-अपना समुचित भोगदण्ड भोग लिया है। सबको अपने किये का फल मिल चुका है। अब इस बार हम सबों का भ्रम दूर हो गया है। आशा है इस बार हम सभी लोग आनन्द का उपयोग कर सुखी होंगे।'

"इसमें संदेह नहीं मैं बड़े भारी विषम भ्रम में पड़ा हुआ था। इसको मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ। हमसे भी भूल हो गई थी यह सत्य है। किन्तु आपसे कौनसी भूल हो गयी थी डाक्टरबाबू!"

"मैंने कौनसी भूल की थी? ओह! एक मेरी ही इस विषम भूल के कारण आप लोगों को और विचारे मधुपुरवालों को व्यर्थ इतना कष्ट भोगना पड़ा है। पीछे से एकाएक लाठी की चोट सिर पर आ लगने से मैं एकबारगी ही बेहोश होकर

गिर पड़ा था। उसके बाद कुछ होश में आते ही आपको सामने देख कर मैं एकदम अवाक और मुर्दे के समान हो गया। मनमें समझा कि आपने ही मुझे लाठी मारी है। नहीं तो मुझे वैसी दशा में फक आप क्यों फौरन भाग जाते। हठात् आपने क्यो ऐसा राक्षसी आचरण किया इस बात को उस समय मैं जल्दी से समझ नहीं सका। किन्तु आपके चले जाने पर आपके व्याह के पूर्व की बातें सभी एक एक कर मेरे मन में याद हो आने लगी। और मैं भली-भाँति समझ गया कि इसी विषम ईर्ष्या में अन्धा होकर अपने मन में इस प्रकार लाठी मारकर हत्या करने का उपाय रचा है। यह भाव मन में उदय होते ही संसार से मुझे बड़ी विरक्ति हो गयी। क्षमा कीजियेगा सतीश-बाबू। आपके ऊपर भी मेरी बडी घृणा हो गई। क्योंकि मैं जानता था कि आप अपनी स्त्री को प्राण से अधिक प्यार करते हैं। जो अपनी पत्नी को इस तरह प्राणों से अधिक प्यार करता है वह क्या इस प्रकार उस पर परपुरुष की आसक्ति का सन्देह कभी कर सकता है? कारण, सच्चे-प्रेम और चाहना में क्षमा शक्ति नहीं होती। जब कामासक्ति हुई तब फिर सच्चे प्रेम का नाम कहाँ रहा। अत: उसमें ईर्ष्या वा सन्देह का स्थान ही नहीं है। जो हो मैंने आपको बडे ही नीच और सकीर्ण हृदय का कह-कर अपने मनमें स्थिर कर लिया।"

सतीशचन्द्र बीच ही में बाधा देकर बोले—"आपकी धारणा बहुत हो ठीक थी—डाक्टरबाबू! मैं पहले हेम को यथार्थ रूप से ठीक तरह प्रेम नहीं करता था। केवल उसके बाहरी रूपजमोह में ही पड़ा हुआ काम-वासना की तृप्ति का मार्ग ढूँढ़ रहा था। इसी से पद पद पर ईर्ष्या सन्देह और द्वेष ने आकर मुझे पशु से भी बदतर बना डाला था। और तो क्या डाक्टरबाबू!, मै पहले

यह भी नहीं जानता था कि दाम्पत्य जीवन क्या है और सहधर्मिणी किसे कहते हैं। केवल भोग और कामवासना की परितृप्ति ही जीवन का उद्देश्य समझे हुए था। इतने दिन के बाद आँख खुली है। सहधर्मिणी को पहचान गया हूं। हाँ कहिए रमेन्द्रबाबू ! उसके बाद ?"

रमेन्द्र—उसके बाद मैंने मनमें सोचा, यदि फिर मैं आप लोगों के सामने दिखाई दूँगा तो केवल इस समय आपकी ईर्ष्या और भी क्रोध में बदल जायगी और साध्वी हेमांगिनी के दुःख कष्ट तथा अशान्ति की सीमा नहीं रहेगी। उसके बदले यदि मैं जितने दिन तक आप लोग मधुपुर में वास करेंगे उतने दिन तक अन्यत्र कहीं आप लोगों से अविदित होकर रहूंगा तो मुझे मरा हुआ समझ आप निश्चिन्त होकर रहेंगे आपकी स्त्री को भी कभी अशान्ति का कोई कारण नहीं रहेगा। किन्तु मेरे भाग जाने से यह अनेकों मुँह अनेकों बातें उठेंगी और सती साध्वी हेमांगिनी के सम्बन्धमें भी लोग नाना प्रकार की बातें कह सकेंगे इससे अशान्ति ही केवल बढ़ेगी, कम न होगी। इसीसे मैंने जेब से सिर्फ दस रुपये का नोट मात्र लेकर (उस दिन मेरे पास बहुत से रुपये थे) अपनी पोशाक इत्यादि सारे कपड़े फेंक दिये और एक वहीं गिरा हुआ मैला फटा कपड़ा पहन कर गिरिधर की राह चल कर अदृश्य हो गया।"

सतीश—"यह कैसे ? आपकी लाश को मधुपुरवालों ने अपनी आँखों देखी थी। पुलिस की भली-भाँति परीक्षा होकर मशान में वह जला भी दी गयी थी ? सबों ने आपकी मृतदेह की अच्छी तरह पहचान लिया था।"

रमेन्द्र—"हाँ यह सब ठीक है। किन्तु विस्मित न हुजिए

गिर पड़ा था। उसके बाद कुछ होश में आते ही आपको सामने देख कर मैं एकदम अवाक और मुर्दे के समान हो गया। मनमें समझा कि आपने ही मुझे लाठी मारी है। नहीं तो मुझे वैसी दशा में फेंक आप क्यों फौरन भाग जाते। हठात् आपने क्यों ऐसा राक्षसी आचरण किया इस बात को उस समय मैं जल्दी से समझ नही सका। किन्तु आपके चले जाने पर आपके ब्याह के पूर्व की बातें सभी एक एक कर मेरे मन में याद हो आने लगी। और मैं भली-भाँति समझ गया कि इसी विषम ईर्ष्या में अन्धा होकर अपने मन में इस प्रकार लाठी मारकर हत्या करने का उपाय रचा है। यह भाव मन में उदय होते ही संसार से मुझे बड़ी विरक्ति हो गयी। क्षमा कीजियेगा सतीश-बाबू। आपके ऊपर भी मेरी बड़ी घृणा हो गई। क्योंकि मैं जानता था कि आप अपनी स्त्री को प्राण से अधिक प्यार करते हैं। जो अपनी पत्नी को इस तरह प्राणों से अधिक प्यार करता है वह क्या इस प्रकार उस पर परपुरुष की आसक्ति का सन्देह कभी कर सकता है? कारण, सच्चे-प्रेम और चाहना में क्षमा शक्ति नहीं होती। जब कामासक्ति हुई तब फिर सच्चे प्रेम का नाम कहाँ रहा। अत उसमें ईर्ष्या या सन्देह का स्थान ही नहीं है। जो हो मैंने आपको बड़े ही नीच और संकीर्ण हृदय का कह-कर अपने मनमें स्थिर कर लिया।"

सतीशचन्द्र बीच ही में बाधा देकर बोले—"आपकी धारणा बहुत हो ठीक थी—डाक्टरबाबू! मैं पहले हेम को यथार्थ रूप से ठीक तरह प्रेम नहीं करता था। केवल उसके बाहरी रूपजमोह में ही पड़ा हुआ काम-वासना की तृप्ति का मार्ग ढूँढ़ रहा था। इसी से पद पद पर ईर्ष्या सन्देह और द्वेष ने आकर मुझे पशु से भी बदतर बना डाला था। और तो क्या डाक्टरबाबू! मैं पहले

यह भी नहीं जानता था कि दाम्पत्य जीवन क्या है और सहधर्मिणी किसे कहते हैं। केवल भोग और कामवासना की परितृप्ति ही जीवन का उद्देश्य समझे हुए था। इतने दिन के बाद आँख खुली है। सहधर्मिणी को पहचान गया हूँ। हाँ कहिए रमेन्द्रबाबू! उसके बाद ?"

रमेन्द्र—उसके बाद मैंने मनमें सोचा, यदि फिर मैं आप लोगों के सामने दिखाई दूँगा तो केवल इस समय आपकी ईर्ष्या और भी क्रोध में बदल जायगी और साध्वी हेमागिनी के दुःख कष्ट तथा अशान्ति की सीमा नहीं रहेगी। उसके बदले यदि मैं जितने दिन तक आप लोग मधुपुर में वास करेंगे उतने दिन तक अन्यत्र कहीं आप लोगों से अविदित होकर रहूंगा तो मुझे मरा हुआ समझ आप निश्चिन्त होकर रहेंगे आपकी स्त्री को भी कभी अशान्ति का कोई कारण नहीं रहेगा। किन्तु मेरे भाग जाने से यह अनेकों मुँह अनेकों बातें उठेंगी और सती साध्वी हेमागिनी के सम्बन्धमें भी लोग नाना प्रकार की बातें कह सकेंगे इससे अशान्ति ही केवल बढ़ेगी, कम न होगी। इसीसे मैंने जेब से सिर्फ दस रुपये का नोट मात्र लेकर (उस दिन मेरे पास बहुत से रुपये थे) अपनी पोशाक इत्यादि सारे कपड़े फेंक दिये और एक वहीं गिरा हुआ मैला फटा कपड़ा पहन कर गिरिधर की राह चल कर अदृश्य हो गया।"

सतीश—"यह कैसे ? आपकी लाश को मधुपुरवालों ने अपनी आँखों देखी थी। पुलिस की भली भाँति परीक्षा होकर मशान में वह जला भी दी गयी थी ? सबों ने आपकी मृतदेह को अच्छी तरह पहचान लिया था।"

रमेन्द्र—"हाँ यह सब ठीक है। ... विस्मित न हूजिए

सतीशबाबू। यह संयोग की बात है। यहाँ एक काकताली संयोग आ पडा था।"

सतीश—"कैसे? ओह डाक्टरबाबू यह कैसा रहस्य का पर्दा आप उठा रहे हैं? क्या ऐसा भी कभी हो सकता है।"

ठीक इसी समय कलकत्ते के नामी जासूस सतीशचन्द्र का निमंत्रण पाकर वहाँ आ उपस्थित हुए। उन्होंने रमेन्द्रनाथ को देखते ही पाकेट से एक फोटो तस्वीर बाहर निकाली और कुछ देर तक उसे ध्यान से देखते रहे। उसके बाद बोले—"माफ कीजिएगा सतीशबाबु।"

इसके बाद फौरन रमेन्द्रनाथ की तरफ पलट कर बोले—"हरेन्द्र विश्वास मैं तुमको सरकार की आज्ञा से कानून के अनुसार बाग बाजार की श्रीमती विलासिनी की हत्या के अपराध में गिरफ्तार कराता हूं।" इतना कहकर उन्होंने रमेन्द्रनाथ का दाहिना हाथ मजबूती से पकड लिया। रमेन्द्रनाथ चुप हैं।

सतीशचन्द्र के विस्मय की सीमा नहीं रही। वे अवाक हो बैठे रहे। इसी समय हेमांगिनी भी सम्पूर्ण रूप से होश में आ गयी और प्रफुल्लकुमार प्रभृति अन्यान्य निमंत्रित गण भी वहाँ आकर पहुँच गये। इधर बहुत देर से हेमांगिनी और सतीशचन्द्र को न देख कर मौसी और सुधांशु भी उन लोगों को ढूंढते हुए उसी हाल घर में आ उपस्थित हुए। सभी रमेन्द्रनाथ को सामने खड़ा देखकर एक दम डर विस्मय और आनन्द से अधीर हो अवाक हो गये। फिर पुलिस जासूस के हाथ में रमेन्द्रनाथ का दाहिना हाथ मजबूती से पकडा हुआ देख और भी उन लोगों के विस्मय की सीमा न रही। मामला क्या है जानने के लिए सबो ने कौतुहल पूर्ण दृष्टि से रमेन्द्रनाथ के मुँह की ओर देखा।

रमेन्द्र—डिटेक्टिवसाहब ! घबडइये नहीं। आप लोग इस रहस्य के किनारे तक भी आ नहीं सके हैं। मैंने जब देखा कि मेरी ही लाश को यथा रीति जला-जुला कर सब लोग घर लौट गये तब उस समय अपने को उसी तरह मरा हुआ मशहूर कर तमाशा देखने को मेरे मन में एक विशेष आग्रह जाग उठा। घटना सदा से ही रहयसमय होती आयी है। यह सभी जानते हैं। मुझे पीछे पता लगा कि ठीक मेरी तरह शकल का और दूसरे एक आदमी की लाश मेरे त्यागे हुए कपडों से सज्जित, ठीक जिस स्थान पर मैं पड़ा था उसी स्थान पर ही मेरे नौकर को देख पड़ी थी। लाश का सारा मुँह खून से तर मिट्टी में सना हुआ था जिससे कोई यह नहीं जान सका कि वह लाश मेरी नहीं किसी दूसरे की है। विशेषत उसकी नाक के ऊपर लाठी का जो घाव पडा हुआ था उससे भी उसकी नाक का अस्तित्व मिट गया था। इसी से लाचार उस लाश को किसी और दूसरे की कहकर कोई सदेह नहीं कर सका।

सतीश०—डाक्टर बाबू ! देखता हूँ आप एक विचित्र अद्भुत कहानी गढकर कह रहे हैं। ऐसी घटना तो बडे अद्भुत जासूसी उपन्यासों में भी सुनी और पढी नहीं गयी है।

रमेन्द्र—"यह घटना सच्ची होने पर भी जासूसों के अद्भुत कल्पनामय उपन्यासों को मात कर गयी है, यह सत्य है। मैंने विशेष पता लगाकर जाना कि हरेन्द्र विश्वास नामक ठीक मेरी ही शकल का एक और आदमी कलकत्ते के बागबाजार से खूब जेवर गहने पहनी हुई एक विधवा भद्र महिला को फुसला-कर जामतला महल्ले में ले आया। इसके बाद कुछ दिन तक दोनों स्त्री पुरुष के भाव में वहा रहते थे। एकाएक न मालूम किस कारण से दोनो में कहा सुनी हो गई। और ठीक हम

सतीशबाबू। यह संयोग की बात है। यहाँ एक काकताली संयोग आ पड़ा था।"

सतीश—"कैसे? ओह डाक्टरबाबू यह कैसा रहस्य का पर्दा आप उठा रहे हैं? क्या ऐसा भी कभी हो सकता है।"

ठीक इसी समय कलकत्ते के नामी जासूस सतीशचन्द्र का निमन्त्रण पाकर वहाँ आ उपस्थित हुए। उन्होंने रमेन्द्रनाथ को देखते ही पाकेट से एक फोटो तस्वीर बाहर निकाली और कुछ देर तक उसे ध्यान से देखते रहे। उसके बाद बोले—"माफ कीजिएगा सतीशबाबू।"

इसके बाद फौरन रमेन्द्रनाथ की तरफ पलट कर बोले—"हरेन्द्र विश्वास मैं तुमको सरकार की आज्ञा से कानून के अनुसार बाग बाजार की श्रीमती विलासिनी की हत्या के अपराध में गिरफ्तार कराता हूं।" इतना कहकर उन्होंने रमेन्द्रनाथ का दाहिना हाथ मजबूती से पकड़ लिया। रमेन्द्रनाथ चुप हैं।

सतीशचन्द्र के विस्मय की सीमा नहीं रही। वे अवाक हो बैठे रहे। इसी समय हेमांगिनी भी संपूर्ण रूप से होश में आ गयी और प्रफुल्लकुमार प्रभृति अन्यान्य निमन्त्रित गण भी वहाँ आकर पहुँच गये। इधर बहुत देर से हेमांगिनी और सतीशचन्द्र को न देख कर मौसी और सुधांशु भी उन लोगों को ढूंढते हुए उसी हाल घर में आ उपस्थित हुए। सभी रमेन्द्रनाथ को सामने खड़ा देखकर एक दम डर विस्मय 'और आनन्द से अधीर हो अवाक हो गये। फिर पुलिस जासूस के हाथ में रमेन्द्रनाथ का दाहिना हाथ मजबूती से पकड़ा हुआ देख और भी उन लोगों के विस्मय की सीमा न रही। मामला क्या है जानने के लिए सबों ने कौतुहल पूर्ण दृष्टि से रमेन्द्रनाथ के मुँह की ओर देखा।

रमेन्द्र—डिप्टेनिस्पेक्टरसाहब ! घबड़ाइये नहीं । आप लोग इस रहस्य के किनारे तक भी आ नहीं सके हैं । मैंने जब देखा कि मेरी ही लाश को यथा रीति जला-जुला कर सब लोग घर लौट गये तब उस समय अपने को उसी तरह मरा हुआ मशहूर कर तमाशा देखने को मेरे मन में एक विशेष आग्रह जाग उठा । घटना सदा से ही रहस्यमय होती आयी है। यह सभी जानते हैं। मुझे पीछे पता लगा कि ठीक मेरी तरह शक्ल का और दूसरे एक आदमी की लाश मेरे त्यागे हुए कपड़ों से सज्जित, ठीक जिस स्थान पर मैं पड़ा था उसी स्थान पर ही मेरे नौकर को देख पड़ी थी। लाश का सारा मुँह खून से तर मिट्टी में सना हुआ था जिससे कोई यह नहीं जान सका कि यह लाश मेरी नहीं किसी दूसरे की है । विशेषत उसकी नाक के ऊपर लाठी का जो घाव पड़ा हुआ था उससे भी उसकी नाक का अस्तित्व मिट गया था । इसी से लाचार उस लाश को किसी और दूसरे की कहकर कोई सन्देह नहीं कर सका ।

सतीश०—डाक्टर बाबू ! देखता हूँ आप एक विचित्र अद्भुत कहानी गढ़कर कह रहे हैं। ऐसी घटना तो बड़े अद्भुत जासूसी उपन्यासों में भी सुनी और पढ़ी नहीं गयी हैं।

रमेन्द्र—"यह घटना सच्ची होने पर भी जासूसों के अद्भुत कल्पनामय उपन्यासों को मात कर गयी है, यह सत्य है। मैंने विशेष पता लगाकर जाना कि हरेन्द्र विश्वास नामक ठीक मेरी ही शक्ल का एक और आदमी कलकत्ते के बागबाजार से खूब जेवर गहने पहनी हुई एक विधवा भद्र महिला को फुसला-कर जामतला महल्ले में ले आया । इसके बाद कुछ दिन तक दोनों स्त्री पुरुष के भाव में वहां रहते थे। एकाएक न मालूम किस कारण से दोनों में कहा सुनी हो गई। और ठीक हम

लोगों की घटना के दिनही हरेन्द्र विश्वास सध्या को अपनी प्रणयिनी की हत्या कर उसके सारे जेवर गहने, नकद रूपये पैसे लेकर चलता हुआ। इसके बाद सयोग से पैदल मधुपुर आते आते रास्ते में इन्ही दुसाधों के हाथ वह मारा गया। जब पुन लौट कर दुसाधों ने मुझे वहा नहीं देखा तब उसी हरेन्द्र विश्वास को ही मेरी पोशाक पहना कर वहा रख दिया।"

सती०—'ओह! बड़ी ही अद्भुत कहानी है इसने तो आश्चर्योपन्यास को भी मात कर दिया है। तब दुसाधों क ऐसा करने का उद्देश्य क्या है?"

रमेन्द्र—दुसाध लोग बड़े ही चालबाज और धूर्त डाकू हैं। पुलिस की आँखो में धूल झोंकने ही के लिए उन लोगों ने ऐसा किया था। उन लोगों ने समझा मेरी लाश कोई वहा से हटा कर दूसरी जगह ले गया है। और यह नई लाश ठीक मेरी शकल की और विदेशी है। इसके हत्याकाण्ड को कोई जानता भी नहीं है। सुतरा मेरी पोशाक पहनाकर रख देने से कोई सहज ही दूसरा व्यक्ति कहकर पकड़ नहीं सकेगा। इस तरह एक खून सहज ही छिप जायगा। आखिर में हुआ भी ऐसा ही अत. लोगों ने हरेन्द्र की लाश को ही मेरी लाश समझ जला जुलाकर गगाविसर्जन कर डाला। इस प्रकार एक और हत्या दबदबाकर अधकार ही में छिप गई।"

पुलिस जासूस बड़े ही लज्जित होकर बार बार रमेन्द्र नाथ से क्षमा की भीख मांगने लगे। अपने जीवन में ऐसी भूल उनसे कभी नही हुई थी। वे बोले—"मैंने अनेकों जटिल से जटिल खून के मुकदमे को हाथ म लेकर हत्याकारी को गिरफ्तार किया। बड़े २ रहस्य जाल को सुलझाकर खूनी का पता लगाया। किन्तु अपने जीवन में ऐसी भूल कभी नहीं हुई थी।

अत उन्होंने उसी दिन से जासूसी काम छोड देने की प्रतिज्ञा कर ली। बोले—"आज से जासूसी धंधा कभी न करूँगा"

कहना व्यर्थ होगा कि उस दिन रमेन्द्रनाथ को प्रत्येक व्यक्ति से अलग २ अपनी आत्मकहानी अनेक बार कहनी पडी थी। अन्त में उन्होंने सतीश बाबू और हेमागिनी की भूल सुझाकर उनके हृदय से भ्रम का पर्दा हटा दिया वे सब जान बूझकर ही आज प्रीति भोज के दिन वहा आ उपस्थित हुए थे। सुतरा उस दिन का प्रीतिभोज सम्पूर्ण रूप से सबों के लिए बडा ही प्रीतिप्रद और आनन्द का विषय हो गया था।

हेमागिनी के यत्न और उत्साह से शीघ्र ही प्रफुल्ल बाबू की कन्या के साथ रमेन्द्रनाथ का शुभ विवाह हो गया। इस विवाह में हेमागिनी ने सुशीला को एक हीरे का जड़ाऊ कण्ठा उपहार दिया था। उसमें यह मोटो खुदा हुआ था "पति विहीन नारी जीवन व्यर्थ अकारथ जाता है। धन सम्पति स्वर्गपदारथ सबही तुच्छ लखाता है।" सतीशचन्द्र ने भी एक गले का हार और घड़ी चेन रमेन्द्रनाथ को उपहार दिया। उसमें भी यह यह अंकित था—"अर्द्धं भार्यामनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा॥ अर्थात्—स्त्री भार्या के रूप में पुरुष की अर्द्धांगिनी कहलाती है। और मित्रों में सबसे श्रेष्ठ मित्र तथा इह काल परकाल की सच्ची सहचरी होती है।" रमेन्द्र की वृद्धा मा ने दम्पती को आशीर्वाद देते २ मन में मारे आनन्द के फूली न समाती थी। अत उन्होंने हृदय खोलकर बड़ी ही प्रसन्नता के साथ हेमागिनी को आशीर्वाद दिया—"बेटी! तुम अपने पती की सच्ची सहधर्मिणी हो। तुम्हारा सुहाग सदा अचल रहे।"

समाप्त

मित्रमंडल ग्रन्थमाला के स्थायी ग्राहकों के लिये-नियम

(१) स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फीस सिर्फ ॥) है।

(२) पुस्तकें प्रकाशित होते ही १५ दिन पहले दाम आदि का "सूचना-पत्र" भेज देने के बाद स्थायी ग्राहकों को २५) सैकडा कमीशन काटकर वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं।

(३) जो पुस्तकें माला मे अलग निकलती हैं, उन पर भी स्थायी ग्राहकों को २५) सैकडा कमीशन दिया जाता है।

(४) स्थायी ग्राहक चाहे जिस पुस्तक की, चाहे जितनी प्रतियाँ और चाहे जब, ऊपर-लिखे कमीशन पर, मंगा सकते हैं।

(५) बाहर की—सब छापाखानों की—सब पुस्तकें स्थायी ग्राहकों को =) रुपया कमीशन पर मिलती हैं।

(६) स्थायी ग्राहक की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक खर्च उनको ही देना पडता है, और दो बार वी० पी० लौट आने पर स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

माला की छपी पुस्तकें

(१) विश्रामबाग—यह पुस्तक प्रसिद्ध कादम्बरीकार मिस्टर रिनाल्ड के "मे मिडिल्टन के" आधार पर पूर्वीय ढंग पर लिखी गई है। रिनाल्ड के नाविल्स कितने रोचक होते हैं यह पाठकों पर विदित ही है। तिस पर यह पुस्तक पूर्वीय ढंग की होने से और भी रोचक हो गई है। सामाजिक जीवन का

वर्णन इतना भावपूर्ण चित्रित किया गया है कि एक बार हाथ में लेकर समाप्त करना ही पड़ता है। मूल्य १॥)

(२) अजेयतारा—मराठी के प्रसिद्ध 'कादम्बरी लेखक श्रीमान् आपटे के ऐतिहासिक कादम्बरी 'अजिक्यतारा' का हिन्दी अनुवाद है। पुस्तक इतनी मनोरञ्जक है कि ज्यों ज्यों आप पढते जाइयेगा त्यों त्यों आपकी उत्सुकता बढती जावेगी। अन्त में पुस्तक समाप्त करने पर ही आपको चैन मिलेगा। पृष्ठ-सख्या ३५२, मूल्य १॥)

(३) बिलासिनी या चुरट की राख—चैदिक धर्म की पुरातन शिक्षा से पवित्र हृदय चम्पा एक ज़मींदार की लड़की है। त्रिवेणी स्नान के समय मार्गभ्रष्ट होकर वह दुराचारियो के हाथ में पड जाती है। अनेक प्रलोभनों तथा अत्याचारों से पीड़ित होने पर भी यह कैसे अपने पतिव्रत धर्म की रक्षा करती है। विलासिनी मिशन स्कूल में मेमों के हाथ के नीचे शिक्षा पाई हुई एक बड़े भारी सेठ की लड़की है। दासियों के द्वारा थोड़े से प्रलोभन से यह कैसे भ्रष्ट होकर अपने कुल को कलङ्कित करती है। आज कल के साधु महन्त कैसे नीच और पतित होते हैं। अमीरों के लड़के शिक्षा के अभाव से कैसे भ्रष्ट चरित्र होकर लोक-परलोक दोनों का नाश करते हैं। बड़े घरों की दाइयां कन्याओं को कैसे कुपथ पर आरूढ़ करती हैं। एक स्त्री के रहते बुढौती में अन्य युवती कन्या से विवाह करने पर कैसा भीषण परिणाम होता है, इत्यादि अनेक बातों का चित्रण ऐसी योग्यता के साथ किया गया है कि पुस्तक हाथ से नहीं छूटती। ऐसी सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल १॥ मात्र।

(४) सरल संस्कृत-प्रवेशिका—"संस्कृत में प्रवेश करने के लिए इससे बढ़कर अभी तक कोई पुस्तक हिन्दी-भाषा में नहीं लिखी गई थी। भाषा में यह एक अद्वितीय पुस्तक है, प्रथमा-मध्यमा के विद्यार्थियों के लिए यह एक सजीवनी बूटी है। इसकी उपयोगिता इसी से प्रकट होती है कि छपकर तैयार होते ही प्राय १००० कापियाँ हाथोंहाथ बिक गईं। ८ वर्ष के लड़के को भी यह पुस्तक समझाकर पढ़ा सकते हैं। प्रथम भाग का मूल्य।) द्वितीय भाग प्रेस में है।

(५) वेद और पशुयज्ञ—अध्यापक विनोद-विहारीराय ने "ऋषियों का खान-पान" नामक पुस्तक लिखकर ऋषियों पर गाय, बैल, सूअर, घोड़ा आदि खाने का कलङ्क लगाया था। इसी पुस्तक का खण्डन बड़े बड़े पुष्ट प्रमाणों द्वारा उक्त पुस्तक में किया गया है। धर्मप्राण हिन्दुओं को इसकी एक एक कापी अपने पास रखनी चाहिए। यह वैष्णवों के बड़े काम की है। मूल्य।)

(६) स्वामी दयानन्द का संसार पर प्रभाव—पण्डित जैमनी के हाथ की लिखी हुई है। जिसमें दिखलाया गया है कि स्वामीजी का प्रभाव देश देशान्तर के विद्वानों पर कैसा पड़ा है और पाश्चात्य विद्वानों की उन पर कैसी श्रद्धा थी। मूल्य =)

(७) सनातन-वैदिक वर्णव्यवस्था—

पुराण, शास्त्र, स्मृति, इतिहास प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर यह पुस्तक बड़ी ही योग्यता से लिखी गई है। आज तक किसी ने इसके खण्डन का साहस नहीं किया। एक बार पढ़ लेने पर वर्णव्यवस्था का रहस्य मालूम हो जायगा। नया संस्करण छप रहा है। मूल्य ≡)

(८) सप्त-सोपान—राजपूताने के वीर राजपूतों के सम्बन्ध में सात गल्प हैं जिन्हें पढ़ते ही रगों में खून जोश मारने लगता है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् लाला भगवानदीनजी ने इस पुस्तक को नवयुवकों के लिए अत्यतोपयोगी लिखा है। मूल्य ।=)

(९) अपराधिनी—इस पुस्तक के मूल लेखक बंग साहित्य में सर्वोच्च स्थान पाये हुए सिद्धहस्त उपन्यास लेखक श्रीयुत बा० हरिसाधन मुखोपाध्यायजी हैं। आपके उपन्यास कैसे होते हैं। इसके कहने की हम आवश्यकता नहीं समझते। कारण कि हिन्दी भाषा-भाषी आपसे चिर परिचित हैं। पुस्तक कितनी शिक्षाप्रद है इसका अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि बँगला में इसके तीन संस्करण हो चुके हैं। स्त्रियों के योग्य बड़ी ही उत्तम पुस्तक है। इसको पढ़ते ही समाज की नवीन घटना का विशेष सामञ्जस्य का पता लग जाता है। पात्रों का चरित्र चित्रण, भी इतना अच्छा है कि पढ़ते ही चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। मूल्य १) के लगभग